Shri Raghunatha Temple MSS. Library,
JAMMU

No. १८६१
क

Title गीत-गोविन्द काव्य
(हिंदी-संस्कृत)
राग-संवलित

Author जयदेव :

Age

Subject काव्य

No. ६१२G. पत्र
८४०

रा॰रा॰
सं॰

नी रामकली नाल । सवैया । पाइ परैं म
नुहार करैं पलका परपाय दियो भय भीने । सो
यगाई कहि केशव कैसेहू कौरही कोरक मौंह
न कीने । साहसकै मुषसौं मुषछूके छिनमे
हरि मानि सबै मुषलीने । एक उमासहीं
के उमसे सिगरेई सुगंध विदा करि दीने ।

रागिनी रामकली ताल सवैया मोहिबो मो
नकी गतिको गतिही पढ़ो वैन कहा धौं पढ़ै
गी। ओप उरो जनकी उपजै दिन कहि मटै श्रेगि
यानमटैगी। नैननकी गति गूढ़ चला चल के
शवदास प्रकास चढ़ैगी। माई कहो यह माय
गी दीपनिजौ दिनहै इहि भाति चढ़ैगी। रागि

रा॰रा॰
मं॰

रागिनी रामकली नाल सवैया बोलीनहौं वे
बुलाय रहे हरि पायपरे अरुजो लिये डौंडी । के
सब भेटि वेको भरि अंक छुडाइ रहे जकमै नहि
छोडी । सूधे चितै वेकौं केतो कियो सिर चांपि उ
ठाय अंगरदनि ठोडी । मै भरि चित नकुन चितौन र
ही गहि नैननि लाजनि गोडी । रागिनी रामकली ना॰

2

रागिनी रामकली ताल सवैया धनभूषरि

लोचन लोलसो मेलि सु कोड कटाक्षको कोरक

छो। सुख माधुरि बानी बसी बनराईयो केश मोह

न लास पछी। ऊच नेहू नैनै तन लाज विराजति

बार गाहे चढ्ये ओरमछी। नवछी इति बालहिं

बालकता इति श्रेग अनेग की फौज चछी ॥

रा रा
मं

सवैया। आजमै देषीहै गोपसुता इक होयन पै
सो अहीरकी जाई। देषनही रहिये उनि देहकी
देषेते औरन देषी सुहाई। एकही वेक विलोक
नि ऊपर वारौं विलोकि विलोकनि काई केसव
दास कलानिध वरु हूजिय काम किमेरो क
हाई। रागिनी रामकली ताल सवैया-

३

सवैया । बौलै न बाल बुलावतहू नष रेष लिषै
भव प्रेम परेषौ । आपन हाथ विलोकि विलो
कि कही नव केसव बुद्धि वसेषौ । छोटी बडी
विधि रेष लिषी जग आयूकी रेष सु कौन जले
षौ । प्रेमते बोल सह्यो न परयो अकुलाय कह्यो
पिय कैसीहै देषौ । रागिनी रामकली ताल ।

रा॰रा॰
स॰

हैगति मेद मनोहर के सब आनंद कंद हिये उलहे
हैं। भौंह विलाति कोमल हासति प्रेम सुवास
नि गाढ़े गहेहैं। वेक विलोकनिको अविलो।
कि समाकहै नंदकुमार रहेहैं। एई तोकामके
वान कहावन फूलन के विथि भूलि कहेहैं। रा
गिनी रामकली नाल सवैया तोहिन गायव

५

कान्ह भले जू भली समुझाई हौं मोहि समुझकौ
जौ उमह्योहो । केशव आपनो मानिक सो मन
हाथ पराय दैकौनै लह्योहो । नैनन हो मिलबौ
करिये अब नैनन कौ मिलिबो तौ रह्योहो । जाइ
कह्यो तुम जैसो सखी सङ्ग ऐहौ गुपाल मै ऐसो क
ह्योहो । रागिनी रामकली ताल सवैया.

रा॰रा॰
मं॰

दि आगे कै केश आपहि आसन दीनौ। आपहि पा
इ पषारि भलै जल पानकौ भाजन लाइन वी
नौ। बीरा बनाइकै आगे धरे जब वै हरिकौ कर
बीजन लीनौ। बाहे गाही हरि ऐसो कह्यो हसि
मैतो इनो अपराध न कीनौ। रागिनी रामकली
ताल सवैया बिनवौ चित्त बोपे इमा पे

जावत नावत बार अनेक सिंगार बनायो। जीहू
मै आनकौ आनिबौ छडोपै तेरो नऊन भयो म
न भायो। भावै सुनै करिबो करि भामिनि भाग
बडे वसतैं करि पायो। कान्हमैं सुये जवाहनि
नारी सुचाहनि है अब पाइ लगायो। रागिनीरा
मकली नाल सवैया आवत देषि लिये उ

रा॰रा॰
क॰

जू देषौ सैवै हित बात सबौ जू सनी सबहीहैं य
हनौ कछु औरु वहै सबही अब सौंह करौ वकरी
जतहीहैं। समझाइ कहौ समझी सबकेसब
रूठी सबै हमसौं जकहीहैं। मान कियौ अपमा
न करौ तो हसो अबके हसिके कोरहीहै। रागि
नीरामकली ना॰ सवैया वैठी सषीन को

6

हसौ हो बला एतै बोलौ रहौ नित मौनै । सौंह
अनेकनि आवइ अंक करौ रतिकौ अति रैनकी
मौनै । षवाएतै षाइ बसाइ बिरी जन आईहौ के
शव आजही मौनै । मोहन के मनको मोहनी
सकहौ यह धो सिष ईसिष कौनै । रागिनी रा
मकली नाल । सवैया । हिनकै इन देषइ

रा॰रा॰
म॰

डपरी। एकचितै मुसकाय इतै उत बात कहै
वह भायपरी। चारुचकोर विलोचन भासिच
ह्वै दिसतैं अंगरी एसरी। सखि आजगई होती गो
कल हौं सबही मिलि हैजको बोदकरी। रागि
नी रामकली ना॰ सवैया हौं सुष पाइ सिषाइ
रही सिष सीष नए सिष नैहू सिषाई। मैवहुतै इष

सोभै सभा सबहीं के सुनै मन माझ धसै। बूझैतेवा
न बसाय कहै मनहीं मनकेशवदास हसै। षेल
निहै इत षैल उतै पियबिन षिलावति यों बिलसै
कोई जानैनहीं दृगदौरिकवै कितकै हरि आषिन
छै निकसै। रागिनी रामकली ताल सवैया
केशव रायकी सौंह कैके कछू एकन आपुमै हो

रा॰रा॰
म॰

बोल हसौहैं । देखहु धौं इक बार मकोवन आर
म लोवन आरसी सौहैं । आपन्न वैसेही साजसौ
आज सम्भूलि गई पिय काल्हिकी सौहैं । रागि
नी रामकली नाल सवैया वैदि हसी हुजना
रिनमै वनिश्री हृषभान कुमारि सुभागी । षेलनि
ही सखि चौपर बारि भई नहि खेल षरी अनुरागी

8

पाइही देषोपै केशव केहू कटेवन जाई। देउदिये
विन साथनिहू सेगा छूटत कौं षलकी षलताई।
देषहु दैमधुकीषट कोटि मिटै नछटै विषकी विष
नाई। रागिनी रामकली नाल सवैया केशा
व औरनसौं रसरासि रसो रस बाउ सबै इमसौंहैं।
हौं मन मैलेन जो लोकछू अब छाडहु बोलिबो

रा॰ रा॰
स॰

है मम आय गये किधौं आवेहिंगे सजनी सुख
दाई। आयन नेद कुमार सवार सकौन विचार
प्रवेर लगाई। रागिनी रामकली ताल सवैया
केशव जीवन जो हजको निज जीवहुते अतिवा
पहि भावै। जापर देव अदेव कुमारनि वारत माई
नवार लगावै। नाहरिपैं नृ गवारिकी वेटी महा

पीछेते केसव बोलि उठे सुनिकै चित चाव रि आव
रि जागी । जानिन काहु कवै हरिके सुर मारग
ही सरसी हग लागी । रागिनी रामकली ना
मवैया । सखी भूलि गई भलप किधौं काहू कि
भूलेई डोलत वाटन पाई । भीत भये किधौं केश
व काहूसौं भेट भई कोऊ भामनि भाई । आवत

रा॰रा॰
सं॰

केज विराजति गोप वधू कमला जनु केज झुटी
मह्मोहैं। रागिनी रामकली ताल सवैया पो
य पटेहैंते प्रीतम मैं कहिकेशवके हेनमै हगारी
नी। तेरी सखी सिष सीपीन पकहे रोषहकी सिष
सीषिजलीनी। चंदन चंद सरोज समीर जरै डख देह
भई सषहीनी। मैउलटी जकरी विधि मोकहु न्याय न

10

वर पाय फेवाय दिषावै । हौंतो वची अब हासनि
हू ऐसे औरजदेषैतो ऊनर आवै । रागिनी रामक
ली नाल सवैया भाषनिहै सुषवैन सषीनसौं ला
षहिये अभि लाषनियोहै । कोमल हासनि नैनवि
लासनि अंग सुवासनि कोमन मोहै । मूरति वे
न किधौं तुलसी तुलसी वनमै रति मूरति कोहै

रा॰रा॰
ह॰

काहूके प्रेम पगीहैं। रागिनी रामकली ता॰
सवैया केशव कैसेहू सरव प्रान मिल्यौ मनभा
वतो भाग भल्यौरी। जानैको माई कहा भयो कौं
हूजो औधीको आयु कयो मटल्यौरी। ताकउ
तून अजौ हसि बोलै जऊ मेरो मोहन पाय प
ल्यौरी। काढहूनै हठ नेरो कठोर इने विर

ही उलटी विधि कीनी । रागिनी रामकली का

सवैया आज कछू अधिया हरि औरसी मानो

महावर माहि रंगीहैं । मोहन मोहिसी लागत

मोहि इनेपर मोहन मोहि लगीहैं । मेरी सौं

मोहूसौं मानहु बेगि हिये रस रोसकी रीति ज

गीहैं ॥ मेरे वियोगके नेज नवी कियौ केशव

रा रा
स

है। रागिनी रामकली माल सवैया हूलसे
फूल सुवास कुवासकी भाक सीसे भये मौनस
भागे। केशव बाग महो वनसों जरसी चढ़ीजो
नहु सवै अंगदागे। नेहु लगो उरना हरसों निस
नाहु चरी कक हूं अनरागे। गावि सोगीत विरी
सिसमी सिगारेई सिंगार अंगार सोलागे। रा॰ राम॰

होनल हेन जसोरी। रागिनी रामकली ना
सवैया औरिदै आय उन्हो उनसौं यह भोजन
कै अबही हम ऐहैं। ताकहतौ अबलौं वहराइके
राषो बलाइ मरु करिमैहैं। बैठकरा इनकी फि
रकेशव जाइनहीं कोऊ जाय जैकैहैं। जानत
हौं उन आषिनितैं अस औउमरो वहुरयो पनिरै

रा॰ रा॰
स॰

मली लाल सवैया गोप बडे बडे बैठे अथाइनि
केशव कार सभा अवगाही। खेलत बालक जा
ल गलीनमै बाल विलोकि विकाही। आवत जा
नि लगाई चहूंदिस हेरत मै पहिचानत काही। वे
दमो आनन काढि कहो चली सूजतहै कछु नो
ही किनाही। रागिनी रामकली ना॰ सवैया

13

नाल मैवैया लाडिली लीलिक लोरि ल
री कहे लाल लके कहो ग्रेगि लगायके । आज
तो केशव कैसेहू लैरुपे लागन देनिन देषक
आयके । वेगचलौ उठि आई लिवावन दौरिश्र
केली पहौं अकुलायके । भूलेहू गौकुल गाउमै
गोविंद कीजै गुरुवन गाइ चरायके । रागिनी रा

रा॰रा॰
म॰

नही बिनयो इह कान्ह कियो लचिलालच केतो॰
झाझाकै झाखिहे प्रति केशव पाय परेतो परेई
रहेतो। हौं तो यहै नखही की विचारति होतो ग
मान कौं याही तो एतो। लाभी लटैं ग्रन पात
रि देहू जनै कवही विथी ओंधैं न देतो॥ इति
रागिनी रामकली माइका नाइक समाप्तम्॥

होत कहा अबके समझे समझेन तबै जबहू स
मझाए। एकहिं बेकविलोकनि माहिं अनेक अ
मोल विवेक विकाए। जान पसो नजनावऊजू
जनमावधि लौउहि जानिहौ पाए। बात बनाय
बनाय कहा कहौ लेहु मनाय मनाय जौं आए।
रागिनी रामकली नाल सवैया। भूलेहू सूधे

रा॰रा॰
क॰

सो दास रूपकीसी माला प्रेमकीसी माला आज
लौ न देखी सति जैसी आज दीसीहै ॥ रागिनी
रामकली ताल कवित्त चंचलनहूंजे नाथ
प्रेचरा नहूंजे हाथ सोवे नैकु सारिकाऊं सकतो
सवायोजू । मेटकरौं दीपउति चेट मुख देषि य
न दौरिकै उराई आऊं हारतें दिषायोजू । सुराज

रागिनी रामकली नाम कवित्त मकता

मनिन कीहै मक्क पुरीसी नाक दांत दाडौंदा

मनी हसनी वनीसीहै । मोहनके मंत्रनके प्रव

रोन कीसी रेष भ्रकुटी सुवेष भाव भेद छवि

छीसीहै । चित चतुराई उजकीसी उजकेसे

प्रकु जब मुकुटौनो नैन जैसे उजकीसीहै । के

रा॰रा॰
कं॰

नौ देषतिहौ इहो कछूऊनो नही प्रवहूते देषि
यत उर उदनयोहै । रहसि षिलन गई नोने जे
ठ भारी भई कियोयाते वाज भयो महावर द
योहै । श्रोषनको मेरी फाटनसी श्रावनहै जा
नतहौं रीठ लागि केशो ऊंकियायोहै । रागि
नी रामकली नाल कवित सषहै मषीन

२

2

मराल बाल बाहिरै विडारि दैकै भाषो नहै केशव
हमोहू मन भायोजू । कुलके निवास ऐसे व
चन विलास सुनि सैगनो सुरनिहू ने स्याम सु
ष पायोजू ॥ रागिनी रामकली नाल कवि
त । इत उत चाहि देषो जब कोऊ ठिगनाहि
बार बार जिय कहोहिये कहा भयोहै । अब लौ

रा-रा
कं

एयामै कौन रमहै रागिनी रामकली नाल ।
कवित । चंदकैसो भाग भाल भ्रकुटी कमान
कीसी मैन कैसे पैनेसर नैनन विलासहै । ना
सिका सरोज गंध वाहसे सुगंध वाहू दाखोसे
दसन केसोवी जरी सौ हासहै । भाईकीसी ग्रीव
भुजपान सो उदर और पंकजसेपाइ गति हंसकी

३

बीच दैके सौंहें पाय के पवाय कछू स्वाइ वरकीनी
वस वसहै । कोमल मृनालकासी मलकाकी मा
लकासी बालिका जुडारी मौडि मानस किपसहै।
जानैको विभानु भयो केशव सुनै कोवान देषौ
प्रानि गान जान भयो किधौं अस्तहै । विरसीजु
राषी यह विरनी विचित्र गति कहौ धौं रसिक न

रा॰रा॰
के॰

रिबौ । बोलनि हसनि मरु चालनी चलनि बारु
पल पल प्रति पति बन प्रति पारिबौ । केशोदास
सविलास करहु कुअरि राधे इहि विधि मोरहु सि
गारिबौ । रागिनी रामकली ताल कवित
केशोदास सविलास मंदहास जन अवलोकनि
अलापनिकौ आनंद अपारहै । वहिरति मान अरु

सोजा सहै । देषीहै गुपाल एक गोपिकामै देवता
सी सोनेसे सरीर सब सौंये कीसी वासहै । रागि
नी रामकली ताल कवित्त प्रथम सकलस
चि मज्जन अमल वास जावक सदेस केस पास
को सुधारिबौ । अंग राग भूषण विविध सुष
वास राग कज्जल कलित लोल लोचन निद्रा

रा॰रा॰
कै॰

बल बल वीर कौसौ मान कौसौ सब मझो मो
हि मन भायोहै । थलसौ अचल सील अनलसे
चलचित जलसे अमल तेज तेज कौसौ गायोहै

केसोदास वसन प्रकासके प्रकास चोष चरचर
चट चट चेरु चनौ छायोहै । रति कीसी रति ना
थ रूप रति नाथ कौसौ कहौ केसो गाइ झूठ

५

अंतरति सान अनिरति विपरी तिनिकौं विविधि
विचारहै । छूटिजाति लाज जहां भूषन सदेस
केस छूटिजात झार सब मिटत सिंगारहै । कूजि
कूजि उठै रति कूजि नति सुन बग सोई नौस
रति सषि और विवहारहै । रागिनी रामक
ली नाल कवित । नाज कोसो गान सब

रा॰रा॰
क

ति देवता वषानीहै । ऐसी बातैं कौन जनमां
नी सुनि मेरी रानी उनके तो तेरी बानी वेदकी
सी बोलीहै । रागिनी रामकली ता॰ ४ कवित
कैयौ रटहू काज कैयौ छूटोन सषा समाज कै
यौ कछू आज व्रत वासर विभातनै । दीनोतैं न
सोच कियौ काहूसो भयो विरोध उपजो प्रबोध

कौन पहि पायोहै ॥ रागिनी रामकली ना
कवित । चोली कोसो पान तोहि करत सेवा
रि वोई दर्पन जौं तोही मोज मूरती समनीहै ।
तेरे मनोरथ भयो रथ रथ पीछे पीछे डोलत
गुपाल मेरो गंगा कोसो पानीहै । तेही तिय
देवतापै पायो पति केशोराइ पतिनी वडतप

रा॰रा॰
के॰

की। केशोदास नामै इरी दीपकी सिषासी दौरी
इरावति नील वास इति ग्रेग ग्रेगाकी। पौनपा
ति पंछीपशू वासमै सवट सुनि जिन तिन यौं
कि वौकि चाहै चोप संगाकी। नंदलाल आराम
विलोकै कंज जाल वाल लीनी गति नहि का
ल पिंजर पतंगाकी। रागिनी रामकली ता॰

7

किधौं उर अब दानैं। स्राव मैन देह किधौं मोहू
सौं कपट नेह किधौं देषि मेह अनिउरे अपियानैं।
किधौं मेरी प्रीतकी प्रतीत लेत केशोराइ अजहू
न आय मन स्वयौं कौने बातैं। रागिनी राम
कली ताल कवित चंदन विट वपु कोमल
विमल दल ललित वलित लता लपटी लवंग

रा॰रा॰
कं॰

मानो न मनायो मन ऐसी तोहि हूकि पज्ज पी
छे पछिनानहै। रागिनी रामकली ताल ।
कवित आषन जौं सूजन न काननतौ सुनि
यत जैसे केशोराइ हम लोगनमै गायेहौं। वे
सकी विसारे सुयी काकजौं भुवन फिरै जूठे
सीठे सीतपान ईठ डीठ ठायहौं। हरि हरि करनहौं

8

कवित्त । बार बार बोल्यो जब बोल्यो न विहँसि
नव बालक ज्यौं बोलि बेकोकत बिललात हैं ।
ज्यौं ज्यौं पये पायन त्यौं पाइन तै पीन भयो होन
कहा किये अब माघनसौं गात हैं । केशोदास
सब छाई कीनो हठहू सौं हेत तोहू छाडि जिय
जिये बिन कहा जात हैं । ऐसे प्यारे पियहू कौ

रा॰रा॰
के॰

प्रति फूल माल तोरि डारी बीरा बगराइकै। लैलै
दीह मास तजि विविध विलास हास केसो दास
है उदास चली अकुलाइकै। सेइकै संकेत सूनो
कान्ह जूसौं बोली अनो मोसो जोरे कर हूनो हूनो
इब पाइकै। रागिनी रामकली लाल कवित्त
लीने हम मोल अनबोली आई जामो मोहू मोहि

दौरि दौरि गह्यो पाय जो नौन कठोर ठौर जानि जि
य पायेहौ। काको चर चालवे को वसे कहो वन
स्याम हेचू जौं बुसन प्रान मेरे चर आयेहौ। रागि
नी रामकली नाल कवित। देषति उदयि जा
न देषि देषि निज गात चेपकके पान कछू लिषो
है बनाइकै। सकल सुगंध फारि हरि काको मारि

रा॰रा॰
कं॰

कवित नैननकी अनराई वैननकी बनराई गा
नकी गुराई नडरति डति बालकी । अपने चरित्र
निके चित्त चकित चित्र चित्रनी जौं मोहै साथ पुत्रि
काग्रालकी । चंदके समा चारु चायसो चली फि
रति करकै निहारे मृगनैनन की पालकी ॥
की जैपै पान प्राण प्यारे आईहै जू आई अलबेलि

१०

घन स्याम घन माला बोलि लाईहै । देषो हैहै उष
जहां देह ऊन देषी परै देषी कैसे बाट केषोदास
नी दिषाईहै । ऊंचे नीचे बीच कीच कंठकनि पीरै
पग माहस गयंद मनि अति सषदाईहै । भारीय
हकारी निसि निपट अकेली नम नाही प्राण ना
थ साथ प्रेम जस हाईहै । रागिनी रामकली ना

रा॰ रा॰
कं॰

मंदर्जौं । निमर वियोग भूले लोचन चकोर फू
ले आई वज्र चंद चंद्रावलि चलि चंदर्जौं । रागि
नी रामकली नाल कवित उरझत उरझा
वपन फनि चरनन देषति विविध निसिचर दि
स चारके । गन निन लगन मुसलधार सुनति
न झिल्लीगन घोष निरघोष जलधारके । जा

खालि कलकी । रागिनी रामकली ताल ।

कवित । चंदन चढ़ाइ चारु श्रेवर के उरहार सु

मन सिंचार सोहैं आनेरके केदजैयों । वारो कोरि

रति नाथ वानामै वजाय गाथ स्राज मराल

साथ वानी जगावेदजैयों । चौकि चौकि चकईसी

सौति निकी हूती चली सौतै भई दीन अविंद इति

रा॰रा॰
क॰

क आनि नीकेहूंको लागतहैं सीताजूको हनुमा
न कैसे उर आनियै। आविन जो देषियत सोई
सोची केशोदास कानन की सनी सोची कवहूं
नमानियै। गोगलकी झलटाए यौंही उलटा
वनिहै आजलौंनो वैसेईहै काल्हि कीन जानियै
इति रागिनी रामकली कवित्त समाप्त शुभम्

नवनिन भूषण मिरत पट फाटनन कंटक अटक
उर उरज उजारके । प्रेतनकी हड्डैं नारि कौनपै
नैं सीछौ यह जोग कौसौ सार अभिसार अभि सा
र अभि सारके । रागिनी रामकली नाल कवि
न । हरिमेहि तूसौं भ्रम भूलिहून कीजै मनहो
तो करि हिय हूंनै होत हित हानीयै । लोकमै अलो

रा॰बे॰ बन बिलना बनरे । उपोजे पद सेवत बीते कल्प
जगा सो कबजा उरला बनरे । ज्यो सुख ब्रजलो
कमैं नाही सो कबरी सुख पावनरे । सगरे ब्रज
को राज दीयो है हमे लखि जोग पठा बनरे ॥
रागिनी बेगाली दुमरी ताल । ३ । हरि सुख मो
रनीर लीयो तबतें भवन नही भावनरे । गावै गु

रागिनी बेगाली दुमरी ताल।३। सोवराजी
होहै जामो यारोजान। रतमानी परभातही
आया कूढो करो कोवरवान। प्रकट प्रकार
करी छेक जरा पीकलोक प्रथरान। इनमें
कूट नहीं तिल जीकाई रंगीला पीतमरी आन
रागिनी बेगाली दुमरी ताल।३। कवनव

रा॰बे मन रामकृष्ण रामकृष्ण ध्यावरे सोई । महाजप
करे वेहरि प्रसन्न होवेंगे । मनवचक्रमसों
याद करोरे ज्ञान करो भव पार परोरे । प्यारेरेक
रुपा सागर जिन पालो सब संसारे ऐसे मधु
सूदन मुरारे । रागिनी बंगाली ठुमरी ता ।३।
मोरी गली पाय फेराजो होमोरीग॰ । हथोयो

दर मैकहे थाकी सोवस कवहुन आवतरे ॥ रा
गिनी बेगाली ठुमरी ताल ।२। नेरीगत अपरंपा
र । अतअवंड जिनरच्योहैब्रह्मंड अदजोतिनिरंज
ननिराकार । जाकौंकोउनपायोपारवे । निग
मगावैपारनपावैब्रह्मा सावउवरे । ध्यानधरेजा
को पंचानन श्रीपत जश अन अभै भक्त दातार ॥

रा बे

ली दुमरी ताल ।३। कारीरे बदरीया राम कैसी उ
मड आई । सोवत कीरित आई पीया मिले बनयाई
अरे बहुंपरवै आमन भावन बिना सुना मेदि वा
हो राम कैसी ।। रागिनी बेगाली दुमरी ता
ल तिताला ॥३॥ उमगौ उमगौ आवै गोरी
या जीया राहमारहो ॥ कहा कहूं कछु बसन

चढकर आए मोरे बालम लोक जाने प्रमरावहो
रागिनी बंगाली दुमरी ताल ।३। नई लगन ह
मजानीरे । जोतुम रसीयां बोली बोलौ तुम हू
ते नारस यांनीहो । रागिनी बंगाली दुमरी ता
ल ।३। मैंगवनैं नहीं जईहूं राम । जोगवनेकी वा
न चलैहै नागरटोना चलैहूं राम । रागिनी बंगा

ग-वे

ही मेरो तन कारो मन पीय राह मारही ॥ छ
लानन्द रुकत नहीं रोके मोही लीयो हेमही
य राह मारोही ॥ इति रागिनी बेगाली छ
मरी ताल तिताला समाप्तम् ॥ ॥

रा॰बे टपा ताल ।३। सयाने वेलियावे हूरनया वसदे
लोक विगाने । मिश्रन करदि वारिवे पैयां ना
पउदी वेमियां रबकरेन सिंमुडे आवो नैयनादे-
रागिनी बंगाली टपा ताल ।३। केहा जाउंगा
कीता वेदिलन कदर ना जाने दर कदर मियां ।
वेषनन्नू मुसाक जि मेरा इस्क लगा मन लीना

रागिनी बेगाली टपा ताल । ३ । तोडे वेखन दि
तोगमेव । चढ्ढवेषो वारिवे राजनन्द हूंगो वेसो
णार वस्त्र नले साडी चोग ॥ रागिनी बेगाली ट
पा ताल । ३ । आया निम भाल वोरोजनयार ·
किड्यांतेन्द्यार । हीरनि मानिनकि प्रकटा
पीरू दिल दिड्ई ओसार । रागिनी बेगाली

रा॰बे

चोन शोरि मियो सोई गनि मन ईमान प्यारोदा।
रागिनी बेगाली टपा ताल।३। कि जालमा
डिवे मियो योकि सदी यारीदाले विसडडे ना
लन जानें नामन जानें की करवे। मावबेको
नेडासोवरो योमैडियाने जिंदडी दिवानीमैंडा
जिडरे। रागिनी बेगाली टपा ताल ॥३॥

2

दिलन्द ॥ रागिनी बेगाली टपा ताल । ३। चलउ
टकर दीदन यारा मियो । दीदन यारेदा आमदा
जोदा मियो । यारा वहारो निवे वेषन चलिए हो
मियोमैंडा दिल परदा वजार मियो । रागिनी बे
गाली टपा ताल ।३। देखणा दिदार जारोदा प
रावले परवायले छमियो । खोदा खारा पय

रा-बे मार चला कौं कोडि चलावे मजनू इस्क गरी
वो कौं मियां । ईयाखदा यद सुनमेरी दाहेफि
र याद सो मेरी मियां । रागिनी बगाली टपा
ताल ।३। खिडनदा परवे लावे भला मियां वे
मान चाक चाक जवावो भोदा कोईवे । भोदा
नियांदा साडे घरवे शोरी लगि मुहवत पाक

जाउडाक मालकीनाये । इस्क लगा मैंडा जीत
र सोदाके हाहाल जिगर परवीनावे । रागिनी
बेगाली टपा ताल । २ । कौनगत भई मोरीआ
नना मिलैं पिया मोकों । उन विन कलन प
र जप लछिन केसे रैण विहाय आन मिलैं पि
या मोकों । रागिनी बेगाली टपा ताल ॥ ३ ॥

रा॰बे॰ सखि आखीं मेरे प्यारे नू रात किथे वे गारिश्रो ॥
आपछड़ जादे वारी नाल मही दे मफ़ूड थकें
दी मैं हारिश्रो । रागिनी बेगाली टपा ताल ।३।
कीता वेकरेजा सारदा पारदा गम खोवो ॥
कीपछदे वारीश्रा जय दिल वेकरारदा हौंतोया
रियोदे नाल गुजारदा । रागिनी बेगाली टपा

रागिनी बंगाली टपा ताल ।२। झोवे फोलाम
न पर चांदियां । आंष लडांदिम मा कमांदि चि
न चढयो दियो झोवे फोलामे । रागिनी बंगा
ली टपा ताल ।३। जिंद मांडियां रांदे नाल ल
गिवे । अदा रंगने जदमै पावांगरे लगावो बिन
डिठेओ मैढगी । रागिनी बंगाली टपा ता ।३

रा॰बे

नी बेगाली टपा ताल।३। पलक दो आऊ मे
रा माई। जो चाहे जगा राज कर वोई कर सभ
ऊ दरन उसि नाई। रागिनी बेगाली टपा ता
ल।३। भई लीऊं वोमरी विन देखे नेकनास
हाय। जबने गमन कीनो विदेश वा भवनभा
वे कछु नहिंचा। रागिनी बेगाली टपा ता॰।३।

ताल।३। तोरि नगरिया मैं नारहौंगि तेतो अ
नत करारस भोग। सदारंग रस रंग कराई ह
मकौं दीनी बहुत विरोग। रागिनी बंगाली ट
पा ताल।३। आज तोरन गाजै आये पियारवा
घर मेरे। अंग संग रंग लागै प्रघट डरावत गा
न छिनल खेपल जप कत आप डेरे। रागि

गा॰बे वैगानिमाय साय सानीयापमगरे ॥ इति
रागिनी बेगाली टपा समाप्तम् ॥

6

मग मध मेरे मगोरे धानि सा मरे सानी । पगमे
धरे धरे पगधम धामरे सा मरे सानी । सारे गा
ममे मगरे मगमे धाम धाम पेप धानी । साध
साध पगधरे सदा रंग मोरी एकन मानी ॥
रागिनी बेगाली टपा तिताला ॥ ३ ॥ पग
मधरि सानि परे मपगधरे । री समाध हो

रा॰बे

धूको रसमंजरीमै अंकुत जो वना कहाहै ॥रा
गिनी बंगाली सवैया नाल ।३। धन भ्रूध
रि लोचन लोल सो मेलि सकोड कटाक्षकी
कोरकछी । मुख माधुरि वानी बसी वनरा
ईयौ केश मोहन नास पछी । कच नेत्र नैनै
नन लाज विराजति वारगाइ वडे डोरमछी

रागिनी बेगाली सवैये नाल।२। मोहिबो मोह
नको गनिको गनिही पढ्योबैन कहा यौं पढ़ै
गी। ओप उरो जनको उपजै दिन कहि मटै प्रेमि
या नमटैगी। नैनन की गति गूढ़ चलावल के
शवदास प्रकास चढ़ैगी। माई कहां यह माय
गी दीपति जौ दिनहै इहि भाति बढ़ैगी। नवव

रा॰वे॰ पहसोहै। नाहिकरो जिन नागरिहू गज राज
दियो नव ग्रेक्रमकोहै। रागिनी बेगाली स
वैया नाल।३। पाइ पैंमन्न हारकरै पलकाप
२ पाय दियो भय भीने। सोय गई कहि केशव
कैसे हू कौरही कोरक सौंहन कीने। साहसकैम
षमौं सब छै छिनमे हरि मानि सवै सुषलीने

2

नवफो इति वालहि बालकता इति प्रेग प्र
नेगकी फौज वफो । रागिनी बेगाली सबै
या नाल ।३। कहू उरोजनके परसे रिस भौ
हि वफो नवफो छिन कोहे । दैरट वछूद वे
वनही रस रीति गही उनही मन मोहे । नीवी
की नीवि कुवे छवि औरसी पेलत पानि पिया

रा॰बे सखीन पर्यो अकुलाय कह्यो पिय कैसी है देखौ।
रागिनी बेगाली सवैया ताल।३। आज मैं देखी
है गोपसुता इक होयन ऐसी अहीर की जाई ॥
देषतही रहिये इति देहकी देषेते और न देषी स
हाई। एकही वंक विलोकनि ऊपर वारौं विलो
कि विलोक निकाई। केसव दास कलानिध व

एक उसासहीके उसमे सिगरेई सुगेथ विदाकरि
दीने। रागिनी बेगाली सवैया लाल।३। बौलै
न बाल बुलावतहू नषरेष लिषै भुव प्रेम परे
षौ। आपन हाथ विलोकि विलोकि कही नव
केसव उदि वसेषौ। छोटी बडी विधि रेषलिषी
जग आपू कीरेष सकौन जलेषौ। प्रेमते बोल

रा॰बे॰ विंद सौंहे सोतो चंदसो देखौ । रागिनी बेगाली
सवैया ताल ।३। कान्हभले जूभली समझाई
हौं मोहि समझकौ जौ उम्र होहो । केसव आप
नो मानिकसो मन हाथ पराय दै कौने लह्यो हो
नैनन हीमिलबौ करिये अब नैनन कौ मिलि
बो नौ रह्यो हो । जाइ कह्यो तुम जैसो सषी सुख पै

रु हूजिय कामकि मेरो कन्हाई। रागिनी बेगा
ली सवैया ताल।३। ज्यौं ज्यौं उलासमो केसव
दास विलास निवास हियै अवरेष्यौ। त्यौं त्यौं व
ष्यौ उर कंप कछू भ्रम भीत भयौ किधौं सीत वि
सेष्यौ। सद्दिज होत सषी वरही मेरे नैन सरोज
नि सोचकै लेष्यौ। तैंज कह्यो सुष मोहनको अरु

रा॰बे॰ केविधि भूलि कहेहैं। रागिनी बंगाली सबै
या लाल। २। मोहित पाय बजावत नाचत वा
२ अनेक सिंगार बनायो। जीहूमै आनकौ
आनिबौ छोडयोपै नेरो नजर भयो मनभायो।
भावै सनेहू करिबो करि भामिनि भागबडे वस
नैं करि पायो। कान्ह नौं सूधेज्ञ चाहति नाही

हौ गुपाल मै ऐसो कह्यौ हो। यामिनी बेगाली
सवैया ताल।३। इगति मेद मनोहर केसव
आनेद केदहिये उलहेहैं। भौह विलासि कोम
ल हासनि अंगसुवासनि गाढे गहेहैं। वेकवि
लोकनिको अविलोकि सुमाह कै नेदकुमाह
रहेहैं। एईतो कामके वान कहावत फूलन

रा॰बे॰ वेन सिंघार समीप सिंघार किये किधौं सेद
र नाई। रागिनी बेगाली सवैया ताल।३।
आवत देषि लिये उठि आगेंकै केश आपहि
आसन दीनौ। आपुहि पाई पषारि भलै ज
लपान कौ भाजन लाइन दीनौ। दीपावना
ईकै आगे धरे जब बैठ्यौ कौ करवीजन ली

सचाइति नाही सचाइतिहै अब पाइ लगायो।
रागिनी बेगाली सवैया ताल ।३। आजवि
राजत है कहि केसव श्रीहृषभान कुमारि क
न्हाई। वानि विरंचि वहि कम कामरवी सवि
वारि सुबुद्धि बनाई। प्रेम विलोकि विलोकिमै
प्रेमीको नारि नहि जहि नारि निवाई। मूरति

रा॰बे॰ जु ही गौनै। मोहन के मनको मोहनी सुकहौ
यह मिष ईमिष कौनै। रागिनी बेगाली सवैया
ताल।२। हितकै इत देषहुजू देषौ सबै हित वा
त सुनौ जु सुनी सबहीहै। यहतौ कछु और
वहै सबही अब मौंह करौ वकरी जतहीहैं। स
मुझाइ कहौ समुझी सब केसब झूठी सबै हम

नौ। वाहेगही हरि प्रेमो कह्यो हमि मैतो इतो
अपराध न कीनौ। रागिनी बेगाली सवैया
ताल ।३। बिनवौ बिन बोपे हमापे हमौ होउ
ला पेतें बोलौ रहौ तिन मौनै। सौंह अनेकनि
आवहु अेक करौ रति कौ अति रैन की रौनै। ष
वापतें षाहु वसाइ विरी जब आईहौ केशव आ

रा'बे की पुट कोटि मिटै नघटै विषकी विषताई । रा
गिनी बंगाली सवैया माल ।३। केशव औरनसौं
रसि रासि रह्यो रसवादु सबै हमसौंहैं । हौंमनमै
लेन जोलो कछु अब छाडहु बोलिबो बोल हमौं
हैं । देषहु यौइवार सकोवन आरस लोवन आरसी
सौंहैं । आपुज वैसे ही साजसौं आज सभूलि गई

सौं जु कहीहैं। मान कियौ अपमान करौ तोइसो
अबके हसिके कोरहीहैं। रागिनी बेगाली सबै
यातात।३। हौं सब पाइ रही सिष सीषे नए सि
षतैहू सिषाई। मैवडूतै डरवपाइ रही देषो पै के
शाव केहू कुटेव नजाई। देउदिये बिन साथनिहू
संग छूटन को षलको षलताई। देषडू दैमध

रा-३- निकसै। रागिनी बंगाली सवैया ताल।३। बैठि झूली
हूज नारिन मै वनि श्री वृषभान कुमारि सुभागी। ऐ
लनि ही सखि चौपुर नारि भई नहि खेल खेली अनुरा
गी। पीछे ते के सब बोलि उठे सुनि कै चित चातरि आ
नरी जागी। जानि न काहू कहै हरि के सुर मारग ही
सरसी दृग लागी। रागिनी बंगाली सवैये समाप्तम्

पिय काल्हिकी सौंहैं। रागिनी बेगाली सवैया
ताल।३। बैठी सषीन की सौंभै सभा सबहीं के
सनैनन माझ बसै। हूकेतैं बात बसाय कहै
मनहीं मन केशव दास हसै। खेलनिहै इतबै
ल उतै पिय चित्त खिलावनि यौं विलसै। कोई
जानैनहीं दृग दौरि कवै किनकै हरि औ किनकै

रा॰दो॰ चक्रवर्ती श्रीवासुदेव रति केलि कथा समेत मेतं करो
गी॰ ति जयदेव कवि॰ प्रबंधं २ यदि हरि स्मरणे सरसं म
नोयदि विलास कलासु कुतूहलं। मधुर कोमलकांत
पदावली शृणु तदा जयदेव सरस्वती ३ वाचः पल्ल
व यत्यमा पतिधर॰ संदर्भ शुद्धि गिरां॥ जानीते
जय देव एव शरण॰ श्लाघ्यो दुरूहद्रुते॰। शृंगा

अथ टोडी रागिनी गीतगोविंदपरिछेदमाह ता॰
ल॥ मेघैर्मेदुरमंबरं वनभवः श्यामास्तमालद्रु
मैर्नक्तं भीरुरयं त्वमेव तदिमं राधेगृहं प्रापय
इत्थंनंदनिदेशतश्चलितयोः प्रत्यध्वकुंजद्रुमं राधामा
धवयोर्जयंति यमुनाकूलेरहःकेलयः १ वाग्देवता
चरित चित्रित चित्तसद्मापद्मावती चरणचारण

रा॰ दो॰
गी॰

चक्रगरिष्टे केशव धृत कच्छप रूप जय जगदीशहरे २
वसति दशन शिखरे धरणी तवलग्ना शशिनि कलं
क कले वनि मग्ना केशव धृत सूकर रूप जय जग दे
श हरे ३ तव कर कमल वरे नख अद्भुत शृंग दलित
हिरण्य कशिपु तनु भृंगं केशव धृत नर हरि रूप
जय जग दीशहरे ॥४॥ छल यसि विक्र

रोद्धर मन्त्रमेय रचनै राचार्य गोवर्द्धन स्यद्दी कोपिनवि
श्रुतः श्रुतिधरो धीधीक विद्यापतिः ॥ अष्टपदी
दीडी रागिनी । ताल । । प्रलय प्रयोधिजले भ
तवानसि वेदं विहित विहित्र चरित्र मखेदं केश
व धृतमीन शरीर जयजगदेशहरे १ क्षितिरति
विपुलतरे तव तिष्ठति पृष्ठे धरणि धरणकिण

गी॰टी
गी॰

यं। केशव धृत रघुपति रूप जय जगदीशहरे ७ व
हसि वपुषि विशदे वसनं जलदाभं। हल हतिभी
ति मिलित यमुनाभं। केशवधृत हलधररूप जय
जगदीशहरे ८ निंदसि यज्ञविधेरहह श्रुतिजातं।
सदय हृदय दर्शित पशुघातं। केशव धृत बुध शा
रीर जय जगदीशहरे ९ म्लेच्छनिवहनिधने

मणि वलि मङ्गल वामन पदनख नीर जनित जनपा
वन केशव धृत वामन मन रूप जय जग दीशङ्क
रे ५ क्षत्रिय रुधिर मये जगदपगत पापं । स्नापय
सि पयसि शमित भवतापं । केशव धृत भृगुपति
रूप जय जगदीशहरे ६ विलसति दिनवणि दि
गपति कमनीयं । दशमुख मौलि वलिं रमणी

रा॰ दी॰ गी॰

ते हलं कलयते कारुण्य मानन्दते। म्लेच्छान्मर्द्दय
ते दृप्ता कृति कृते कृष्णायतुभ्यं नमः १५ अष्टपदी॥
श्रित कमला कुच मंडल धृत कुंडल। कलित ललि
त वनमाल जय जय देव हरे १ दिनमणि मंडल
मंडन भव खंडन मुनि जन मान सहंस जय जय
देव हरे २ कालिय विषधर गंजन जन रंजन

कलयसिकरवाले। धूमकेतुमिव किमपि कराले केशव
धृत कल्कि शरीर जय जगदीशहरे १० श्रीजयदेव
कवे रिद मुदित मुदारं। शृणु सुखदं शुभदं भवसा
रं। केशव धृत दश विध रूप जय जगदीशहरे ११
वेदानुद्धरते जगन्निवहते भूगोल मुद्भिभ्रते दैत्यं दार
यते बलिं छलयते क्षत्रक्षयं कुर्वते। पौलस्त्यं जय

रा॰ दो॰ सुंदर धृत मंदर श्रीमत चंद्रचकोर। जयजयदेव हरे
गी॰ ७ श्रीजयदेव कवेरिदं कुरुते मुदं मंगल मुज्वलगी
तं। जय जयदेवहरे ८ अष्टपदी। श्लोक। रासोल्ला
स भरेण विभ्रमभृता माभीर वाम भ्रुवा मभ्यर्णे परिर
भ्यनिर्भरमरः प्रेमांधयाराधया। साध्वीवदनेसुधाम
यमिति व्याहृत्य गीतस्तुति व्याजाडङ्गवद्वेविन

५

S

यइ जल कमल दिनेश। जय जय देव हरे ३ मधुसूर
नरक विनाशन गरुडासन। सुर कुलकेलि निदान
जय जय देव हरे ४ अमल कमल दललोचन भव
मोचन। त्रिभुवन भवन निधान जय जय देवहरे
रे ५ जनक सुताकृतभूषण जित दूषण समर शमि
त दशकंठ। जयजय देवहरे ६ अभिनवजल धर

रा॰ दो॰ गी॰

मूर्तिमानि वमथौ मग्यो हरि= क्रीडति प नित्योत्संग
वराङ्गजंग कवत क्लेशादि वेशाचलं शालेयलवनेक्ष
यान्त्र मरति श्रीखंड शैलानिल= । किंचस्त्रिग्धरसाल
मौलिमुकुलान्यालोक्य हर्षो दया । उन्मीलति कुहू=
कुहूरिति कलो नाना= पिकानांगिर= । ५ । अष्टप
दी ॥ चंदन चर्चित नील कलेवर पीत वसन ।

6

स्मित मनो हारीहरिः पातवः अनेक नारी परिरंभसं
भ्रम स्फुरन्मनो हारिविलास लालसं मुरारि रामाइ
पदर्शी यत्यसौ सखी समर्त पुनराह राधिका ७ वि
शेषा मनुरंजनेन जनयन्नानंद मिंदीवर श्रीणीश्पा
मलकोमलैरुपनयन्नंगैरनंगोत्सवं। स्वछंदंव्रजसं
दरीभिरभितः प्रत्यंगमालिंगितः शृंगारः सखि

रा·टी·
गी·

सरोजे ३ कपि कपोल तले मिलितालपिते किमपि
श्रुति मूले । चारु चुचुंब नितंबवती दयिते पु
लकै रनुकूले ४ केलिकला कुतुकेनच काचि
द मंयमुना जलकूले । मंजुल वंजुल कुंजगते
विच कर्ष करेण दुकूले । करतल ताल तरल वल
या वलि कलित कल स्वन वंशी । रास रसे सह

वनमाली । केलि चलन्मणि कुंडल मंडित मंड युगास्मि
तशाली २ हरिरिह मुग्ध वधूनिकरे । विलासिनि वि
लसति केलिपरे २ पीन पयो धर भार भरेण हरिं परि
रभ्य सरागं । गोप वधूरनुगायति काचिदुदंचित पंच
म रागं २ कापि विलास विलोचन चलन जनित म
नोज्ञं । ध्यायति मुग्ध वधूरधिकं मधुसूदन वदन

रा॰टी॰
गी॰

निजोत्कर्षा दीर्षा वशेनगतान्यत॰ कवि दपिलता कं
जेगुंजन मधुव्रत मंडली मुखर शिखरे लीना दीना
प्रवाचरह॰ साखी १० कंसारि दपि संसार वासना वे
ध शृंखला राधा माधाय हृदये तत्याज व्रज सुंद
री ११ इतस्त तस्ता मन स्त्यरा थिका मनंग बाण
व्रजाविन्न मानस॰ कृतानता ।

८

नृत्य परा हरिणा युवती प्रशा संसे ६ श्लिष्यति काम
पि चुंबति कामपि रमयति कामपि रामां पश्यति म
स्मित चारु परा मपरा मनुगच्छति वामां ७ श्रीजय
देव भणित मिद मद्भुत केशव केलि रहस्यं । इंदा
वन विपिने चरितं वितनोतु शुभानि यशस्यं ।८ ।
विहरति वनेराधा साधारण प्रणये हरौ विगलित

रा॰ टो॰ कटिलभ्रूकीय भरेण शोण पद्म मिवो परि भ्रमता
गी॰ कुलं भ्रमणेनता मह्यं हृदि संगता मनिशं भृशं रमया
मि किं वनेन सरामिता मिह किंहृथा विलयामि ४
तत्विविन्न मस्तयया हृदयन्तवा कलयामि तन्नवे
द्यि कुतो गतासिनते नते नृनयामि ५ दृश्यसे पु
रतो गता गत मेव किंविदयामि। किंपुरे वश सं

पः सकलिंद नंदनी तटान्त कुंजे निषसाद माधवः १२

॥ अष्टपदी ॥ मामियं चलिता विलोक्य कृते वधू

निचयेन। सापराधतया मयानति वारितानि भयेन

१ हरि हरि हन्त दरतया गतासा कृपितेव। किंक

रिष्यति किं वदिष्यति सा चिरं विरहेण किंधनेन जने

न किंमम किंसखेन गृहेण २ चिंतयामि तदानने

रा॰टी॰ तस्या एव मृगी दृशो मन सिज प्रेंखत्कटाक्षाशुग ।
गी॰ श्रेणी जर्जरितं मनो गपिमनो नाद्यापि संभृत्यते
१३ हृदि विलाशता हारोनायं भुजंगमना यक=
कुवलय दल श्रीणी कंठेन मागरल द्युति= मल
यज रजो नेदंभस्म प्रिया रहिते मयि प्रहरन हर
श्रीत्यानंग कथाकिमथावसि १४ अष्टपदी ।

भ्रमं परिरंभणेन ददासि। क्षम्यता मपरं कदापि नवे
दृशं नकरोमि। देहि सुंदरि दर्शनं ममसन्मथेन
दुनोमि। वर्णितं जयदेव केन हरेरिदं प्रवणेन किं
दु विल्व समुद्र संभव रोहिणी रमणेन ६ पाणौ
मा कुरु चूत सायक मसं माचाप मारोपय क्रीडा
निर्जित विश्व सूर्जित जना द्वाने नकिंपौरुषं।

रा॰ हो॰
गी॰

वसति विपिन विताने त्यजति ललित धाम । लठ
ति धरणि शयने बहु विपलति तवनाम ४ भण
ति कविजयदेवे विरहि विलसितेन । मनसिरभस
विभवे हरि रुदयतु सुकृतेन ५ श्लोक पूर्वयत्रस
मंत्रयावति पते रासा दिना: सिद्धयस्तस्मिन्नेवनि
कुंज मन्मथ महा तीर्थे पुनर्मीयव: । ध्यायंस्त्वाम

वहति मलय समीरे मदन मपनिधाय स्फुटति कुरु
मानिकरे विरहि हृदय दलनाय २ सखि सीदति तव
विरहे वन माली। दहति शिशिर मयूखि रमण मन
करोति। धनति मदन विशिखे विलपति विकलरो
ति २ धनति मधुप समूहे श्रवण मपि दधाति। मन
सि वलित विरहे निशि निशि कुजमुप याति ३

रा॰टी॰
गी॰

ग्याहशो विभ्रमास्तहङ्गोद्भुज सौरभं सव सुयासंदी
गिरां वक्रिमा। सा विंवाधरमाधुरीति विषया संगो
पिवे मानसे तस्यालग्न समाधिहेत विरह व्याधि क
थेवर्तते १ साकूतस्मितमा कुला कुलगालगलम्मि
ल मलासितं। भ्रूवल्ली कमलीक दर्शित भुजा मूला
ङ्गहृष्टस्तनं। गोपीनान्नि भृतन्निरीक्ष्य गमिनाकांत

12

निशी जपन्नपितवै वालाप मंत्रावली भूयस्तत्कवक्त्रे
भ निर्भरपरी रंभास्तं वोल्लति १ विकरति मुक्तः
श्वासा नाशः पुरो मकरी दते प्रविशति मुक्तः कंठे
गुंजे गुंजन्मुक्तर्वक्त्र कृतास्यति। रचयति मुक्तः शय्या
स्यया कलेंकरीतते मदन कदन क्लान्तः कान्ते प्रिय
स्तवर्वतते ११ तानिस्पर्शी सखा तितेव तरला स्त्रि।

319.
41-51.

रा॰टो॰
गी॰

सहचरी अष्टपदी ॥ ललित लवंगलता परिशी
लन कोमल मलय समीरे। मधुकर निकर करंबि
त कोकिल कूजित कुंजकुटीरे। विहरति हरि रिह
सरस वसंते नृत्यति युवति जनेन समं सखि विरहि
जनस्य दुरंते। उन्मद मदन मनोरथ पथिक वधूज
न जनित विलापे। अलि कुल संकुल कुसुम समू

13

श्चिरं चिंतयन्तं तमंग्य मनो हरोहरतवः क्लेशान्नवः
केशवः २ यमुना तीर वानीर निकुंजे मंदमास्थितं
प्राह प्रेमभरोद्भ्रान्तं माधवं राधिका सखी । वसंतेवा
संती कुसुम सुकुमारै रवयवै । भ्रमंती कांतारे व
कुविहित कृशानु शरणं । भ्रमंदं कंदर्पज्वरजनि
तचिंता कुलतया । वलद्वाथं राथं सरसमिद मूचे

श्री.
श्री-श्री.

रा॰टो॰
गी॰

रुण कृतहासे। विरहिनि कृंतन कृंत मुखाकृति
केतिकि दंतविनाशे ५ मायविथा परिमलललित
तेनव मालति यान सुगंधौ। मुनि मनसा मपि ।
मोहन कारणि नरुणा कारण वंध ६ स्फुरदति
मुक्त लता परि रंभण मुकुलित पुलकित चूते
। वृंदावन विपिने परि सर परि गत ।

इ निराकुल वकुल कलापे २ मृगमदसौरभरभसव

शंवद नवदल माल तमाले । युवजन हृदयविदा

रण मनसिज नखरुचि किंशुकजाले । मदनमही

पति कनक दंडरुचि केसर कुसुम विकासिलित ।

शिली मुख पाटल पटल कृतस्मर तूणविलासे

४ विगलितलज्जित जगदवलोकन तरुणक

रा॰दो॰
गी॰

२१ उन्मीलन्मधुगंध लब्धमधुपव्याधूत चूतांक
र क्रीडत्कोकिल काकली कल कलै रुद्गीर्ण क
र्णज्वरा: नीयंते पथिकै: कथं कथ मपि ध्यानाव
धानक्षण प्राप्त प्राण समा समग्र रसोल्लासैरमी
वासरा: २२ इरा लोकस्तोक स्तन कन वकाशोकल
तिका विकाश: कासारो पवन पवनोयं व्यध।

यमुना जल पूते । श्रीजयदेवभणिते मिद मुदयति ह
रि चरण स्मरति सारं । सरस वसंत समय वन वर्ण
न मनुगत मदन विकारं ८ अष्टपदी ॥ दर विद
लित मल्ली वलि चंचलराग प्रकटित पट वासै
र्वासयन्काननानि । इहहि दहति चेतः केतकी
गंधवंधुः प्रसरद समवाण प्राण वङ्गंधवाहः

रा॰ हो
गी॰

अविरत निपतित मदन शरादिव भवद वनाय वि
शालं । स्वहृदय मर्म्म करोति सजल नलिनी द
लजालं २ कुसुम विशिख शरतल्प मनल्प विला
स कला कमनीयं । व्रत मिव तव परि रंभ सुखा
य करोति कुसुम शयनीयं ॥ ३ ॥ वहति च गलि
त विलोचन जलधर माननं कमल मदारं । विधु

यति अपि भ्राम्यद्भृंगी रणित रमणीयान मञ्जुल प्रसू
नि भूतानां सवि शिवविरणीयं सुखयति । अष्टप
दी ॥ निंदति चंदन मिंदु करण मनु विंदति खेदम
धीरं ॥ आल निलय मिलनेन गरल मिव कलय ।
नि मलय समीरं ।२। माधव सा विरहे तवदीनाम
नसिज विशिखभया दिव भावनया त्वयिलीना

गा॰टो
गी॰

रि कल्या भवंत मतीव इशायं। विलपति हसति
विषीदति रोदति चंचति संचति तापं ॥ श्रीजयदे
व भणित मिद मधिकं यदि मनसा नटनीयं। हरि
विरहा कुल वलव युवति सखी वचनं पटनीयं ८
अष्टपदी॥ श्लोक॥ श्रावासो विपिना यते प्रिय सखी
मालापि जालायते ॥ तापोपि श्वसितेन दा

शिव विकट विपुलतर दन्त दलन गलिता मृतधारं
४ विलिखति रहसि कुरंगम देव भवंतम समशर
भूतं। प्रणमति मकर मथो विनिधाय करेच शरे न
वहतं ५ प्रतिपद मिदमपि निगदति माधव तव
चरणे पतिताहं। त्वयि विमुखे मयि सपदि सुधानि
धि रपि कुरुते तनुदाहं ६ ध्यान लयेन पुरः प।

रा टो
गी

त पवन मनपम परिमाहं। मदन दहन मिव दह
ति सदाहं ३ दिशि दिशि किरति मनल कण जाल
॥ नयन नलिन मिव विगलित नालं ४ नयन विष
य मिव किशलय नलं। कलयति विहित हताश
न कलं ५ त्यनलिन पाणि नलेन कपोलं। बाल
शशिन मिव सायम लोलं ६ हरिरिति हरि रिति

18 16

वरहन ज्वाला कलापायते । सापि त्वदिरहेण हन्त
हरिणी हृपायते हाकंथं । कंदर्पोपि यमायते विर
चयन् शार्दूल विक्रीडितं अष्टपदी ॥ स्तनविनि
हितमपि हारमुदारं सामनुते कृशतनु रिवभा
रं राधिका विरहे तव केशव । शरसम स्त्रणमपिम
लयजपंकं पश्यति विषमिव वपुषि सशंकं ५ श्वसि

रा टी॰
गी॰

स्पने नाम्यति ध्यायत्युद्भ्रमति प्रमीलति पतत्युत्था
ति मूर्छत्यपि पतावत्यतन्न जरेवरतन्न जीवेन्नकिं
तेरसगत्त्वर्वैद्य प्रतिमप्रसीदसि ततस्त्वकीन्यथा ३
लकः २६ कंदर्पज्वरसंज्वरा तरततोरात्र्यर्यमस्या
श्चिरं। चेतश्चंदन चंद्रमः कमलिनी चिंतासमंतास्य
ति। किंतत्तांति रसेन शीतलतरंत्वामेक मेव प्रियं

जपति सकामं । विरह विहित मरणो वनिकामं ७
श्रीजय देव भणितं मिति गीतं । सुवयन केश
व पद मय नीतं ८ अष्टपदी ॥ श्लोक ॥ स्मरतरं
देवन वैद्य हृद्य त्वदंग संगा स्मृत मात्र साध्यो । वि
नक्त बाधां कुरुषेन राधा मपेंद्र वज्रा दपि दारु
णोसि २५ सारीमो वनि सीत्करोति विलपत्यलक

रा टी॰
गो॰

स्वच्छंद व्रजसुंदरी जनमन स्तोक प्रदोषशिरं। कंस
ध्वंसन भूमकेतुरवतुत्वां देवकीनंदनः ॥ ५ ॥ अथ तां
गंतुम शक्तां चिरमनुरक्तां लतागृहे दृष्ट्वा। तच्चिरि
तं गोविंदे मनसिज मंदेसाची आह ३ अंगेष्वाभरणं
करोति बहुशः पत्रेपि संचारिणि। आसंत्वाम्यतिशं
कते वितनुते शय्यां चिरं ध्यायति। इत्याकल्य वि

२०

ध्यायंती रहसि स्थिता कथमपि क्षीणाक्षरं शारिणि

२१ क्षाम मपि विरहः पुराण मेहे नयन निमीलि

तविवृत्तया नयाने। श्वसिति कथमसौ रसालशाखां

विर विरहेण विलोक्य पुष्पितामां २८ राधाम

ग्य मनोरविं मपुपसैलोक्य मौलस्थली नेप।

त्यो विश्व नीलरत्नमवनी भारा वतारांतकः ॥

रा॰ दो
गी॰

त्वदधर मधुर मधूनि पिबेन १ नाथ हरि सीदति रा
धा वासगृहे । त्वदभि सारण रभसेन वलंती पतति
पदानि कियंति चलंती २ विहित विशद विष किं
शलय वलया । जीवति परमिह तवरति कलया
३ मुहुर वलोकित मंडन लीला । मधुरिपु रह
मिति भावन शीला ४ चरित मुपैति न कथ ।

कल्प तल्प रचना संकल्प लीलाधान । व्याशङ्कापि
विनात्वया वरतनुर्नैषा निशानेष्यति ३१ विपुल पु
लकपालिः स्फीत सीत्कार मंतर्जनित जटिमकाङ्क
व्याकुलं व्याहरंती । नवकि नव विधाया मंदके
दर्पचिंता रमनल निधि मग्नाध्यानलग्ना मृगाक्षी
३३ ॥ अष्टपदी ॥ पश्यति दिशि दिशि रहसि भवंतं

५५.
५.६

रा दो-
गी-

मी रुद्रे। आनर्यामिन दृष्टि गोचरमित: सानंद नंदा
स्पदम्। राधाया वचनं तदधग मुखोन्नेदांतिकेगो
पतो। गोविंदस्य जयंति सायमतिथि: प्राशस्त्य गर्भा
गिर: ॥३॥ अत्रान्तरेच कुटला कुल वर्त्मपाता मंजा
त पातक इव स्फुटलांछनश्री: । इंदावनांतरम ।
दीपय देशुनालैर्दिक्सुंदरी वदन चंदन बिंदु बिं

मभिसारं। हरिरिति वदति सखी मनवारं ५ श्लिष्य
ति चुंबति जलधर कल्पं। हरि रुपगत इति तिमि
र मनल्पं ६ भवति विलंबिनि विगलित लज्जा। वि
लपति रोदति वासक सज्जा ७ श्रीजय देव वकवेरि
दमदितं। रसिक जनतनुता मपि मुदितं ८ श्लो
क॥ किंविश्राम्यसि कृत्स्न भोगि भवने भांडीर भू

राटे
गी

जगात् प्राण विधाय माथवे प्रोमम प्राण इंगो भवि
ष्यति २१ वार्थो विधेहि मलया निलपेव वाण प्राण
न गरुडाणन गरुडमनरा श्रयिष्ये। किंते कृतोन
भगिनि क्षमया नरंगै। रंगानि सिव मम शामन
देहदाहः २८। प्रष्टपदी। कथित समयेपि हरि
रह हनयौवने। मम विफल मिद ममल

कः ३४ प्रसरति शशधर बिंबे विरहिण विलेवेह मा
यवे। विधुरा विरचित विविध विलापे सा परिना
पंचकारोद्वेः ३५ विरह पाण्डु मुखरि मावोवजक
निरयेनपि वेदनो विभ्रतीवन नोनि मनोभवः
स्वहृदये हृदये मदन ग्रथा ३६ मनो भवा नेदनवे
दनानिल प्रसीदरे दक्षिण मेव वामनो ॥ क्षणे

रा॰ दे॰
गी॰

पि कामिनी मभिस्तः किंवा कलाकेलिभिर्वहोवंश
भिरन्य कारिणी वनाभ्यर्थी किमुद्रामयति कोन॰ स्को
नः मना मना गपि पथि प्रस्थानमे वात्तम॰ संके
ती कृत मंजु वंजुल लता कुंजेपि यत्रागतः ४॰ प्रथा
गतो माधवमंतरेण सखी भिर्यो वीत्य विषादमूको
विशेक माना रमिते कयापि जनार्दने दृष्टव दे नदा

जयदेव कविभारती। वसन्त हृदि भवति विकोम

ल कलावती प। अष्टपदी। श्लोक। नाम प्राण म

यि स्वयं वर परो नीरोदनीरोदरे। शंके सेदरिकाल

कूट मपि वन्मकोमदानी पतिः। इत्थं हरि कथा

भिरम मनसो विक्षिप्य वक्षो वले। राधायाः स्तन

कोरकोपरि मिलन्नेत्रो हरिः पातवः। नत्किं काम

रा॰ दे॰
गी॰

रिन रशन जघन गति लोला ४ दयित विलोकित ल
जित हसिता। बहु विध कूजित रतिरस रसिता ५
विपुल पुलक एषुवे पटुभंगा। चसित निमीलि
त विकसदनंगा ६ श्रमजल कणभर सुभगशरी
रा। परिपति नोरसि रतिरणधीरा ७ श्रीजयदेव
भणित हरिरसितम्। कलिकलुषं जनयतु परिशा

३४ अष्टपदी। स्मर समयोचित विरचितवेषा गलि
त कुसुम दर विलुलितकेशा २ काऽपि मधुरिपुणा
विलसति युवतिरधिक गुणा। हरि परिरंभण व
लित विकारा। कुच कलशो परि नखलिन हारा २
विचल दलक ललिता नवचेष्टा। नदधर पानरभ
सकृत नेष्टा २ चेवल कुंडल ललितकपोला। स्वेद

रा॰दे॰
गी॰

चने ऊच पग गगने स्टग मद रुचि रूषिते । मणिम
य मेखले नारक पटले नखपद शशि भूषिते ३ जिन
विम शकले भुज भुजगले करतल नलिनीदले॰
मर्कत वलय मधुकर निचये विलसति हिम शीत
ले धरनि घटह जघने विपुल पचने मनसिज कनका
सने । मणिमय रशने नोरण हसने विकसति

मिते द अष्टपदी। सोरठा॥ सखदिन मदने रमणी
वदने उवन चलिनार्यरे। मृगमद तिलके लिख
ति मपलके मृगमिव रजनीकरे २ रमने यमनाप
लिन वने विजय मरारि रथना। चरवय रुचिरे २
वयति चिकुरे नरलिम नरुणानने अरुवक अस
मंवला सावमेरमिपति मृगकानने २ चटयति स

रा॰ दे॰
गी॰

इति कविन्द्र जयदेवके प॰ अष्टपदी॥ अनिल
तरल कदलय नयनेन। तपति तनु किसलय
शयनेन २ सखिया रमिता वनमालिका। विक
सित सरसिज ललित मुखेन। स्फुटति न मामन
सिज विशिखेन २ अस्तन मधुरतर मृदु वचनेन।
ज्वलति न मामलयज पवनेन ३ स्थल जल रुह

कृतवासने ५ चरणा किसलये कमला निलयेन।
रवि मणि गण पूजिते। वहिरण वरणे यावकभरणे
जनयति हृदियो जिते ६ रमयति रमशेकामपि
सदृशं खल हृतयर मोदरे। किमफल भवसे चि
रमिह विरसम्बद सखि विटपोदरे ७ हरसभणा
ते मधरिपु पदसेवके। कलि प्रगविरिते नवसत

रा॰ दे॰
गी॰

इति वर्णि हृदयमनेन द अष्टपदी। श्लोक॥ नाया
मन्मथविजयो यदि शठस्त्रिहति किं हृदयेन॥
मुक्तेदं वद वल्लभ मन्मथमते किं तवेन हृषीकेण॥ प
श्लाघ्य प्रिय मेगमाय दयितस्याकृष्य मानोऽपरो।
रुक्मेदार्ति भरादिवस्फुट दिदं चेतः स्वयेवास्थित
निभृत निकुंज गृहे गतया विशिरहसि निलीय

५२

29 २९

रुचिकरचरणेन । लदति नमाहिसकरकिरणेन
४ सजल जलद समुदय रुचिरेण । दहति नमाह
दि विरह भरेण ५ कनक निकष रुचि शुचि वव
सेन । स्मिति नमा परिजन हसितेन ६ सकलभु
वन जनवर नरुणेन । वहति नमा रुज मनिकरु
णेन ७ श्रीजयदेव भणित वचनेन । प्रविशतु

रा॰ दे॰
गी॰

याने कृतपरिरंभण उंचनया परिरंभ कृतायरपाने
इ अलस निमीलित लोचनया पुलकावले ललितक
पोले। श्रम जल शकल कलेवर यावर मदन मदाद
निलोले। कोकिल कलरव कूजितया जित मन सि
ज तेज विचारे। स्मथ कुसुमा कुल कुंतलया नखलि
खित घनस्तनभारम् ५॥ चरण रणित मणि

30

वसन्ते । चकित विलोकित सकल दिशा रति रभस व
शेन हसन्ते २ सविहे केशि मदन मदारे । रमयामया
सह मदन मनोरथ भाविनया सविकारे । प्रथम स
मागम लज्जित या पटु चाटु शतै रनुकूले । सुदु मधु
रस्मित भाषितया शिथिली कृत जघन दुकूले २
किसलय शयन निवेशितया चिर मुरसि ममैव दशा

रा॰ दे॰
गी॰

सलीले।८। अष्टपदी। श्लोक॥ वृष्टि आकुल गोकु
ला वनवशाद्धृत्य गोवर्द्धने। विभ्रद्वलव सुंदरी
भि राधिका मदाच्छिरे कुंविनः। दर्पौघव नदर्पिनाथर
नदी सिंहूर मडो किनो। वाडवौघनतो स्तनोत्तभव
नः श्रेयांसि केसहिषः ४३ अथ कथमपि यामिनी वि
नीय सार शरजर्जरिताप्सा प्रभाते। अजनयवव

नूपुरया परिपूरित सरस विलासे । मुखर विशृंखल
मेखलया सकल गुरु जघन दलन रति खेद समय
वसालस या दर मुकुलित वदन सरोजे । विलसति
पतित तव लतया मधुसूदन मुदित मनोजे ॥ श्री
जयदेव भणित मिद मनि शय मधु रिपु निधुवन
शीले । सुख मुके दिन राधिकया कथिते विलसोत

रा दे
गी

वन विरचित नील मरूपे दशन वसन मरुणो नवहू
स नतोति नवरत्न रूपे २ वपु रत्न हरति नवसरसे
गयरव रत्न खचरत्नतरेखे। मरकत शकल कलित क
ल यौतलिपे सिव रति जय लेखे ३ चरण कमल गल
दलक्त कसिक सिंदे नव हृदय मदारे। दर्शयती व
वहि मर्दन द्रुम नव किसलय परिवारे। दशनपदे

नेवदेते मये प्रणत मपि प्रिय मह साम्प्रस्त्रये ४४

अष्टपदी ॥ रजनि जनित गुरु जागर रागकषायित

मलसनिमेषं । वहति नयन मनुरागमिवस्फुट

मदिन रसाभिनिवेशं । याहि माधव याहि केशव

मा वद कैतववादं । मामनुसर सरसीरुह लोचन

यानव हरति विषादं । कज्जल मलिन विलोचन चुं

गीत
गी

सखरिते । श्रीजयदेव भणितमति वंचित वंदित प्र
वति विलापे । श्रावत सदामधुरे विधुरा विधुराल
यनोपि । द । अष्टपदी । श्लोक ॥ नवेदं पश्यंत्याः प्र
सर दनरागरवहिरिव । प्रियापादालक्त कुरित
मरुणा योनि हृदये । समाय प्रत्यात प्रणाय भ
रभंगेन किमवत्वदालोकः शोका दपि किम

भव दयरगत मम जनयति चेतसि खेदं। कथयति
कथ मधुनापि मया सह नव वपुरेतद भेदं ५ वहि
रिव मलिव तरेतरेतव हृदय मनोपि भविष्यति नू
नं। कथ मथ वेधयसे जन मन यतम सम शर ज्वर
हतं ६ भ्रमति भवान वला कवलाय वनेषु किम
त्र विचित्रं प्रथयति हसति कैववपु वय निर्दयवा

रा॰ दे॰
गी॰

रिस्सवाव। परि हरकुना नेक शोको नया सनते च
न स्तव जवनया क्रोते परानव काशिनि विशनि
वितनो रमो यमो नकोपि ममोनरे प्रणायिनि प
री रेभारंभे वियेहि वियेयनामद मग्ये वियेहिम
यि निर्दय देन देश दोर्वलि वेयनि विडस्तन पीड
नानि चेडिनमेव मद मेवय पेवबाण चोडाल को

पिलजो जन यति ४५ पमापयो यरनदी परिरम्भ
लग्न काश्मीर मदिन मगो मधुसूदनस्य । अकान्त
रागा मिव खिलद नेमाखेद खदोद्भुर मन हरयन्
श्रियम्बः ४६ अथान्तरे मम्मणा शेष वशा मसी म
निः आमनि स्नाह मखी समाखी मपेत्य मधीड
मीक्षित माखी वदने दिनोने सानंद गद्गद पदं हरि

गा॰ दे॰
गी॰

निशाय स्त्रिय मन्ये प्रयोग सुपस्थितः। ग्रहपती।
वदसि यदि किंचिदपि दन्त रुचि कौमुदी हरति द
रति मिरमति घोरम। स्फुर दधर सीधवेन व वद
न चंद्रमा रोचयति लोचन चकोरं। प्रिये चारु शी
ले मुंचयति मानमनिदानं। सपदि मदनानलो दह
ति मम मानसं देहि मुखकमल मधुपानं। सत्यमेवा

उदलना दसवन्मयोन ॥ शशि सुरवि नव भाति भे
गुरभर्षवजन मोह कराल कोल सर्पी नड दिनि
भय भंजनाय एनांत्वद यरसीध सुधेव सिद्धिमंत्रः
अंय यति हृथामौने नल्लिप्पंवय पेवमेनकुणा
मधुरालापै स्लापं विनोदय दृष्टिभिः समरति
विमलो भावनान्ना वह्नि मंचन मंचमो स्वय म

रा॰दे॰
गी॰

त्रिलोकनाथ रूपं। अस्तम शरवाण भविन यदिरंज
यसि कुल सिद मेन दनरूपं ४ स्मरन जब जेभयो
रु यदि मणि मेजरी रंजयन नव हृदय देशं। रसन
रसनापि नवचन जचन मंडले घोषयन मन्मथ
निदेशो ५ स्थलकमल गंजमे मम हृदय रंजनेज
जिनपिन रंग परभागं। भणमस्त्रणा मणि कर

सि यदि सदति मयि कोपिनी देहि खर नखर शर
घाते। घटय भुजबंधने जनय रद खंडने येन वा
भवति सुखजाते २ त्वमसि मम भूषणं त्वमसि
मम जीवनं त्वमसि मम जलधि रत्नं। भवतु भव
तीह भवि सतत मन रोपिने तत्र मम हृदयमनि
यन्त्रे २ नीलनलिनाभमपि न त्विनव लोचने धारय

रा॰ दे॰
गी॰

ने। श्लोक॥ वेधूक फनिबोधबोध मधुरा॰ स्त्रि
ग्ध मधूक छवि॰ गेंडे चेंडिचकास्तिनीलनलिन
श्रीमोचने लोचने। नासान्तेनि तिल प्रसून पद
वीकेदाभदेति प्रिये प्रायस्तन्मादमेवया विजयते
विशेसप्रभाप्रथ॰ ५। दशौनवमदालसेवदनमिंदु
संदीपने गतिर्जन मनोरमाद्धि जितरंभ मूरुद्वये

वाणि चरणा हये सरस लुमद लकरवाणो ६ मरण
दल खंडने मम शिरसि मंडने देहि पदपल्लव मुदा
रे । ज्वलति मयि दारुणो मदन कदना नलो हरतु
तद्रुपा हित विकारं ७ इति चटुल चाटु पटु चारुम
ति वैरणो राधिका मयि वचन जाने । जयति पद्मा
वती रमण जयदेव कवि भारती भणित मति शो

रा॰दे॰
गी॰

मानमा ऊदिल॰करोनकवरी भारोपि मारोछमे। मो
हेना वदयेव नलिननने विवायरोमगवान् सह
म॰स्मन मेडस्त स्तवकथे प्राणैमिम क्रीडति ५४
मानिनी मान विधे मदसो जयति मोप्रते। मडुवे
ए। समसूत॰ श्रीमकोपालकधनि॰ ५५ नामथ
मन्मथ विचो रतिरति रस भिचो विषाद सम्प

38 ३८

रतिस्तव कलावती रुचिर विश्वेदि अवा वहोविव
यौवने वहसि नन्वि हस्ती गमा ५२ भूपलवे य
नुर योगानंरमिलानि वाणाशुणः श्रवण पालि रि
ति स्मरेण। नस्या मनेगा जय जंगम देवनाया म
स्त्राणि निर्जिन जगंति किमपिनानि। ५३। भूचा
पे निहना कटाक्ष विशिखो निर्मीन मर्म व्यथो शपा

रा-दे-
गी-

सरति वहति मद्र पवने किम परमधिक सखेसखि
भवने । माधवे माकुरु मानिनि मानमये । लालफ
लादपि गुरुमति सरसे । किम विफली कुरुषेक
बकलशे । कठिन कथिन मिद मन्न पद मविरे । मा
पविरुरि इव मति शय कविरे । किमिति विषीदसि
रो दिषि विकला । वहसति प्रदति सभा मव वि

न्नो । अनुचिंतित हरि चरितो कलहानरिनामवा
चरहः सांवी ५६ स्त्रिगो यन्मकरा सि यन्मणा मति
स्तधासि यद्रागिणि हेषण्यासि यदन्मरावे विमाव
नो यानासि नस्मिन्प्रिये । नयके विपरीतकारिणि
सव श्रीखंड चर्चाविषे शीतो मुक्तपनोरिमे ऊन व
हः क्रीडा मदो यानना: ५७॥ अष्टपदी ॥ हरिरभि

रा॰ दे
गी॰

श्रीराधिकाजीके वचन रिपु रिव सावी सेवासोयेस
खी वहिमानिलों विष मिव स्थारसिमयीस्मिन् नो
नि मनोगते। हृदय मदये नस्मित्रेव प्रनर्वलते व
लात् कवलय हशाम्वाम॰कामो विकाम निरंकुशः
॥८॥ गणयति गणाग्रामे ग्रामे भ्रमा दपिमेहृते
वहुजिवपति नोवं दोवं विमेवति हूरतः॥ ग्रवति

40 ४॰

कला ४ जनयसि मनसि किमिति गुरु खेदं। स्मर
मम वचन मतीहि न भेदं ५ इति कथयति वङ्कमय
रं किमिति करोषि हृदय मति विधुरं ६ सजल न
लिन दल शीतल शयने। हरि मवलोकय सफल
य नयने ७ श्रीजयदेव भणित मति ललिते। सुखद
रसिक जने हरि चरिते ८॥ अष्टपदी॥ श्लोक॥

रा-दे-
गी-

नयेन प्रीणा यित्वा स्वगाहो गनवनि कृतवेषे कश
वे जेजशय्या रचित रुचिरभूषा रुष्टिमोषे प्रदोषेस्क
रति जिरवसादो कापि रायंजगाद ६१ सामो दृश्य
नि वदयति प्रियकथो प्रयेग मालिगनै । प्रीति यास्य
सि रेयनेसाविसमाज्ञेनि चिना कलः । सनोपश्य
जिदेपने प्रलकय स्यानेदति स्वियनि । प्रस्य कृष्ण

ऊद्वलन्तो कलो विहारिणी मोदिना प्रजपीमनो
कामे कामे करोति न कैमिकि ५२ प्रीति सम्मनतो
हरि जवलया पीडेन मार्द्दयो गथाथीन पयोगर
दमरण कन्केभेन संभेदवान। यत्रस्थियति मील
नि दामथ क्षिमे द्विपे मन्दाणान। केमस्यालम
भूजिनभिनि आमोद कोला हलः ६ सकविमस

गा दे-
गी

दन सेभ्रमा दनुरना रिभादन श्रीनयोः । श्रमार्थे गान
योर्भ्रमान्मिलिनयोः संभाषणौजीननो । देवस्योनि
हकोज कोन नमसि श्रीडाविमिश्रोरसः ६४ श्र
नोति त्रिपदेजने श्रवणयो स्तापिक्क गक्कालो ।
मूर्द्धि श्यामसरोजदामकुचयोः कस्तूरिकापत्र
कम ॥ श्रूजी नामभि सारसन्वर हदो विषद्रुति

४२

जिन्नूछि जि स्थिर नम-मंजे निजेजेप्रिय: ६२ नहामे
नसमे समग्र मधना तिरमो सारस्तेराजो । गोविंदस
मनोरथेन चसमं प्रामंत्र नम-मांद्रनो । कोकानो करु
णा स्वनेन सदृशी दीर्घा मदक्षार्थना । नम्रस्थो वि
फले विलंबन मसौ रम्योभि सारदाग: ६३ आश्लेषा
दव बंधना दनुनखो लेखा दनस्वान्नज: पेठोथा

रा॰टे॰
गी॰

केलिशयनमनयाते २ मुग्धे मधुमथनमनयातम
मुखरसायिके। घनजघनस्तनभारभरे दरमन्थरच
रणविहारे। सावरितमणि मंजरी सदैहि विधेहिम
राल विकारे २ सुरगरमणीय नरेनकरणी जन मोह
न मधुरिपुरावे। क्रमम यारासन शासन वेदिनिपि
क निकरेभजभावे २ अनिल नवल किसलय निक

43

ऊंजे सखि । धोतनील निचोल चारु सहस्रपे पमेग

मालिंगने ६५ काश्मीरगौर वपुषा सभि सारिकाणा

मावहेरव सभिनो रुचिमंजरीभि: । एतत्तमाल द

लनील तमंत सिंधे तमेमहेम निकषो पलनोत

नोति ६६ अष्टपदी ॥ विरचित चाटु वचन रचनेच

रणो रचित प्रणिपाते । संप्रति मंजुल वंजुल कुंजमनि

रा॰दे॰
गी॰

सार सार हृदया सखेन सखी भव संग करेण सखी
केवल वलय कणितै रव बोधय हरि मणि निज गा
निगीले । श्रीजयदेव भणित मधुरीकृत हार मदा
सित वासे । हरि विनिहित मनसा मयि निहत कैट
भ दीप विरामे द ॥ अष्टपदी ॥ श्लोक ॥ सामान्य द
यति वहति प्रियकथो अंगेग मालिंगनै ॥ श्री

४४

44

येणा करेणा लता निकुरंबे। येरणा सिव कर भोरु
करोजि गति प्रति मंच विलंबे ४ स्फुरित मनेगान
रंग वशादिव सह चित हरि परिरंभे। एक मनोहरवहा
रविमल जल धार मंजु जव जंघे ५ अपि गत म
खिल सखी भिरि देजव वश रति रण सजे। चे
रि वणीत वशान्ना रव डिंडिम मणि मुरसमलजे ६

रा॰ दे॰
गी॰

वनमाली। गोपीपीनपयोधरमर्दनचंचलकरयु
गशाली। नामसमेतं कृतसंकेतं वादयते मृदुवेणुं
वहुमनुते ननुते ननुनेतिगतपवनचलितमपिरेणुं २
पतति पतत्रे विचलितपत्रे शंकितभवदुपयानम्
रचयति शयनं सचकितनयनं पश्यति तवपंथानं
स्फुटतरफेनधरं रतिसमयजरं रिपुमिवकेलिसुलोलं

45 84

नि यामयति वेपथु मति समाधानेन चिंता जलः।
सन्ताप श्वसनि वेपते प्रलकय त्यानेदनि खिद्यति।
प्रपञ्चति मूर्छति शिरतमः पुञ्जेन निकुञ्जे प्रियः ६६

श्रुतपदी॥ वनि सालसारे मन मभिसारे मदन मनो
रथवेशे। निकुरु निनेदि निगमन दिलेवन मनु
सरने हरयेशे २ धीर समीरे यमुनातीरे वसति वने

रा॰ दे॰
गी॰

यानि विरामे। कुरु मम वचनं सत्वर रचनं हृदय मधुरि
पुकामे॥ श्रीजयदेव कृत हरिसेवे भणति परम भ
क्तीये। प्रमुदित हृदये हरिमपि सदये नमत सकृत
कमलीये॥ इति। अष्टपदी। श्लोक। सभय चकिते विमलते
नी दृशौ तिमिर पति प्रति रुत मुहुः स्थिता मन्द
पदानि विनयेनी कथ मपि यदुः आशा मेनौ रचेनौन

वलसखिकुचे सनिमिरपेचे पीलयनीलनिचोले
४उरसि सरोरुहमपहिन सारे चमरवनरलवलाके।
नहि दिव यीनेरनि चिकरीने राजसि सकलनविपाके ५
विगलित वसने परिहृतरशने घटय जघने मपि
धाने किमलय शयने पेकजनयने निपिमिवरूर्ष
निधाने ६ हरिरभिमानी रजनिरियानी मिय सपि

गा॰ दे॰
गी॰

ये माधव समीप मिह नव भवद शोक दल शयन सा
रे विलस कुच कलश तरल हारे २ कुसुम चय रचि
त शुचि वासगेहे। विलस कुसुम सुकुमार देहे ३
चल मलय वन पवन सुरभि शीते। विलस रति व
लित ललित गीते ४ विनत नवङ्ग वलि नव पल्लव श
ये। विलस चिर मलस पीन जघने ५ मधु मदिन

रंगिभिः समविषमभाव सनामगण न्यूपेत ब्रह्मवार्य

तो २ हारावली तरल कांचन कांचिदाम मंजीरकं

कण मणि फणि दीपितस्य हारे निकुंज निलयस्य

हरिं निरीक्ष्य जीवनी मयसखी निजगादराधां

६८ ॥ अष्टपदी ॥ मंजुतर कुंजतल केलिसद

ने विलस रति रभस सहसित वदने २ अविशा

11.

11.5.

रा॰दे॰
गी॰

दीवरे। स्वकेदे मकरेद सेदर गलन्मेदाकिनीमेदुरे
श्रीगोविंद पदार विंदमधुमस्केथाय वेदामहे ६५
अहमिह निवसा मियाहि राधा मनुनय मद्वचने
वानयेथाः। इति मधुरिपुणा सखीनियुक्ता स्वय
मिदमेम पुनर्जगादराधां ७० नोचितेन विरं वहे
मय मति श्रोतोभ्यशंतापिनः। कंदर्पेणा वपान

मधुप कुल कलित रावे विलस मदन रस रभस भा
वे ६ मधुर नव पिक निकरनि नद मुखरे। विलस
दशन रुचि रुचिर शिखरे ७ विहित पद्मावती सुख
समाजे। भणति जयदेव कविराज राजे ६ अष्टप
दी ॥ श्लोक ॥ मान्द्रा नंद पुरंदरा दिदि विषद्वेदै
रमंदादरा दानवै मुकुटैर्द्वनील मणिभिः संदर्शितै

रा॰ दे॰
गी॰

नयोः। मदानी राधायाः प्रियतम समालोकसम
ये। पपात खेदांबु प्रसर इव हर्षोद्भ्रतिकरः अ
भजेत्पास्तस्मिन्ने कृत कपट कराङ्गुलि विहितः॥
मिलेयाने गेहाद्वहिरवहिताली परिजने। प्रिया
ग्रेयशंसा स्मरशरसमाकूत सुभगो। सलज्जाया
लज्जाग्रगम दिवहूर्मुग्धदृशः॥७४॥ अष्टपदी॥

49

मिच्छति सथा संभाव विंवाथरं। अस्मांके तदलेकरु
णा मिह भूतेप लक्ष्मीलव। क्रीने दास इवोप से
वित पदो भोजे कृतःसंभ्रमः ३२ सास साध्वसमा ने
द गोविंदे लोल लोचना सिंजान मेज मेजीरे प्रवि
वेश निवेशने ३२ अति क्रम्या पाशे प्रवणा पथ प
र्यंत गमन प्रवासे नेवादणो स्तवल नरना रम्यानि

राटे-
गी

एवं २ प्रणामत्तमण्डल कलेवरमेडल मणिगन गौर
उकुले नीलजलिव सिव पीन पराग पटल भरलेल
पित्तमूले २ नरल दृगंचल चलन मनोहर वदन
अनिन दनियागे। स्फुटकमलोदर खेलित खेजनय
गमिव शारदिनडागे ॥ वदनकमलपरिशीलनमिलि
तमिहिरसम कुंडल शोभे। स्मितरुचि कुसुम मख

राधावदन विलोकन विकसित विविध विकार वि
भेदो । जलनिधि मिव विधु मंडल दर्शन तरलित
तेन मनोदो ९ हरि केकर संचिर मभि लाषित वि।
लासे । सादर मुरु हर्ष वशे वद वदन मनेग विका
शे । हारमसल नरमार मरसि दधते पविलेक्षविह
रे । स्फुटतर फेन कदंब करंबित मिव यमुना जल

रा॰दे॰
गी॰

प्रणाभारे। प्रणामन हृदि विनिधाय हरिं स्वचिरंस कृ
तो दयसारे। ८॥ प्रणपदी॥ श्लोक॥ गानवति सखी
वृंदे मेदत्रणाभर निर्भर स्मर पर वशाकृत स्कीनस्मि
तस्नाणिना थराम। सरस मलसे दृष्टा दृष्टा मजस्त्रे
त्रपलव प्रसर शयने निर्निमाक्षी मवाच हरि॰ष्ति
याम। किशालय शयने तले कुरुकामिनि चरण

५२

लसिता धर पल्लव कृत रतिलोभे ५ शशि किरण
कुसिते दमजलधर सुंदर सकुसुम केशे तिमिरो
दित विधु मंडल निर्मल मलयज तिलक निवेशे ६
विपुल पुलक भर दंतुरिते रति केलि कला भिरथी
रे। मणि गण किरण समूह समुज्वल भूषण सुभग
शरीरे ७ श्रीजयदेव भणित दिभव हिरणी कृत भू

रा-दे-
गी

३ मिवापन यामि पयोधरोधक सरसिरुहले ३
प्रियपरिरंभण रभस वलित मिव पुलकित मति
दुरवापे । मधुरसिजकलशे विनिवेशय शोष
य मनसिजमापं ४ प्रथरसधारस मपनय भामिनि
निजविधमन मिवदासे । नयि विनिहित मनसे
विरहानल दग्ध वपुष मविलासे ५ शशिमुखि

कमल विनिवेशे। नवपद पल्लव वैर परा भव मिद
मह भवन स्वेशे २ क्षण मथना नारायण मवग
त मनुसर राधिके।१५-। कर कमलेन करोमि चर
ण मह मागमि तासि विहूरे। क्षण मुपकुरु शय
नो परमा मिव नूपुर मनुगति मूरे २ वदन सुधानि
धिया लिन मम्रत मिव रचय वचन मनुकूले। विर

रा॰टे॰
गी॰

नोरम रति रस भाव विनोद ८ अष्टपदी ॥ श्लोक ॥

प्रत्यूह: पुलको करेण निविडा श्लेषै र्निमेषेण व

क्रीडाकूत विलोकितै र्यवसथा पाने कथानर्मभि:

आनंदाभिगमने मनसथ कला प्रवेपि यस्मिन्नभू

दुद्भूत: सनयोर्विभूव सरला रंभ: प्रियं भावुक:

१६ मीलदृष्टि मिलनकणोल पुलकं सीत्कार यागाव

53 ५३

मावरय मणि रशना गुणा मन्नगुणा कंठ निनादम्-
कनि गुणले पिकरुत मम शामय विशदवसाटे ६
मामनि विफल रुषा विफली कुरु मवलोकितम
ध्रुवेदं । मीलनि लज्जित मिवनयने नव विरमवि
स्रजमनि खेदम् ७ श्रीजयदेव कवेरिद मन्न पदानि
गदिन मधुरिपु मोदम् । जनयन रसिक जनेषुन

रा॰ दे॰
गी॰

मणि नूपुर मापन दशो कामस्य कामायनि॰ ७८ का
मांके रतिकेलि संकल्पस्वरणा रंभानया साहस प्राये
कोनजयाय किंचिदुपरि प्रारंभिय नेभ्रमोनिरंतरा
जघनस्थली शिथिलिता दोर्वलि रुकंपिते वक्षो
जीलिते मत्तिपौरुषरसः स्त्रीणांकतःसियति ॥ न
स्याः पाटलपाणिजोकिन मरो निद्रा कषाये दृशौ

प्रादयमा जलकेलि काऊविक सहेना अयो तार्थ

अशोकाम्र पयोधरं भशपरिष्वंगात् करंबी हशो।

हर्षोत्कर्ष विमक्त निःसहमनोर्थमोपयमानने ७७

दोर्भ्यां श्रेयमितः पयोधरभरेणात पीडितः पाणिजै

राविद्धोदशनैः क्षताधरपुटः श्रोणी तटे नाहतः हस्ते

नानमितः कचेधर मधुस्पंदेन मोहितः कांतः का

राँदे-
गी

दशानंदेन गोविंदे दर प्रहृपदी। करुयउनेदन चे
दन शिशिर नरेण करेण पयोधरे। मृग मद पत्रक
मत्र मनोभव मंगल कलश सहोदरे ९ निजगादसा
यइनंदने क्रीडति हृदयानंदने। दयरइवन लेवितक
जल मज्जलय प्रियलोचने अति कुलगोजन मंजनके
दजिनायक मोचने २ नयन करंग तरंग विका सिति

मुनिर्ह्यो यवशोमिमा विलतिना सत्तसजोमूर्ड
जाः कोवीदामदरस्यांचलमिति प्रातर्त्रिवौतैरशो
वेभिः कामशौरैस्तदङ्गनमभूत्मर्मनः कीलितं ८ ५
यकोनेरति श्रीत मपि मेऽने वोक्तया निजगाद निरावा
धारया स्वाधीन भर्तृका दर इति मनसा विगदेने
स्वतोने मानिनोन विवोगीरया जगाद सादर मि

रा-दे-
गी-

नम रुचिरे विकसे ऊरु मानदमनम जघन चामरे-
वनिमालिजे ललिते ऊरुमा निशि रोदि शिवेडक
डामरे ६ सरसजने जघने ममशेवरदारणा कंदरे।
मणिरशना वसनाभरणानि शुभाशय वामय खेद
रे ७ श्रीजयदेववचसि जयदे सदये हृदये ऊरु मंडने-
हरिचरणस्मरणामृत कृत कलिकलुषज्वरखेदने ८

दसकरे प्रतिमंडले। मनसिज पाश विलासकरेश्र
भवेष निवेशाय केडुले ३ भ्रमर चये रचयेन्नपरिरु
चिरे सचिरं ममसंकुले। जिनकमले विमले परिक
त्यय नर्मजनकमल केसरे ४ मृगमद रसललि
ते ललिते करुतिलकमलिक रजनीकरे। विहित
कलंक कले कमलानन विभ्रमित भ्रमरीकरे ५

रा दे-
गी

यन्नयो रायाय रायानने स्वैं सेव मवोज्ञ जोस्त ज
गद्दा नेदाय नेदान्मज: ८५ पर्यंकी कैन नाग नाथ
कफणा श्रेणी मणी नोराणे सेकोज प्रति बिंब सेव
नमया विभ्रहिभ प्रक्रियो। गादोभोरुह धारि वारि
धि सुता मत्तांगदिष्टव: शनैः। काय सूह मिवाचरे
नपविनी भूमोहरि: पातव: ८६ निर्यक्कोठ विलो

श्लोक। रचय जघनो ऽपरे चित्रे करुषकपोलयोर्द्वि
तय जघने कांची मेखला कबरीभरे। कलयवल
य श्रेणीपाणौ पदे करनूपुरा विति निगदितः श्री
मन्मीनोत्तरोपितथाकरोम् दध प्रानर्नील निचोल
मच्छमम्बरसंवीत पीनोश्वकेशयाम्भकिते विलो
कयसि मिमि चेरे साधी मेरुले। श्रीडाचेचल मेचलेन

रा॰टे॰
गी॰

रासे हरि मिह विहिन विलासे । स्मरति मनो मम कृ
त परिहासे चंद्रकचारु मयूर शिखंडक मंडल व
लयितकेशे । प्रचुर पुरंदर धनुरनुरंजित मेदुर म
दिन सुवेशे ॥ गोपकदंब नितंबवती मुख चुंबन
लंभित लोभे । बंधुजीव मधुराधर पल्लव मुल्लसि
त स्मित शोभे ॥ विपुल पुलक भुजपल्लव वलयि

तमौलिनरलोकेसम्पवंशोद्भव। कीर्तिस्यानकृता
वधानललनालक्षेणसेलक्षिताः प्रेमणाकेदलिताः
सुभगमधरेणयाश्रवैदौक्षया। सारेवोमधसूद
नरणदहनेमेकटाक्षोमयः ८७॥ अष्टपदी॥
सेवयदधरकथामधुरध्वनिमावरितमोहनवंशे-
चलितदृगंचलचंचलमौलिकपोलविलोलवतंसे- १

रा॰ दे॰
गी॰

विशदकदंब तले मिलितं कलि कलुषभयं शमयं
ते ॥ मामपि किमपि तरंगदनंगदृशा मनसा रमयं
ते ७ श्रीजयदेव भणित मति सुंदर मोहन मधुरि
पुरूपं । हरिचरणस्मरणं प्रति सेप्रति पुण्यवतां
मनरूपम् ॥८॥ श्लोक॥ हस्त स्थल विलास
वेशमन्त्रज भ्रूवल्लि मंडलवी हेदोला ॥

59 ५९

नवल्लव पुवनि सहुरे । कवचवरणोरसि मणि गण भू

षण किरण विभिन्नत मिरे ४ जलद पटल बल

दिव विनिंदक चंदन बिंदुललाटे । पीन पयो धर

परि सर मर्दन निर्दय हृदय कपाटे ५ मणि मय

मकर मनोहर कुंडल मंडित गंडे सुदारे । पीत वसन

अनुगत मनि मनज सुरासुर वर परिवारम् ६

रा॰टे॰
गी॰

धसः केसरियो यशो हरयतवो श्रेयांसि वेशीरवः दर्प
यज्ञोथर्व कलास कौशल मन ध्यानेव यद्वैलवे य
त् स्टंगार विवेक तत्र मपियत्काव्येष लीलायिते
तत्सर्वं जयदेव पंडित कवेः कृष्णैकतानात्मनः। सा
ंद्राः परिशोधयंतु सपियः श्रीगीत गोविंदतः
॥ साधी माधीक चिंतान भवति भवतः शर्करैक

60

रिङ्गत वीतिके मति खेराद्री गोडस्थले । मा मुद्री
रूप विलजित स्मित सुधा मुखानने कानने । गो
विंदे व्रज सुंदरी गण वृतेपश्यामि दृष्यामि च दद
ग्रेतर्मौद्रन मौलि हूणित चलन्मेदार विस्रंसनः
सद्यो कर्षण दृष्टि हर्षणमहा मेरे करेगी दृशो ।
दृष्ट्वा दानव हूयमान दिविषद्वीरङ्ः खोपदास ॥

रा॰ दे॰
गी॰

चक्रवर्ती श्रीवासदेव रति केलि कथा समेत मेतेक
रोति जयदेव कवि॰ प्रबंधे २ यदि हरि स्मरणे सरसं म
नोपदि विलास कलासु कुतूहले। मधुर कोमलका
न पदावली शृणु तदा जयदेव सरस्वती ३ वाच॰ प
लव यन्समा पनियर॰ संदर्भ शुद्धि गिरो ॥ जानी
ते जय देव एव शरणः श्लाघ्यो दुरूहद्रुतेः। शृंगा

अथ रागदेवशाख गीतगोविंदपरिच्छेद मारू ॥

ताल। ॥मैंगैमैं ड्रमबरं वनभवः शपामास्तमा

लडुमैं नैक्क भीकरंपैल्लमैंव नदिमे राधेगदङ्गप्रापय

इत्यनेदनि देशनश्चलिनयोः प्रमधंकुंजडुमे राधा

माधवयो जयंति यमुना कूलेरहः केलयः १ वादे

वना चरित चित्रित चित सम्मा पद्मावती चरण चारण

रा दे
गी

चक्र गरिष्टे केशव धृत कच्छप रूप जय जगदीश हरे २
वसुनि दशन शिखरे धरणी नवलग्ना शशि निकले
क कलेवनि मग्ना केशव धृत सूकर रूप जय जग
दीश हरे ३ नव कर कमल वरे नख अद्भुत शृंग दलि
त हिरण्य कशिपु तनु भृंगे केशव धृत नर हरि
रूप जय जगदीश हरे ॥४॥ छल यसि विक्र

रोतर मत्र मेय रचने राचार्य गोवर्द्धन सर्द्धी कोपिन

विक्रमः क्रमतिधरो योयीक विल्लापतिः॥ प्रष्ठ

ही रामदेवशाख। नाल। । प्रलय प्रयोगिज

ले धनवानसि वेदे विद्वन विद्वि च विद्य मत्वेदे

केशव धनमीन शरीर जय जगदीश हरे २ शिशिर

नि विपुल तरे नव निष्टनि एष्टे धरणि धरणा किरण

रा॰ दे॰
गी॰

णीये । केशव धृत रघुपति रूप जय जगदीश हरे ७
वहसि वपुषि विशदे वसने जलदाभे । हल हति
भीति मिलित यमुनाभे । केशव धृत हलधर रूप
जय जगदीश हरे ८ निंदसि यज्ञविधेरहह श्रुतिजा
ते । सदय हृदय दर्शित पशुघाते । केशव धृत बु
ध शरीर जय जगदीश हरे ९ म्लेच्छनिवहनिधने

३

मणो वलि मडन वामन पदनख नीर जनित जन
पावन केशव धृत वामन मन रूप जय जग दीशहर
दे ५ क्षत्रिय रुधिर मये जग दप गत पापे। स्नाप
यसि पयसि शमित भवतापे। केशव धृत भृगु
पति रूप जय जगदीशहरे ६ विनयसि दिक्कर
णो दिगपति कमनीये। दशमाव मौलि वलि रम

रा॰ दे॰
गी॰

जयते हले कलयते कारुण्य मानन्दते । म्लेच्छान्क्ष
र्कयते दशा कृति कृते कृष्णाय तस्मै नमः १२ प्रष्ट
पदी ॥ श्रित कमला कुच मंडल धृत कुंडल । कलि
त ललित वनमाल जय जय देव हरे १ दिनमणि
मंडल मंडन भव खंडन मुनि जन मान सहंस जय
जय देव हरे २ कालिय विषधर गंजन जन रंजन

कलयसिकरवाले। एकेन मिव किमपि कराले
केशव धृत कल्कि शरीर जय जगदीशहरे १० श्रीज
यदेव कवे रिद मदिन महारे। एण मखवदं श्रभदे
भवमारे। केशव धृत दश विध रूप जय जगदीशहर
रे ११ वेदा नुद्धरते जगन्निवहते भूगोल मुद्विभ्रते दै
त्यं दारयते वलिं छलयते क्षत्रक्षयं कुर्वते। पौलस्त्य

रा॰ दे॰
गी॰

धर सेदर धन मेदर श्रीमख चंद्र चकोर। जय जयदेव
हरे॰ श्रीजयदेव कवेरिदं कुरुते मुदं मंगल मुज्ज
ल गीते। जय जयदेव हरे ८ अष्टपदी। श्लोक। रा सो
ल्लास भरेण विभ्रम भरेणा भीरु वाम भ्रुवा मभ्यर्णे
परिरभ्य निर्भर मुरः प्रेम्णा यया राधया। साध्वी मद्दन
धाम मय मिति व्याहृत्य गीत स्तुति व्याजाद्रुद्ध चेतित

यउ जल कमल दिनेश। जय जय देव हरे २ मधु
सुर नरक विनाशन गरुडासन। सुर कुल केलि
निदान जय जय देव हरे ४ अमल कमल दललोच
न भवमोचन। त्रिभुवन भवन निधान जय जय देव
हरे ५ जनक सुता कृत भूषण जित दूषण समर
शमित दशकंठ। जय जय देव हरे ६ अभिनव जल

गा॰ हे
गी॰

रिव मूर्तिमाति वमथौ मथ्यो हरिः क्रीडति प तिमो
मेग वराङ्गेग कवल क्लेशादिवेशाचले प्रालेयलव
नेक्षयान सरति श्रीखंड शैलानिलः। किंवस्त्रिपथर
मालमौलिमकला मालोक्य हर्षोदया। उन्मीलनिक्ष
हूः क्ष हूरिति कलो नानाः पिकानोगिरः॥ ४। ग्रष्ट
पदी॥ चंदन चर्चित नील कलेवर पीत वसन।

स्मित मनोहारी हरिः पातकः अनेक नारी परिरंभसे
भ्रम स्फुरन्मनोहारि विलास लालसं सुगारि सुमा
रुपदर्शी यन्यसौ सावी समते पनराह राधिका ।
विशेषा मनुरंजनेन जनयन्नानंद मिंदीवर श्रीणो
श्यामलकोमलै रुपनयन्नेत्रै रनंगोत्सवे । स्वच्छंदं
व्रजसुंदरी भिरभिनः प्रसंगमालिंगितः शृंगारः स

रा॰दे॰
गी॰

के मधु सूदन वदन सरोजे ३ कपि कपोल जले मिलि
लालपिते किमपि श्रुति मूले । चारु उरोज नितंब
वती दयिते पुलके रन कूले ४ केलिकला कुतुकेन
च काचिद मंथमना जलकूले । मंजुल वंजुल कुंज
गते विच कर्ष करेण दुकूले । करतल ताल तरल
वलया वलि कलित कल स्वन वंशे । रास रसे सह

वनमाली। केलिचलन्मणिकुंडल मंडितगंड यु
गस्मितशाली २ हरिरिह मुग्धवधूनिकरे। विलासि
नि विलसति केलिपरे २ पीनपयोधरभारभरेण हृ
दि परिरभ्य सरागं। गोपवधूरनुगायति काचिदुदं
चितपंचमरागं २ कापि विलासविलोलविलोच
ननखेलनजनितमनोजं। ध्यायति मुग्धवधूरधि

रा॰ दे॰
गी॰

हरौ विगलित निजोत्कर्षा दीषी वशेन गतागतः
क्वचिदपि लता कुंजे गुंजन मधुव्रत मंडली मुखर
शिखरे लीना दीना प्रवाच रहः सखी ९ कंसारिरपि
संसार वासना वेध शृंखलो राधा माधाय हृदये
तत्याज व्रज सुंदरी ९१ इतस्ततस्ता मन सन्यरा
धिका मनंग बाणा व्रजविन्न मानसः कृतानुता

स्तना परा हरिणा प्रवलो प्रश सेसे ६ स्मित्यतिका
मपि जंवति कामपि रमयति कामपि रामो पश्य
ति सस्मित चारु परा मपरा मनुगच्छति वामां ७
श्री जयदेव भणित मिद मद्भुत केशव केलि रहस्यं। वृंदावन विपिने चरिते वितनोतु शुभानि
यशांसि ।८। विहरति वने राधा साधारण प्रणये

रा॰दे॰
गी॰

कुटिल कुकोण भरेण गोण पम मिनो परिभ्रमना
कुले भ्रमणोनना मद्दे हृदि संगता मतिशं स्टशं रमया
मि किं वनेन सरामिना मिह किं हृथा विलयामि ४
नन्दिविन्न मस्तूयया हृदयन्नवा कलयामि नन्न
वेस्मि कुनो गनासि नने नने नन्नयामि ५ हृषपसे प
रनो गना गान मेव किंविदथासि। किंपुरे वशा सं

एः मकलिंद नंदनी नदाल्ल जेजे निषसाद माधवः

१२॥ अष्टपदी ॥ मामिये चलिता विलोकय हृदं वधू

निचयेन । मापराधतया मयानति वारितानि भये

न २ हरि हरि इत्य दयया गतामपि कृपितेव । किं क

रिष्यति किं वदिष्यति सा चिरं विरहेण किं यदनेन जने

न किं मम किं सखेन घटहेण २ चिंतयामि तदाननं

२म २ग २२ २मि

गी॰ कूलेयंहः केलयः।।। वाग्देवता चरित

गी॰ चित्रित चित्त सभा। पद्मावती चरण चार

ण चक्रवर्ती। श्री वासुदेव रति केलि क

था समेत। मेतं करोति जयदेव कविः

प्रबंधम्।२। यदिहरि स्मरणे सरसं मनो।

यदि विलास कलासु कुतूहले। मधुर

गौंड्रपगीत गोविंद परिछेद माह। रागल

२सं २मा २ग २मा २प २म २प २म २ग

लित। ताल। (तीताला)। मेघैर्मे डर मम्बर बन

२रे २ग २मा २ग २रे २सं २मा २प २नि

भुवः प्रपामा स्त्रमाल डुमै। नैकभीरु

२सं २नि २सं २रे २नि २प २म २ग २रे २सं २सं २मा

रयं त्वमेव तदिदं राधे गृहं प्रापय। इत्थं

२प २म २प २नि २प २नि २सं २नि २प २म २ग

नंद निदेश तश्चलि तयोः प्रत्यध्व कुंज

२रे २सं २प २म २प २म २ग २रे २ग

डुमे। राधा माधव यो र्जयंति यमुना।

गी क विष्णा पतिः। धा रमणी ललित। नाल
गो । प्रलय पयोधि जले धृत वानसि वेदं।
विहित चरित्र मखेदं। केशव धृत मीन शरीर
जय जग देश हरे ।।१। क्षिति रति विपु
ल तरे तव तिष्ठति पृष्ठे धरणि धरण
किण चक्र गरिष्ठे। केशव धृत कच्छप रू

कोमल कांत पदावली। शृणु तदा जय
देव सरस्वती ।३। वाचः पल्लव यन्मया प
तियरः। संदर्भ शुद्धि गिरो। जानीते जय
देव एव शरणः श्लाघो दुरूह द्वते। शृंगा
रोत्तर सत्सेय रचने रचार्य गोवर्धन।
स्पर्धी कोपि न विश्रुतः श्रुति धरो धोयी

गी प। जय जग दीश हरे।४। क्षत्रियरुधिर मये
गो एो बलि मङ्गल वामन। पदनख नीर ज
नित जन पावन। केशव धृत वामन रूप।
जय जगदीश हरे।५। क्षत्रिय रुधिर मये
जग पद गत पापं। क्षपयसि शमित भ
वतापं। केशव धृत भृगुपति रूप। जय

प जय जगदेश हरे।२। वसति दशन शि
खरे धरणी नवलग्ना। शशिनि कलंक
कलेवनि मग्ना। केशव धृत शूकर रूप
जय जग देश हरे।३। नव कर कमल
वरे नख मद्भुत शृंगे। दलित हिरण्य क
शिपु तनु भृंगे। केशव धृत नरहरि रू

गी जय जगदीश हरे ।८। निंदसि यज्ञ विधेर
गो हह श्रुति जातं । सदय हृदय दर्शित पशु
घातम् । केशव धृत बुद्धि शरीर । जय जग
दीश हरे ।९। म्लेच्छ निवह निधने कलयसि
करवाले । धूम्र केतु मिव किमपि करालं ।
केशव धृत कल्कि शरीर । जय जगदीश

जग दीश हरे।८। विनयसि दिक्करणे दि
गपति कमनीये। दशमुख मौलि बलि
रमणीये। केशव धृत रघुपति रूप। ज
य जगदीश हरे।९। वहसि वपुषि विशदे
वसने जलदाभे। हल हति भीति मिलि
त यमुनाभे। केशव धृत हलधर रूप।

गी मातलने। म्लेछा न्मूर्छ यने दशा कृति कृते
गो कृष्णाय तुभ्यं नमः।५। रागिनी। ललित।
ताल । श्रित कमला कुच मंडल धृत कुं
डल कलित ललित वनमाल। जय जय दे
व हरे।।। ध्रु०। दिन मणि मंडल भव खंडन
मुनिजन मानस हंस। जय जय देव हरे। २।

5 ५

हरे।१।श्री जय देव कवेरिद मुदित मुदारं।
शृणु सुखदं शुभदं भवसारं। केशव धृत
दशविद रूप। जय जगदीश हरे।१। वेदा
नुद्धरते जगति वहते भूगोल मुद्विभ्रते।
दैत्यं दारयते बलिं छलयते क्षत्रक्षयं कुर्व
ते। पौलस्त्यं जयते हलं कलयते कारुण्य

गी क सुता हृत भूषण जित हृषण समर शमि
शो न दशकंठ। जय जय देव हरे।६। अभिनव जल
धर सुंदर धृत मंदिर श्रीमुख चंद्र चकोर। जय
जय देव हरे।७। श्री जयदेव कवेरिदं कुरुते मु
दं मंगल मुज्वल गीते। जय जय देव हरे।८।
रासोल्लास भरेण विभ्रम भृता माभीर वाम

कालिय विषधर गंजन जन रंजन यदु
कुल कमल दिनेश। जय जय देव हरे। ३।
मधु मुर नरक विनाशन गरुड़ा सन सुर कु
ल केलि निदान। जय जय देव हरे। ४। अम
ल कमल दल लोचन भव मोचन त्रिभुवन
भुवन निधान। जय जय देव हरे। ५। जन

गी नगाहू राधिका।९। विशेषा मनरंजनेन जनय
गो त्रानेद मिंदीवर। श्रेणी श्यामल कोमलै रुपन
य त्रङ्गै रनंगोत्सवे। स्वच्छन्दे व्रज सुंदरी भिरनः
प्रत्यंग मालिंगितः। शृंगारः मूर्त्ति मा
निवमयौ सुखो हरिः क्रीडति।१०। निमोत्से
ग वसद्भुगंग कवल क्लेशादि वेशा चलं। प्राले

श्रुवा। मम्मथौ पतिरमा निर्भर स्वरः प्रेमांय
या राधया। साधु त्वद्वचनं सुधा मय मिति व्या
हृत्य गीत स्तुति। व्याजाडम्बट वेविन सिन
मनो हारी हरिः पातवः।४। अनेक नारी पति
रेभ संभ्रम स्फुरन्मनो हारि विलास लालसः।
मुरारि मारा डुप दर्श यन्मौ सखी समक्षे प

गी चलन्मणि कुंडल मंडित गंड युगस्मित शो
गो ली।।१।। हरि रिह मुग्ध वधू निकरे विलासिनि
विलसति केलि परे।।१।। ध्रु। पीन पयो धर
भारभरेण हरिं परिरभ्य सुरागे। गोप वधू
रनु गायति काचिदहो चित पंचमरागे।।२।।
कपि विलास विलोल विलोचन खेलन

य भुवने छयान्त मरति श्रीवेङ्कटशैला नि
लः। किंच स्निग्ध रसाल मौलि मुकुला
मालोक्य हर्षोदया। उन्मीलंति कुहू कुहू
रिति कलो नानाः पिकानां गिरः।९। रा
गिनी ललित। नाल । चंदन चर्चित नी
ल कलेवर पीतवसन वनमाली। केलि

गी विच कर्ष करेण डकूले।५। करतल ताल
गो तरल वलया वलि कलित कल स्वन वंशो।
रास रसे सह नृत्य परा हरिणा युवती प्रश
शंसे।६। श्लिष्यति कामपि चुंबति कामपि
रमयति कामपि रामां। पश्यति सस्मित चा
रु परा मपरा मनुगच्छति वाम।७। श्री जय

जनित मनोजं । ध्यायति मुग्ध वधू रधिकं म
धुसूदन वदन सरोजम् ।३। कापि कपोल
तले मिलिताल पिबेकिमपि श्रुति मूले ।
चारु चुचुंबति नेत्रवती दयिते पुलकै रनुकू
ले ।४। केलि कला कुतुकेन च काचिदमु
यमुना जल कूले । मंजुल वंजुल कुंज गते

रा
गो

प्रवाच रहः सखी ।९ कंसारि रपि संसार वास
ना बेष संवेलो राधामाधाय हृदये तमाज व्रज
सुंदरीः ।१०। इतस्ततस्ता मनु सस्य राधिका मा
नेग वाण व्रज विद्ध मानसः । कृतान्त तापः
सकलिंद नंदनी तटान्न कुंजे निषसाद माधवः
।१२। रागिनी ललित । ताल । मामियं च

10

देव भणित मिद मद्भुत केशव केलि रहस्य
म्। वृंदावन विपिने चरितं वितनोत शुभा
नि यशस्यम्।२८। विहरति वनेराधया माधा
रण प्रणये हरौ विगलित निजोत्कर्षा दीर्घा
वशेन गता मनः क्वचिदपि लता कुंजे गुंज
न्मधुव्रत मंडली मुखर शिखरे लीना दीना

गी
गो

शोणपद्म मिवो परि भ्रमता कुले भ्रमणो
न ।३। तामहं हृदि संगता मनिशं भृशं र
मयामि। किंवनेन सारा मितामिह किं ह
या विलयामि।४। नत्विविन्न मस्त्ययया ह
दयेनवा कलयामि। नत्र वेम्मि कुतोगता
सि नतेनतेनुनयामि।५। हृष्पसे पुरतो

लिता विलोक्य हृतं वयं निचयेन सा सापराध
तया मयान निवारिता निभयेन ।।। हरि हरि
हता दयतया गता सा कुपितेन । ध्रु० । किं क
रिष्यति किंवदिष्यति सा चिरं विरहेण । किंय
नेन जनेन किं मम किं सखेन गृहेण । २ ।
चिंतयामि तदाननं कुटिल भ्रुकोप भरेण ।

गी
गो

ग्रौमा ऊरु चूत सायक मसु मा चाप मारो प
य। क्रीडा निर्जित विश्व मूर्जित जना घातेन
किं पौरुषं। तस्यापव मृगी दृशो मनसिज
श्रेवल्कटाक्षा शुग। श्रेणी जर्जरिते मना
गपि मनो नाद्यापि संधक्षते।।१३।। हृदिविला
शना हारो नायं भुजंगमनायकः ऊवलय

गता रात मेव कस्विदददासि। किम्पुरे व
शमेश्वमे परिरंभणं नददासि। क्षमता
मपरं कदापि नवे हशं नकरोमि। देहि
सुंदरि दर्शनं मम मन्मथेन हुनोमि। वर्णि
तं जयदेव केन हरेरिदं प्रवणेन। किंहु वि
ल्व समुद्र संभव रोहिनी रमणेन।८। पा

गी व विरहे बनमाली । ध्रु० । दहति शिशिर
गो मयूरेव रमण अनु करोति । पतति मदन
विशिखे विलपति विकल तरोति । २ । घन
ति मधुप समूहे श्रवण मपि ददाति । मन
सि बलित विरहे निशिरुज मुपयाति । ३ ।
वसति विपिन विताने त्यजति बलित धा

13.

दल श्रेणी कंटे न सा गरल युतिः मलयज
रजो नेदं भस्म प्रिया रहिते मयि प्रहरन हृ
दयं नेग क्रथा किमु यावसि । २४ रागि
नी ललित । नाल । वहति मलय समीरे
मदन मुप निधाय । स्फुटति कुसुम निकरे
विरहि हृदय दलनाय ।।। सखि सीदति न

गी
गो

जपन्नपि नवै वालाप मंत्रावली । भूयस्तत्क
च कैभ निर्भरपरी रेभाम्हृते वोक्षति ।।५।। वि
किरति मुहुः स्वासा नाथाः पुरो मुहुरी क्ष
ते । प्रविशति मुहुः कुंजे गुंजन्मुहुर्व
हुतामयति । रचयति मुहुः शय्यामर्या
ऊले मुहुरीक्षते । मदन कदन क्लान्तः

16

1·4

म। लटन्ति धरणि शयने बद्ध विलपन्ति नव
नाम।४। भणन्ति क विजय देवे विरहि विल
सितेन। मनसिरमस विभवे हरि हृदयन
सुकृतेन।५। पूर्वे यत्र समन्त्वया रतिपते
रामा दिताः सिद्धये। तस्मिन्नेव निकुंज मन्म
थमहा तीर्थे पुनर्मांयवः। ध्यायंस्त्वा मनिशं

गी ऊला ऊल गलद्धम्मिल्ल मुल्लासिनं। भ्रूवली
गो कमली कदर्शित भुजा मूलार्द्ध दृष्टस्तनम्।
गोपी नानिभृत मिरीक्ष गमिता कोद्दाम्मि
रे चिन्तय। अन्तर्मुग्ध मनो हरो हरभवः क्ले
शान्नवः केशवः।२। यमुना तीरवा नीर निकु
ञ्जे मन्दमास्थितम्। प्राह प्रेम भरोद्भ्रान्त मा

15 14

कान्ते प्रियस्तव वर्तते ।।५। तानिस्पर्शी सु
खानि तेच तरला स्निग्धा दृशो विभ्रमा । स्त
द्वक्त्रामुज सौरभंतव सखा संदीपिनी वक्ति
मा । सविंद्या परमा प्रतीति विषया संगेपि
चे न्मानसे । तस्मो लग्न समाधि हेत विरह
व्याधिः कथम्वर्तते ।।६। साकूत स्मितमा

गी कोमल मलयस मीरे। मधु कर निकर
गो करम्बित कोकिल कूजित कुंज कुटीरे।
॥ विहरति हरि रिह सरस वसन्ते नृत्यति
युवति जनेन समं सखि विरहि जनस्य दु
रन्ते। ध्रु०। उन्मद मदन मनोरथ पथिक
वधू जन जनित विलापे। अलि कुल संकुल

16

यवं राधिका सखी ।१५। वसन्ते वासन्ती कु
सुम सुकुमारै रवयवै। भ्रमन्ती कोकारे बहु
विहित कृष्णानु सारणाम्। भ्रमंदं कंदर्प ज्व
रजनित चिंता कुल नया। बलद्धाधो राधा
सरस मिद मूचे सहचरी। राग ॥ ललित।
ताल । ललित लवंगलता परि शीलन

गी टल पटल कृतस्मर तृणविलासे ।४। विग
गो लित लेजित जगदव लोकन तरुण करु
ण कृतहासे । विरहिनि कृतनन जेन मुखा
कृति केतकि दंतरिकाशे ।५। माधविका
परिमललालितेनव मालति यान सुगंधौ ।
मुनि मनसा मपि मोहन कारणि तरुणा

17

गो
गो

ण चक्रवर्ती श्रीवास देवरति केलि कथा समेत मेतं
करोति जयदेव कविः प्रबंधम् ।२। यदि हरि स्मरणे सर
स मनो यदि विलास कलासु कुतूहलं । मधुर को
मल कांत पदावली शृणु तदा जयदेव सरस्वती
।३। वाचः पल्लव यन्ति मा पतिधरः संदर्भ शुद्धिं गि
रां जानीते जयदेव एव शरणः श्लाघ्यो दुरूह द्रुतेः शृं

ॐ अथ गीतगोविंदमाह रागिनी मधुमाधवी ताल
ॐ मेघैर्मेदुरमम्बरं वनभुवः श्यामास्तमालद्रुमै
र्नक्तंभीरुरयं त्वमेव तदिमं राधे गृहं प्रापय इत्थं नं
दनिदेशतश्चलितयोः प्रत्यध्वकुंजद्रुमं राधा माध
वयो र्जयंति यमुना कूलेरहः केलयः ।।१।। वासुदेव
ना चरित विचित्र चित्त सखा पद्मावती चरण चार

गी
गो

गरिष्ठे केशव धृत कच्छप रूप जय जगदीशहरे।२।
वसति दशन शिखरे धरणी तवलग्ना शशिनि कि
ले कलंकलेवनि मग्ना केशव धृत शूकर रूप जय
जग दीशहरे।३। तवकर कमल वरे नखे मद्भुत
शृंगे। दलित हिरण्य कशिपु तनु भृंगे। केशव धृत
नरहरि रूप जय जग दीशहरे।४। छलयसि वि

गारोत्तर सत्यमेव रचनै राचार्य गोवर्द्धन स्वर्द्धीको
पिनविश्रुतः श्रुतिधरो योगी कविक्ष्मापतिः ४
रागिनी मधुमाधवी नाल । प्रलय पयोधिज
ले शुभवानसि वेदं विहित चरित्र मखेदं केशव
धृत मीन शरीर जय जग देश हरे ।।१।। दिनि रजनि वि
पुल नरे नव निशनि हृष्टे परणि परण किरण चक्र

गी
गो

एगीये केशव धृत रघु पति रूप जय जगदीशहरे।७
वहसि वपुषि विशदे वसने जलदाभे हल हति भी
ति मिलित यमुनाभे केशव धृत हलधर रूप जय
जगदीशहरे।८। निंदसि यज्ञ विधेरहह श्रुति जा
तं सदय हृदय दर्शित पशु घातम् केशव धृत
बुद्ध शरीर जय जगदीशहरे ॥ ९ ॥

क्रमणे बलि मद्भुत वामन पदनख नीर जनित
ज पावन केशव धृत वामन रूप जय जगदीश
हरे ॥ ५ ॥ क्षत्रिय रुधिर मये जग दव गत पापे
हपयसि शमित भव तापं केशव धृत भृगुप।
ति रूप जय जगदीश हरे ॥ ६ ॥ वितरसि दिक्षु र
णे दिक्पति कमनीये दशमुख मौलि बलिं रम

गी यने बलि छलयने दशदश जर्जने पौलस्त्य जय
गो ने हले कलयने कारुण्य मानस्वने म्लेच्छान्मूर्छ
यनेदशा कृति कृते कृष्णाय तुभ्यंनमः ५ रागि
नी मधुमाधवी नाल । श्रित कमला जय मेरु
ल धृत कुंडल कलित ललित वनमाल जय जय
देव हरे ।।। ध्रु० । दिनमणि मंडल भव खंडन ।

म्लेच्छ निवह निधने कलयसि करवाले धूमकेतु
मिव किमपि कराले केशव धृत कल्कि शरीर
जय जगदीशहरे।९। श्री जय देव कवेरिदमु
दितमुदारं शृणु सुखदं शुभदं भवसारं केशव
धृत दश विध रूप जय जगदीश हरे।१०। वेदा
नुद्धरते जगन्निवहते भूगोल मुद्भिभ्रते दैत्यं दार

गी
गो

।५। जनक सुता हृत भूषण जिन हृषण समर शमि
त दशकेट जय जय देव हरे ।६। अभिनव जलधर सुंद
र धृत मंदिर श्री मुख चंद्र चकोर जय जय देवहरे
।७। श्री जयदेव कवेरिदं कुरुते मुदं मंगल मुज्वल
गीते जय जय देवहरे ।८। रासोल्लास भरेण विश्व
म हृना माभीरवाम कृता मभ्यर्थो यतिरभ्य निर्भर सुखः

उन मुनि जन मानस हंस जय जय देव हरे।२।
कालिय विषधर गंजन जन रंजन यदु कुल क
मल दिनेश जय जय देव हरे।३। मधु मुर नरक
विनाशन गरुड़ा सन सुर कुल केलि निदान ज
य जय देव हरे।४ अमल कमल दल लोचन भव
मोचन त्रिभुवन भवन निधान जय जय देव हरे

गी मल कोमलै रुपनयत्रैः रनेगोत्सवं स्वच्छन्देन्न
गो सुंदरी भिरभिनः प्रमेग मालिंगितः शृंगारः सखि।
मूर्ति मानिव मथौ मुग्धो हरिः क्रीडति ।।५। निमो
सेग वसङ्गेग कवल क्रेशादि वेशावले आलेय
प्रवने कृपाव सरनि श्रीखेडशैला निलः किंच स्मि
रपरसाल मौलि मुकुला मालोक्य हर्षोदया दुन्मीलंति

प्रेमांधया राधया माधुनद्वन्द्वे स्वयामय मिति आह
स गीतस्तुति आजाडुद्दट चुंबितस्मित मनो हारी
हरिः पातवः ।९। अनेक नारी पति रेम संभ्रम स्फार
मनो हारि विलास लालसे मुरारि मारा उपद
शी यमसौ सखी समक्षे पुनराह राधिका ।१० वि
शेषामनरंजनेन नयना नंदसिंदीवर श्रेणी श्या

गी॰ गोप वधूरत्र गायति काचिदहो चित पंचमरागे ।२।
गो॰ कापि विलास विलोल विलोचन खेलन जनितम
नोजे भायतिभुग्य वधू रयिके मधुसूदन वदन स
रोजम् ।३। कापि कपोल तले मिलितालपि
तेकि मपि श्रुति मूले चारु चुचुंबनि नेववती ।
दयिते पुलकै रनुकूले ॥ ४ ॥ केलि ।

ऊहूः ऊहूरिति कलोलाना नाः पिकानांगिरः । ९ ।
रागिनी मधुमाधवीताल । चंदन चर्चित नील
कलेवर पीतवसन वनमाली केलि चलन्मणि कुं
डल मंडित गंड युग स्मित शाली ।।। हरि रिह सु
ख वय निकरे विलासिनि विलसति केलि परे ।।।।
ध्रु । पीन पयो धर भार भरेण हरिं परि रम्य सरागे

गी ति सस्मित चारु परा मपरा मत्र गच्छति वामा
गी
म् ॥ ७ ॥ श्री जय देव भणित मिद मद्भुत के
शव केलि रहस्यम् । वृंदावन विपिने चरितं वि
तनोत्त शुभानि यशस्यम् ॥ २८ ॥ विहरति
वनेराधा साधारण प्रणये हरौ विगलित ।
निजोत्कर्षा दीर्षा वशेन गतामन्यतः ।

कला कुन केनच काचिदसं यमुना जल कूले
मंजुल वंजुल कुंज गते विच कर्ष करेण दुकू
ले ॥ ५ ॥ करतल ताल तरल वलया वलि क
लित कल स्वन वंशे । रास रसे सह नृत्य परा
हरिणा युवती प्रशशंसे ।६। श्लिष्यति कामपि
चुंबति कामपि रमयति कामपि रामांपश्य

गो
गो

न्न कुंजे निषसाद माधवः ॥ ९ ॥ रागिनी मधु
माधवी नाल ॥ मामिये चलिता विलोक्य
हृते वधू निचयेन सा पराय तया मयान नि
वारिता नि भयेन ।१। हरि हरि हृता दय
तया गता सा कृपितेन ॥ ध्रु० ॥ किं करि।
ष्यति किंवदिष्यति सा चिरं विरहेण किं ।

कवि रपि लता कैजे गे जन्म धन्न मेरली भाव
र शिखरे लीना दीना भुवाच रहः सखी । ९ ।
केसाति रपि संसार वासना बेध शेखलोराधा मा
धाय हृदये नमाज ब्रज सुंदरीः ॥ ९ ॥ इतस्तत
स्ता मत्र हरय राधिका मानेग वाणा ब्रज रिव
मानसः हृतात्र तापः सकालिंदनन्दनी नटा

गी
गो

नन्नवेमि कनोगना सि नतेननतेनुनुयामि ।
५। हपपसे पुरनो गना गन मेव किम्बिदा
सि किम्बरे वश मेश्रमं परिरंभणं नददामि
क्षम्यता मपरं कदापि नवे दृशं नकरोमि
देहि सुंदरि दर्शनं मम मन्मथेन डुनोमि व
णिनं जय देव केन हरेरिदं प्रवणेन किंडु वि

धनेन जनेन किं मम किं स्वेन गृहेण ।२।
चिन्तयामि जनार्दने कुटिल कुकोप भरेण शोकेण
पद्म मिवो पति भ्रमता कुले भ्रमणेन ३। नामहं
हृदि सेगता मनिशं भ्रशो रमया मि किंवनेत्त
मारा मितामिह किं हृषा विलयामि । ४। न
निर्विन्न मस्तुयया हृदयेत्तवा कल यामि ।

गी मनायकः ऊवलय दल श्रेणी कंठेन सा गर
गो ल शुनिः मलयज रजो नेदं भस्म प्रिया रहिते
मयि प्रहरन हर श्रोत्रा नेग कुथा किम धाव
सि ॥ २४ ॥ रागिनी मधुमाधवी ताल वह।
ति मलय समीरे मदन मुप निधाय स्फुटति
कुसुम निकरे विरहि हृदय दलनाय ॥ १ ॥

त्व समुद्र संभव रोहिनी रमणेन ।८। पाणौमा
कुरु हन मायक मंत्रं मा चाप मारो पय क्रीडा ।
निर्जित विश्व मूर्छित जना यातेन किं पौरुषं न
स्मापव मृगी हशो मनसिज शेवक्करादा मृग
श्रेणी जर्जरितं मना गपि मनो नाथापि संधत्त
ने ॥ ९ ॥ हृदि विला शना हारो नाथे भुजंग

गी धरणि शयने बद्ध विलपति नव नाम ।४।भ
गो णति क विजय देवे विरहि विलसितेन मनसि
रमस विभवे हरि हृदयन सङ्कनेन ।५। सर्वे
यत्र समन्तया रति पते रामा द्विजाः सिद्ध
ये तस्मिन्नेव निकुंज मन्मथ महा तीर्थे पुनर्मी
यवः ध्यायेत्वा मनिशं जपन्नपि नवैबाला

सखि सीदति तव विरहे वनमाली ॥ ध्रु० ॥ दह
ति शिशिर मधुरेव रमणा अत्र करोति पतति मद
न विशिखे विलपति विकल तरोति ॥ २ ॥ धन
ति मधुप समूहे श्रवण मपि दहति मनसि व
लित विरहे निशिरुज मुप याति ॥ ३ ॥ वसति
विपिन विताने त्यजति वलित धाम लुटति ।

गो च तरला स्निग्धा दृशो विभ्रमा स्तद्दकाम्बुज सौर
गो मेसव स्रथा सेदीमीरो वक्रिमा सा विंबा धर माध
युरीति विषया सेगेपिचेन्मानसे तस्यो लग्न समा
धि इत विरह आधिः कथम्वर्तते ।।। साकूतस्मि
तमाकुला कुल गलद्दम्मिल मुल्लासिते भ्रूवली
कमली कदर्शित भुजा मूलार्द दृष्टस्तनम् गोपी

प मेत्रा वली भूयस्तनकच कुंभ निर्भरपरी रंभाम्र
ते वोक्षति ।१५ विकिरति मुहुः शासा नाशाः
पुरो मदुरी दाने शवि शानि मुहुः कुंजे गुंजे गुंज
त्कुहुरवहुताम्पति । रचयति मुहुः शय्यामर्या ।
ऊले मुहुरीक्षते मदन कदन क्लान्तः कान्तेपि
यस्तव वर्तते ॥ ९ ॥ तानिस्पर्श सुखानि ते

गी केदर्प ज्वर जनित चिंता कुल तया बलदायो रा
गी या सरस मिद मृदे सहचरी रागिनी मधुमाधवीना

ल ॥ ललित लवंगलता परि शीलन कोम
ल मलयज सीरे ॥ मधु कर निकर करम्बित
कोकिल कूजित कुंज कुटीरे १ ॥ विहरति
हरि रिह सरस वसन्ते नृत्य ॥

नामिमन मिरीक्ष गमिता कोदक्षिरं चिन्तय न्न
नर्मुग्ध मनो हृगो हरभवः क्लेशभवः केशवः
२॥ यमुना तीरवा नीर निकेजे मन्दमास्थितम्
प्राह प्रेम भरोद्ध भ्रान्त माधवं राधिका सखी ॥१
वसन्ते वासन्ती कुसुम सुकुमारै रव यवै र्भ्रमन्ती
कांतारे बहु विहित कृष्णाय शरणम् भ्रमेद

गी
गो

जाले। मदन महीपति कनक दंड रुचिके सर
कुसुम विकासे। मिलत शिली मुख पाटल प
टल कुजमार गण विलासे।४। विगलित लज्जि
त जगदव लोकन तरुण करुण कुलहासे वि
गलित कुलिश कुल मुखाकृति केतकि दंतति
नाशे।५। माधविका परिमल ललिते नव।

नि युवति जनेन समं सखि विरहि जनस्य दुरंते
१८ ॥ उन्मद मदन मनोरथ पथिक वधू जन ज
निन विलापे । अलि कुल संकुल कुसुम समूह नि
रा कुल बकुल कलापे ॥ २ ॥ मृगमदसौरभ रभ
स वशंवद नव दल माल तमाले युवजन हृद
य विदारण मनसिज नख रुचि किंशुक ।

गी
गो

नु गन मदन विकारं । ८ । इह विदलित मल्ली व
लि चेचमराग प्रकटित पट वासै वीक्षयन्कान ।
नानि । इहहि दहनि चेनः केनकी गेयवेणुः प्रस
र दमम बाण प्राण वक्रेयवाहः । २ । उन्मीलन्माध
गेयलग्न मधुप व्याधूतचूतोकुर कीरकोकिलका
कली कल कलै रुद्गीर्ण कर्ण ज्वराः नी ।

मालति यात सुगंधौ । मुनि मनसा मपि मोहन
कारणि नरुणा कारणा वंधौ ।६। स्फुरदति मुक्त
लता परिरंभण मुकुलित पुलकित हूते हेदाव
न विपिने पति मर पति गत यमुना जल एने ।
श्री जय देव भणिते मिद मुदयति हरि चरण ।
स्मरति सारं। सरस वसंत समय वर्णन म ।

गी
गो

यति । ३३ । रागिनी मधुमाधवी ताल ॥ त्रिद
नि चेदन मिंड करण मनविदनि खेद मधीरेया
ल निलय मिलनेन गरल मिव कलयति मलय
समीरे ।।१। माधव सा विरहे तवदीना मनसि।
ज विशिखभया दिव भावनया त्वयि लीना ।
ध्रु० । अविरतनति पतित मदन श ।

येन्ने पथिकैः कथंकथ मपि प्राना वधान क्षण

प्राप्त प्राण समा समा गम रसोल्लासै रमी वास

राः । २२ । इरा लोक स्लोक स्लव कन वकाशोक

लतिका विकाशः का मारो पवन पवनोयं अ

थयति अपिश्रामाङ्गेगी रणिन रमणीयान मुक्त

ल प्रसूति सूनानां समिव शिवरिणीयं स्रव

गी ट विधुनद देन दलन गलिना मनमथारं ।४। वि
गो लिपिवन रहसि करंगम देन भवंनम सम शार।
भूने शरण मनि मकर मथो विनि थाय करेच श
रे नव छूने ।५। प्रनि पद सिर मणि निग रनि
माधव नव चरणे पनिनाहे। नमि विमुते मणि
म पदि मपा निधि रपि करुने नवदाहम् ६

गदिव भवदव नाय विशाले । सहृदय मर्मणि
वर्म करोति सजल नलिनी दल जाले ।२। ऊ
ऊम विशिरव शरतल्प मनल्प विलास कलाक
मनीये । अत मिव नव परि रेभ सहाय करोति
ऊसम शयनीये ।३। वहति च गलित विलोच
न जलधर माननं कमल मुदारं विधु मिव विक

गी दावदहन ज्वाला कलापायने । सापिनाहिरहेण
गो हेन हरिणी हूपायने हाकथे केदर्पोपि यमायने
विरचयन् शार्दूल विक्रीडितो ।२४। रागिनी मधु
माधवी ताल ॥ स्तन विनि हिन मपि हार मु
दारं सा मनुते हृदा नत विव भारं राधिका विरहे
नव केशव । ध्रु० । शार सम हृण मपि मल

ध्यान लयेनपुरः परिकल्प्य भवेन मतीव कृपापे
विलपति हसति विषीदति वेपति रोपति तापे
७॥ श्री जयदेव भणित मिद मधिके यदि मनसा
नटनीये । हरि विरहा कुल वलव युवति सखी
वचने पटनीये ।८। आवासो विपिनायते प्रिय
सखी मालापि जालायते । तापोपि शशिनेन

गी कल्पे ५ मजति न पाणि तलेन कपोले। बाल
गो शिशान मिव माय मलोले ।६। हरि रिति हरि रि
ति जपति सकामम्। विरह विहित मरणो वति
कामम् ७ श्रीजय देव भणित मिति गीतम्।
सुख यतु केशव पद मुपनीतम् ।८। स्मरानुरा
देवन वैग हृद्य नदेग मेगा स्तन भार माध्याम्

यत्र पेके पशुपति विष मिव वपुषि सशंकम्
।२। श्वसित पवन मनुपम परिणाहं। मदन द
हन मिव दहति सदाहम्।३।दिशि दिशि किर
ति सजल कण जालम्। नयन नलिन मि
व विगलितनालं।४। नयन विषय मपि किं
शलयनल्पम्। कलयति विरहिन इताशन

गी॰ ज्वर संज्वरा जरतनो राज्यर्य मस्पाश्चिरम् चेन्न मे
गो॰ दन चेदमः कमलिनी चिंताम संतामयति किंन

हंसि रसेन शीतलतरम् त्वामेक मेव प्रियम्

प्यायेनी रहमिस्थिना कथ मपि क्षीणा क्षणे

प्राणिनि । २७ । क्षणमपि विरहः प्रमानसेहे

नयन निमीलिन विन्नया नयाने स्थसि ।

विमुक्त बाणोऽकर्षेण यथा मुपेंद्रवज्रा दपि दा

हणोऽसि । २५। सारोऽसो चलि सीत्कारोऽसि विल

पनकम्पने नाम्नि आयासदुःखमनि श्रमील

नि पतनस्थानि मूर्छायपि पलावन नतुजरेव

रनत्र जीवेत्र किन्नोरसान स्त्रवैय अनिम अस्ती

दसि नतस्त्यक्तो यथा हस्तकः ॥ २९ ॥ केदर्प

गो गोत्र मशाक्को चिर मत्र रक्को लता गहे हृष्टा न
गो चुरिते गोविंदे मनसिज मेदे सत्वीशाह ।३०।
अंगेषा भरणं करोति बहुशः पत्रेपि संचारिणि
प्राणेत्वामरिशे कने विनत्रुने शयो चिरं ध्या
यति । इत्या कल्प विकल्प तल्प रचना संकल्प
लीलाशत आशक्तापि विना त्वया वर न ।

नि कथमसौ रसाल शाखोचिर विहरेण विलो
क्य प्रमिलामो । २८ । राधा मुग्ध मुखाकार विदम
ध्य त्रैलोक्य मौलस्थली । नेपथ्यो चित नीर
त्न मवनी भारावतारोत्तकः । स्वच्छंद व्रजसु
दरी जन मन स्तोक प्रदोषस्थिरम् कंस ध्वंसन प्र
मकेन रवन स्तांदेवकी नंदनः ॥ २९ अथतो

गी
गो

सुरमपनि पिवेनम् ।१। नाथ हरे सीदति राधा
वासगृहे ।ध्रु० । त्वदभि शरण रभसेन वलंती
पतति पदानि कियंति चलंती ।२। विहित ।
विशद विष किश लय वलया । जीवति पर मिह
नव रति कलया ।३। मुहुरव लोकित मंडनली
लामयमिह रह मिति भवन शीला । ४ । त्वरि

नु नैषा निशाने घाति ।३०। विपुल पुल क
पालिः स्फीतसीत्कार मेनर्जनि तर्जिडिम।
का कुर्वाकुले याहरंती। तव कि तव विधाया
मेहकेदर्प चिंता रस जल निधि मग्ना ध्यान लग्ना
मृगाक्षी ।३३। गमिनीमधुमाधवी नाल ॥
पश्यति दिशि दिशि रहसि भवंतम तद यर म

गी
गो

किं विश्रामसि हृत्सभोगि भवने भोगीर भूमी
रुहे। आनर्यासिन हृष्टि गोचर मिनः सानन्दने
दास्यदम्। राधाया वचनन्तद धग मुखाल्लेदो
नि के गोपतो गोविंदस्य जयेति सायम तिथि :
आशास्त्य गर्भ गिरः ॥ ३ ॥ अन्तोन्तरे च कुलटा
कुल वर्त्म पात्त संजात पातक इव स्फ ।

न मुपैति नकथ मपि मारं। इति विति वहति स
खी मनुवारं।५। स्निग्धति रुंधति जलधर कल्पे ।
इति रुप गत इति तिमिर मनल्पे।६। भवति
विलेविति विगलित लज्जा विलपति रोदिति
वासक सज्जा।७। श्री जयदेव कवेरिद मुदि
ते। रसिक जनेतनु तामपि मुदितम॥ ८ ॥

गो॰ तनोति मनोः भुवः सहृदये हृदये मदन व्यथा
गो॰ म्।३९। मनो भवा वेदन वेदनानि प्रसीदते दक्षि
ण भुव वामताम् ॥ हृणे नगन प्राण विधा
य माधवे पुरोमम प्राण हरो भविष्यसि ॥
३० ॥ वाणो विधेहि मलया निल पंच वा
ण प्राणान् गृहाण नगृह मुनरा ।

टलो ब्रज श्रीः । वृंदावनो तर मदीपय देशना
लैदिक सुंदरी वदन चंदन बिंदु बिंदुः ॥ ३४ ॥ श
मरति शशाधर बिंबे विहित विलंबेच माधवे
विधुरा विरचित विविध विलापैस्ता परिलापम
चकारोच्चैः ॥ ३५ ॥ विरह पांडु मुखारि मुखो ब्र
ज युवति रयंति रयं नपि वेदनाम विधुरतीव ।

गी॰ नाथ निशि गमन मपि शीलिते। नेन मम ह
गो॰ दय मिद ममम शर कीलिते।२। मम मरण मे
व वरमति विनय केतना कि मिह विस हामि
विरहानल मचेतना।३। मा मरुह विधु रय
ति मधुर मधु यामिनी॥ कापि हरि मन भ
वति हत सहत कामिनी।४। ग्रहह।

श्रयिष्ये । किंते कृतेन भगिनि क्षमया नवेगौ
रेगानि सिंच मम शाम्यत देहदाहः ॥ २८ ॥ रा
गिनी मधुमाधवी नाल ॥ कथित समयेपि
हरि रहहन यथौ वने मम विफल मिद मम
ल रूप मपि यौवने ॥ ॥ यामि हेक मिह शर
ण सखी जन वचन वंचिता । ॥ ॥ यदत्र गम

गी॰ देव कवि भारती। वसन हृदि युवति रिव को
गो॰ मल कलावती।८। त्वामप्राप्य मयि स्वयंवर
प रो क्षीरो दनी रोदरे शोके सुंदरि काल कूटम
पिबन् मृडो मृडानी पतिः इयं पूर्व कथाभि
रम मनसो विहिण वदो चले राधाया स्तन
कोरकौ परि मिलन्नेत्रो हरिः पातवः ३५ ।

कलयामि वलयादि मणि भूषणे । हरि विरह
दहन वहनेन वहु दूषणे ।५। कुसुम सुकुमार
तनु मनतु शर लीलया । सुगपि हृदि हंनिमा
मति विषम शीलया ॥ ६ ॥ ग्रह मिह निवसा
मि न गणिन वन वेतसा । स्मरति मधुसूदनो
मा मपिन चेतसा ।७। हरि चरण शरणजय

गी
गो

को विशेक माना रमिते कयाय जनाहेने हृष्ट व
दे नदाहू । ४ । रागिनी मधुमाधवीताल । स्मर
सम रोचित विरचित वेषा गलित कुसुम दरवि
ल लित केशा । १ । कापि मधुरिपुणा विलसति
युवति रधिक गुणा । ध्रु० । हरि परि रंभण वलि
त विकारा ऊच कलशो परि तरलित हारा २

नन किं कामपि कामिनी मभिसृतः किंवाक-
लाकेलिभि र्वह्नो वेणुभि रेष कानिरिव वनाभ्यर्थी
किमुद्भ्रामति कोऽयं क्वांत मना मना गपि
पथि प्रस्थानमे वाद्यमः मंकेतो कृत मेत्र वं
जुललना कुंजेपि यत्रागतः । ४० ॥ अथा गता
माधव मंतरेण सखी मियं वीक्ष्य विषाद मू

गी
गो

गो । ९ । श्रमजल कण भर सुभग शरीरा । परि
पति तोरसि रति रण धीरा । ७ । श्री जय देव भ
णित हरि रमितम् । कलि कलुषं जनयतु परि
शमितम् । ८ । रागिनी मधुमाधवी ताल ॥
सतुदिन मदने रमणी वदने चुंबन चलिता धरे
मृग मद तिलके लिखति सपुलके मृग मिव र

विचल दलक ललिता नयनेंद्रा । नद धर पान
रभस कृत नेंद्रा ।३। चंचल कुंडल ललित कपो
ला । मुखरित रशन जघन गति लोला ॥४॥
दयति विलोकित लज्जित हसिता । बहुविध
कूजित रति रस रसिता ।५। विपुल पुलक पृ
थुवे पयोधरा । स्वसित निमीलित विकसदने

गी
गो

भूषिते ।३। जिन विम्ब शकले मरुद्भुज युगले
करजल नलिनी दले । मरकत वलये मधुक
रनिचये विनरति हिम शीतले ।४। रति गरुड
जघने विपुला पघने मनसिज कनकासने म
णिमय रशने नोरण हसने विकरति हृतवा
सने ।५। चरण विमलपे कमला निलये न

जनी करे।।१। रमते यमुना पुलिनवने विजय
मुपरि रमना।फ०। घनचय रुचिरे रचयति चिकु
रे नवलिन नवकुरुवकनवे कुरुवक कुसुमे चापला
सुखमे रति पतिमृग कानने।२। घटयति स
घने कुच युग गगने मृगमद रुचि रूषिते। म
णिमय ममलम तारक पटलम नवपद शिश

गी नृप जय देवके । ८ । रागिनी मधुमाधवी ताल
गो अनिल तरल कवलय नयनेन तपतिनमा कि
मलय शयनेन ।।। सखिया रमिता वनमा
लिना । ध्रु० । विकसित सरसि जल लिन मु
खेन । स्फुटतिन सा मनसिज विशिखेन २
अमृत मधुर तर मृदु वचनेन ज्वलित न ।

त्वमपि गणा एजिने । वहिरपि वरणे यावकभ
रणे जनयति हृदियोजिने ।९। रमयति सम्भ
शे कामपि सहशे खिल हलधर सोदरे किमफल
वमसेचिर मिह विरसे वद सखि विटपो दरे ।१०
इहरस भणने हृतनहरि गुणने मधुरिपु पदसेव
के । कलिगुण चरिते नव सुत इतिनम् कवि

गी रुज मति करुणेन ।७। श्री जयदेवभणित व
गो चनेन । प्रविशतु हरि रपि हृदय मनेन । ८ । ९ ।

नायातः सखि निर्दयो यदि शठ स्तन्नूनि ।
किं हृषये । स्वच्छंद स्वदवल्लभः सरमते किं
तत्र ते हृषणे । पश्याद्य प्रिय संगमाय दयित
स्या कृष्ण माणे गुणौ रुत्कंठार्ति भरा ।

सा मलयज पवनेन ।३। स्थल जल रुह रुचि
कर चरणेन । लटति नसा हिमकर किरणेन
४। सजल जलद समुदय रुचिरेण । दहति न
सा हृदि विरह भरेण ।५। कनक निकष रुचि
शुचि वसनेन । शशिनिन सा परिजन हसितेन
।६। सकल भुवन जनवर तरुणेन वहति न सा

गी
गो

श्रु॰। प्रथम समागम लज्जितया पटु चाटु
शतै रतु कूले। मृदु मधुरस्मित भाषितया
शिथिली कृत जघन दुकूले।२। किसलय
शयन निवेशितया चिर मुरसि ममैव वशाया
ने कृतपरि रंभण चुंबनया परिरभ्य कृताधर
पाने।३। अलस निमीलित लोचनया पुलकाव

दिव स्फुट दिदेचेनः स्वयं यास्यति।४२ रागि
नी मधुमाधवीलाल । निभृत निकुंज गृहे
गतया निशि रहसि निलीय वसंते चकित वि
लोकित सकल दिशारति रभस वशेन हसंते
।९। सखि हे केशि मदन मुदारम् । रमय मया
सह मदन मनोरथ भावितया सविकारं ।

गी
गो

कच ग्रह चंचन दाने ।६। रति सुख समय सया
लसया दर मुकलित वदन सरोजे निसह निप
तित तनुलतया मधुसूदन मुदित मनोजे ७ श्री
जय देव भणित मिदमति शय मधु रिपु निधुवन
शीले । सुखमुक्तेठित राधिकया कथितवित नोज
सलीले ८ हृष्टि आकुल गोकुला वनवशा दुहुन्यगो

लि ललित कपोले। श्रमजल शकल कलेव
र यावर मदन मदारिति लोले। कोकिल कल
रव कूजितपाजित मनमिज नेत्र विचारे श्रुष
ऊस्मा ऊल ऊंजलया नरव लिखित चनस्तन
भारे।५। चरन रणित मणिनूपुरया परि हरि
न स्मरन विनानं। मुखर विशृंखल मेखलया स

गी॰ यो। ४४ रागिनी मधुमाधवीताल । रजनि ज
गी॰ नित गुरु जागर राग कषायित मलमनिमेषेव
हनि नयन मत्त राग मिवस्फुट मुदित रसाभिनि
वेशो ।।। याहि माधव याहि केशव मावदकैत
व वादे ना मत्त मर सरसीरुह लोचन या नवह
रनि विषादम् । झ॰ । कज्जल मलिन ।

वर्द्धने विश्रदलव स्तेदरीमि रपिका नेदाश्चिरेंद्रे
वितः दर्पेणैव नदर्पिना धरनटी सिंहर मुद्रो
किनो वाद्यगौ पतनो स्तनो नभवतः श्रेयोमि
कैमहिषः ४२ अथ कथमपि यामिनी विनी
यस्मर शर जर्जरितापि सा प्रभाते । अननय वच
नम्ब देन मथे प्रणत मपि प्रिय माह साभ्यसू

गी॰ यत्तीव वहि मंदन द्रुम नव किसलय परि कारे
गो॰ ।४। दशान पदेम दयर गत ममम जनयति चे
नसि खेदे । कथयति कथ मय नापि मया सह
नव वसुधेन दमेदे ।५। वहि रिवमलिन नरंन
व हृल्ल मनोपि भविष्यति नूनम् कथ मय ।
वंचयसे जन्तु मन्तु गतम सम शरज ।

विलोचन चुंबन विरचित नीलिम रूपं। दशन
वसन मरुणे नव हृदय नखोक्ति नखो रत्नरूपं
२ वपु रत्न हरनि नवस्मर सेगर विरन विरह
न रेवं। मरकत शकल कलिन कल पौन।
लि पेरिव रतिजय लेवं ३ चरण कमल गल
दलक्त क सिक्त मिदंनव हृदय मुदारं। दर्श

गी
गो

पादालक्त कुरित मरुण घोनि हृदयं समाय श
ल्यान प्रणय भर भंगेन किलव त्वदा लोकः ।

शोका दपि किमपि लज्जो जनयति । ४५ । पद्मा
पयो यर नदी परि रेभ लग्न काश्मीर मुद्रित मुरोम
मु सूक्ष्मनस्य । अक्काश्रुराग मिव विलद नेग खेद से
दो बुहर मन्त हर यन्त शियेवः । ४६ । अङ्गोनरे मस्रण

चर हनम् ६ भ्रमति भवानवला कवलाय व
नेषु किमत्र विचित्रे। प्रथयति हननि कै ववधू
वध निर्दय बाल चरित्रे २ श्रीजय देव भणितम
ति वेविन वेविन युवति विलापं। शृणुसदा
मधुरं विदुषा विदुषालय लोपि इमापं ८। १५
नवेदं पश्यंपन्थाः प्रसर दनुरागमवहितेव प्रिया

गी॰ रेमे विधेहि विधेयताम् । ४८ । मुग्धे विधेहि म
गो॰ धि निर्दय दन्त देश दोर्बलि वेष निविडस्तन ।
पीडनानि चेडिन्न मेव मुदमेवय पंचबाण चे
डाल कोड दलना दसवः प्रयोन्न । ४९ अथ
यति हृष्या मौने नन्निश्च पेचय पेचमे नरुणि मधुला
पैस्तापे विनोदय दृष्टिभिः स्मुरिव विमुखी भावस्तव

38

शेषवशा ममी मनिः श्वास निस्सह मुखी सम
खी मुपेत्य मधीउ मीक्षित मखी वदने दिनोने
मानेद गद्गद पदं हृति विमुचाच ४७ परि हृर कृता
नेके शंकान्वया मनने वनस्तन जघनया क्रा
न्ते स्वान्ते परानव कामिनि विशति विनमोर
मो यस्मो नकोपिममांतरं प्रणयिनि परीरंभा

गी नानलोदहति मम मान संदेहि मुख कमल मधुपा
गो ने ॥ ॥ सत्यमेवासि यदि सुदति मयि कोपिनी
देहि खर नयन शरघाते । घटय भुज बंधने जन
यसदखंडने येनवा भवति सुखजाते २ त्वमसि म
मभूषणं त्वमसि ममजीवने त्वमसि ममभव जलधि
रत्नम् भवन भवतीह मपि सतत मनुरोपिनी तव

हिमंचन मेचमो स्वय मनिशय स्निग्ध मुग्धे
प्रियोय मुपस्थितः ५० रागिनी मधुमाधवी ना
ल वदसि यदि किंचिदपि दन्त रुचि कौमुदी हर
ति दरति मिर मति घोरं। सुंदर दधर सीधवे न
व वदन चंद्रमा रोचयति लोचन चकोरं। प्रिये
चारुशीले मेचमपि मानमनिदाने। सपदि मद

गी॰ कमल गंजन मम हृदय रंजने जनित रतिरं
गो॰ गपरभागे । भण महण वाणि कर वाणि चर
ण हये सरसलसद लक्तक रागे । ६ । स्मर गर
ल खेदने मम शिरसि मेदने देहि पद पल्लव मु
दारं । जलिति मयि दारुणे मदन कदनानलो हर
न तदुपाहित विकारं । इति चटुल चाटु चारु मुरवैरिणो

मम हृदय मति यत्ने २ नीलनलि नाभ मपि न

लिनव लोचने धार यति कोक नद रूपे। ऊरु

म शरवाण भावेन यदिरंजयसि कृष्ण मिदमेन

दवरूपं ४ स्फुरन्त ऊच ऊभयो रुपरि मणि मेख

री रंजयन्त नव हृदय देशं। रसन्त रसनापि नवच

न जघन मंडले घोषयन्त मन्मथ निदेशं ५ स्थल

गो॰ विशेस पुष्पा युयः ५। हशौ नव मदाल सेवदन मिंड
गो॰ संदीपनं गति जैन मनो रमा विजित रंभ मृकुदयं
रति स्तव कलावती रुचिर चित्र लेखे भ्रुवा वहो
विजय यौवनं वहसि नन्दि हथी गता ५२ भ्रमलवंथन
रथो गन रंगि नानि वाणगुणः श्रवण पालि निनिस
रेण नमा मनंग जय जंगम देवनाथा मस्त्राणि निजित

राधिका मधि वचन जाने। जयति पद्मावती र
मण जय देव कवि भारती भणित मति शाने ९
१९ वेसक सुनि वोपदेव मधुरः स्निग्धा मधुक
छविः गंडे चेटिव कान्ति नील नलिन श्री मो
चने लोचने नासालेति तिल प्रसून पदवी जे
हाम देति शिये प्रायस्तन्मात्र सेवया विजयते

गी
गो

इवेण सम्मुखनः श्रीमद्गोपालक धनिः ५५ नामथ
मन्मथ पिता रनिरस भिन्नो विषाद सम्पन्नो। अनुचि
नित हरि चरितो कलहान्तरिता मुवाच रहः सखी
५६। स्त्रिये यत्परुषा सि यत्प्रणामनि स्तधासि
यद्वा गिरि देवस्या सि यदुन्मादे विमुखत्वो या
नासि नास्मिन् प्रिये। तद्युक्तं विपरीत कारिणि

जगति किमर्पितानि । ५३ । भ्रूचापे निहतः क
टाक्ष विशिखो निर्मांस मर्म व्यथो श्यामात्मा क
टिलः करोत्तु कबरी भारोपि मारोद्यमे । मोहेनाव
द यंव तन्वि तनुना स्त्रिबाधरो रागवान् सहृदः
स्तन मंडलस्तव कथं प्राणै र्मम क्रीडति ५४ ।
मानिनी मान विध्वंस सदन्तो जयति सांप्रते स

गो
गो

ऊरुमे ऊच कलशे।२। कलिन कथिन मिद मन्त्र
पद मचिरं। मायरि हर हरि मनि शय रुचिरं
किमिनि विषीदसि रो दिषि विकला। विहसनि
युवति सभा नव विकला।४। जनयसि मन।
सि किमिनि गुरु खेदम्॥ शृणु मम वचन
मनी हिन भेदम्।५। इति रुपयाम वद

नव श्री खेड़ चर्चा विषे शीतो शुक्लयनो हिमेद्रनः
वहूः क्रीडा मुदो यानतः ५२ ॥ रागिनी मधुमाध।
वी ताल ॥ हरि रमि सरनि वहनि मृड पवने
किम पर मधिक सावे सावि भवने ॥ १ ॥ मा
धवी माकुरु मानिनि मानमये । ध्रु० । ताल
फला दपि गुरु मति सरसे । किमु विफली ।

गी मानिलो विष मिव स्वपारशिम यस्मिन् उनोति म
गो नोगते। हृदय मदये तस्मिन् नेव पुनर्बलनेव।
लात् ऊबलय दृशा स्मामः कामोनिकाम निरं
ऊशः।५८। गणयति गणयामे श्रामे श्रमा द
पिनेहने वहति च परि तोषे दोषे विमुंचति हर
तः युवतिषु वलस्मो हस्मो विहारिणि मो

नवद्र मधुरे। किमिति करोषि हृदय मति वि
धुरे। ६। सजल नलिन दल शीतल शयने
हरि मव लोकय सफलय नयने। ७। श्री ज
य देव भणित मति सलिते। सुख यत्र रसि
क जने हरि चिरिते। ८। ९। श्रीराधिकाजी
के वचन रिपु रिव सखी सम्वा सोयं सखी वहि

गी रुचि मन नयेन श्रीगयिला मृगाक्षी गतवति कु
गो नवेषे केशवे कुंजशय्यां रचित रुचिर भूषो दृष्टि
गोषे प्रदोषे स्फुरति निरवसादो कापि राधोज
गा॥६॥ सा मां इच्छति वच्छति प्रिय कथां प
रोग मा लिंगनैः प्रीतिं यास्यति रेस्य ते सखि
समा गमेति चिंता कुलाः। सखी पश्यति वेपते

विना पुनरपि मनो वामे कामे करोति करोमि
किं ५८ प्रीतिवस्तन्त्र तो हरिः कवलया पीडेन
मार्द्दे रणो। राधा पीन पयोधर स्मरण हृत
क्रमेन संभेदवान्। यत्र स्विद्यति मीलति क्ष
ण मथ निश्चेष्टिपे नन्दाणगन्। कं मस्मालम
भूजिन मिति व्या मोह कोलाहलः।९०। स

गी॰ रमोमि सारदाएः ६३ आश्लेषा दन्त चुंबना दन्तनाको
गो॰ लोवादन स्तनाज प्रोद्दोथा दन्त से अमा दन्तरना रं
भा दन्त प्रीतयोः । अन्यार्थे गतयो अमान् मिलि
तयोः संभाषणैर्ज्ञानतो देपमो विरह कोन कोन
तमसि जीश विमिश्रो रसः ।९५। अद्रणो निंदि
पदे जने अवणायो स्तापिक्ष गुक्कावली मूर्द्धिरणा

पुलकयन्ता नंदति स्विद्यति प्रमुह्यति मू
र्छति स्थिरतमः पुंजे निकुंजे प्रियः ।९२। त्व
द्वामो न समे समय मधुना निर्मोश्वरस्ते गतो
गोविंदस्य मनो रथे नव समे प्राप्ते नमः सो
दतो कोकानां करुण स्वनेन सहशी दीर्घो
मदभपर्यंना तन्मगये विफले विलंबन मसौ

गी
गो

स्वेमहेमनिकषो पलनो ननोति । ९९ । रागिनीम
युमाधवी नाल विरचित चाटु वचन रचनं चरणो र
चित प्रणिपातं संप्रति मंजुलमी मनि केलि शय
न मनुयातं । मुग्धे मधु मथन मनुगत मनु सर राधि
के श्रः । घन जघन स्तन भार भरे दर मन्थर चर
ण विहारं । मुखरित मणि मंजीर मुपैहि विपेहि

म सरोज दाम ऊचयोः कस्तूरिका पत्रके।
पूर्ती नामभि मार सत्वरहृदो विषद्दः निकेजे
सविधोतन्नील निचोल चारु सदृशो प्रसंग
मालिंगते।९५। काश्मीर गौर वपुषा मभि
सारिकाणे मावद्ध रेख मभितो रुचि मेज
रीभि। पतनमाल दल नील नमं नमिश्रेन

गी
गो

सूचित हरि परिरंभे। एक मनोहर हार विमल ज
ल धार मनोज्ञ कुचे कुंभे।५। श्रुतिगत मणिवल सखी
भिरि दंतवलय रवि रति रण मज्जे। चेरि रणिन
रणाना रव डिंडिम मभि सर सरस मलज्जे ६ स
रशर सम मुखेन सखी समलेख करेण सलीले ।
चल वलय क्वणितै रव कोपय हरि मपि निज गतिशी

मराल विकारे ।२। शुक रमणीय नरेनरुणी
जन मोहन मधुरिष गावे ऊसम शगमन शास
न वेदिनि पिक निकरे भजभावे ।३। अनिल
तरल किसलय निकरेण करेण लतानि ऊ
रेबे प्रेरण मिव कर भोरु करोति गति प्रति
मुंच विलंबे ४ स्फुरित मनंग तरंग वशा दिव

गी
गो

प्रसन्नकान्ति मूर्छति स्थिरतमः पुंजे निकुंजे प्रियः

।९९। रागिनी मधु माधवी ताल । रति रावे मा

रेगत मभि सारे मदन मनो हर वेषं । नजरु नि

ने विनि गमन विलेवन मनु सरने हृदयेशं ।

धीर समीरे यमुना तीरे वसति वने वन माली

गोपी पीन पयोधर मर्दन चेचल करयुगशीली

ले ।७। श्री जय देव भणित मधुरी कृत हरस
दा सितकामे । हरि विनि हित मनसा मयि निष्ठ
त कंठ तटी मविरामे ।८।९। सामोदमुदानि व
दन्ति प्रियकथां प्रत्यंगमालिंगनैः प्रीतिंयास्य
ति रंस्यते सखिसमागमेति चिंताकुलः। स
त्वामुपतिष्ठते पुलकयन्मानंदतन्द्रि स्थिति

गी
गो

ति मिर पुंजे शीलय नील निचोले ।४। उरसिज
गरे रुपहितहारे घन इव तरल बलाके तडि दिव
पीने रति विपरीते राजसि सुकृत विपाके ।५।
विगलित वसने परिहृत रशने घटय जघन म
पि धाने । किसलय शयने पंकज नयने निधि मि
व हर्ष निधाने ।६। हरि रभि मानी रजनि रिदानी

फ्र॰। नाम समेते हृत संकेते वादयते मृदु वे
णे बहु मनुते तनुते तनु संगत पवन चलित म
पि रेणे ।२। पतति पतत्रे विचलेत पत्रे शंकित
भवदुपयाने । रचयति शयनं सचकित नय
नं पश्यति तव पन्थानं ।३। सुखर मधीरं त्यज मं
जरी रिह विहर विलोल कलोलं चल सखि कुंजं स

गी॰ त्वंती कथ मपि रहः प्राप्ता मेगै नरंग नरंगिभिः
गी॰ समवि सभगः सन्नामाश्रय त्वपैन हृतार्थीता।
म्। ६७। हारावली नरल कोचन कोविदाम मे
जीर केकण मणि घुति दीपि तस्य द्वारे निकुंज
निलयस्य हरिं निरीक्ष्य श्रीडावतीम् मध्य स
खी निजगाद राधाम्। ६८। रागिनी।

मिय मपियाति विरामे। कुरु मम वचनं सत्वर
रचनं हरय मधु रिपुकामे।७। श्री जय देव कृ
त हरि सेवे भणति परम रमणीये। प्रमुदित
हृदये हरिमपि सदये नमत सुकृत कमनीये
।८।९। समय चकितं विलोक्य तां दृशौ तिमि
र पथिपतिं कृत मुहुः स्थिला मेद पदानि चित

गी॰ पवन सुरभि शीते। विलस रति वलित ललि
गो॰ तगीते।४। विजन वट वलिनव पल्लवशने ।
विलस चिर मलय पीन जघने।५। मधुमुदित
मधुप कुल कलित रावे विलस मदन रसमभा
वे।६। मधुर नवपिकनिकरनि नद मुखरे। विल
स दशन रुचि रुचिर शिखरे।७। विहितपद्मा

मधु माधवी जाल । मंजुतर कुंजतल कलि स
दने विलस रति रभस सह सिन वदने ।१। प्रविशा
राधे माधव समीप मिह ।ध्रु। नव भवद शोक
दल शयन सारे । विलस कुच कलश तरल
हारे ।२। कुसुम चय रचित शुचि वास गेहे वि
लस कुसुम कुसुमार देहे ।३। चल मलय वन

गी॰ मामियाहिमाथा मन्नुनय मदचने चा नयेथाः
गो॰ ।इति मधु विश्वण सखी निगुक्ता स्वय मिद मे
न पुन जगादराधां ।७०। लोचितेन चिरंवहन्न
यमति श्रान्तो भृशं तापितः कंदर्पेणच पान्न
मिछति सथा संवाथ विंबाधरं । श्रस्मो कन्नाद
ले ऊरु दाण मिश्र श्रु क्षेप लक्ष्मी लवक्रीते

वती सुख समाजे। भणिति जयदेव कवि राज
राजे।८। माला नन्दपुरन्दरादिदि विषहृद्दैरमे
दा दारा दानवैर्मुकुटेन्द्र नील मणिभिः मेद
शिनेन्दीवरम्। स्वच्छन्द मकरन्द सुन्दर गल
न् मन्दा किनी मे ऽरं श्री गोविंद पदारविंदम
शुभ स्कंदाय वन्दामहे।६९। अहं मिहं निव

गी॰ दोव्र प्रसर यिव हूर्षा अनिकरः ।७३। भजन्त्या
गो॰ स्तल्यान्ते हृत कपट केहू निविहित स्मिते या
ते गेहा हहिरव हिनाली परिजने । प्रिया संप
श्पेत्या३ स्मरशर समा कृत सभगे सलज्जाया
लज्जा व्यगम दिवहरं मृगदृशः ।७४। रागि
नी मधुमाधवी नाल । राधा वदन वि।

दास इवोप सेवित पदो भोजे जनः संभ्रमः।१९
साहसाध्यस सानेद गोविंदे लोल लोचना सि
जान मंज मंजीरं प्रविवेश निवेशनम्।२०।अति
क्रमा योगे श्रवणपथ पर्यन्त गमन प्रवासे नै
वादृगो स्तरल नर नारम्पानि नयोः। तदानी
राधायाः प्रिय तम समालोक समये पयान हे

गो
गो

वित मिव यमुना जल पूरे।२। श्यामल मृदुल
कलेवर मंडल मधिगत गौर दुकूले नील न
लिन मिव पीत पराग पटल भर वलयित मू
ले।३। तरल दृगंचल चलन मनोहर वदन ज
नित रति रागे। स्फुट कमलोदर खेलित खंज
न युग मिव शरदि तडागे।४। वदन क

लोकन विकसित विविध विकार विभंगे । जल
निधिमिव विधु मंडल दर्शन तरलित तुंग तरंगे
।।। हरि मे कर मंचिर मसिल रिवित विलासे सा
द दर्शी गुरु हर्ष वश मद वदन मनंग विकासे
॥ ॥ हार ममल तरलार मुरसि दयनं पति
लेय विहरम ॥ स्फुट तर फेन कदम्ब करं

गी
गो

केलि कला भिरधीरे। मणि गण किरण समूह
समजल भूषण समग शरीरे।७। श्रीजयदेव भ
णित विभव द्विगुणी कृत भूषण भारे। प्रणम
त हृदि विनिधाय हरिं सुचिरे सुकृतोदय सारे
।८।२१। गतिवति सखी वृंदे मंद त्रया भर नि
र्भर सुरत परवशा कृतसखी तस्मिन तस्त्रापि।

मल पति शीलन मिलित मिहिर सम कुंडल।
शोभे। स्मित रुचि कुसुम सुमुख सिता धवल।
लव कृत रति लोभम्।५। शशि किरण कु
रितो दरजलधर सुंदरम कुसुम केशे निमि
षोदित विधु मंडल निर्मल मलयज तिलक
निवेशे।६। विपुल पुलक भर देह रिते रति

गी गोपाल मनुगत मनुसर राधिके । ध्रु० । कर कम
ल लेन करोमि चरण महमा गमिता सि विहरेद
ण मुप कुरु शयनो परिमा सिव नूपुर मनुग
ति शूरे । २ । वदन सुधानिधि गलित मम्रत
सिव रचय वचन मनु कूले । विरह सिवापन
यामि पयोधर रोधक मुरसि दुकूले । ३ ।

नाथराम। सरसमलसं दृष्ट्वा दृष्ट्वा मुहुर्नव पल
व प्रसर शयने निद्रिप्रादी मुवाच हरिः प्रि
यो ।७५। रागिनी मधुमाधवी ताल ॥ कि
शलय शयन तले ऊरु कामिनि चरण क
मल विनिवेशं। तव पद पल्लव वैरि पराभव
मिदमनु भवतु सुवेशं ।१। क्षण मधुना ना

गी रशना गुण मन गुण केटविनादम् । अति गुण
गो लेपिकरुत मम शमय चिरादव मादम् ।८। मा
मति विफल रुषा विफली कृत मव लोकित
मधुनेदम् । मीलति लज्जित मिवनयने नव मिर
मविरज रतिखेदम् ।९। श्री जय देव कवेरिदम
नु पद निग दित मधु रिपु मोदम् ॥ जय ।

प्रिय परिरंभण रभसवलित मिव पुलकित म
तिशयवापम्। मधुरसि कुच कलशे विनिवेशय
शोषय मनसि जनापम्।४। अधर सुधारसमुप
नय भामिनि जीवय मृतमिव दासम्। त्वयि
विनिहितमनसं विरहानल दग्ध वपुष मा
विलासम्।५। शशि मुखि मुखरय मणि

गी
गो

न कपोल पुलके सीत्कार धारा वशा इत्यका
कलकेलि काक विकसहेना शुधौ तापरं चासो
न क्रम पयोधरं भृशपरि ष्वंगान्न करंगीहशो
हर्षोन्न कर्ष विशुक्ल निः सहननो यन्यो यय।
सानन्नम ॥ ७७ ॥ दोर्भ्यां स्वेयमितः पयो यर
भरे एग पीडितः पाणिजै रविद्रोद ।

नन्न रसिक जनेषु मनोरम रति रसभाव वि
नोदम्।८।२२। प्रस्फुरः पुलको ऊरेणनिविडा
श्लेषैर्नि मेषेण चकीडा हृत विलोकिते यस्य
यापानेकयानर्मभिः। आनंदाभि गमेन म
न्मथकला युद्धेपि यस्मिन्नभू दुद्भूतः सनयोर्व
भूव सुरतः रेभाः प्रियंभावुकः ७ मीलद्दृष्टिमिल

गो॰ लिरुत्कम्पिने वक्षोन् मीलिने मदि पौरुषः रसः
गो॰ क्षीणोजनः सिध्यति । ७५ । नस्याः पाटल पाणिजो
किनमुरो निद्रा कषायेक्षणौ । निर्द्दैनो यरशोभणि
मा विललिता स्वस्तस्वजो मूर्द्दजाः । कांचीदामद
रस्रयोचल मिति प्रानमिवानैर्द्दशो रेभिः कामश
रैस्तदद्भुतमभूमतमीनः कीलिने ८० आलोलाः केश

शनैः चलाधरपुटः श्रोणी तटे नाहतः हस्ते
ना नमितः कचेषु मधु संदेन सम्मोहितः
कान्तः कामपि लक्ष्मि मापनदहो कामस्य वामा
गतिः ५८ वामोकेरलिकेलिसेकसमरणा रंभनया
साहस प्रायेकान्नजयाय किंडपति प्रारंभि यन्से
भ्रमात् निस्पंदा जघनस्थली शिथिलिता दोर्व

गी स्वाधीनभार्त्तृका ८२ इति मनसानिगदेने स्वरनो
गो ने स्वानिनोने विप्रलोगी राधा जगाद सादर मिद।

मानन्देन गोविंदम् ।८३। रागिनी मधुमाधवी
ताल झरु यडनेदन चेदन शिशिर जरेण करे
ण पयोधरे। मृगमद पत्र कमत्र मनो भव मेग
ल कलश सहोदरे। निज गाद सायड नन्दने क्री

पाश स्तरलित मलकैः स्वेदलोलौ कपोलौ ह
स्तविंबाधर श्रीः ऊर्ध्व कलश रुचा हारिता हार
यष्टिः कांची कोविङ्गताशा स्तन जघन पटं पा
णिना छाद्यः सद्यः पश्येनी सत्रपे मान्नटपि वि
ललित हृगपरेयन्मुनोनि ।८।। अथ कांते रतिश्रो
न मपि मेउन कांक्षयानिज गाद निरावाधा रथा

गी
गो

वे जिन कमले विमले परिकल्पय नर्मजन कम
लकेसुवे ।४। मृग मद रस ललिते ललिते ऊरु
तिलक मलिक रजनीकरे। विरहिन कलेक क
लेक मलानन विभ्रमित भ्रमरीकरे ।५। मम
रुचिरे चिकुरे ऊरुमानद मानसजधजचामरे।२
निगलिते ललिते ऊरुमा निशिवेदि शिवेदकुशामरे

इति हृदया नंदने । ४० । दयर चेवन लोचिनक
जल मुज्वलय प्रियलोचने अलि कुल गंजन मे
जन के रति नायक मोचने ।२। नयन कुरंग वि
का सिनि वासकरे अनि मंडले । मनसिज पा
श विलास करे शुभवेष निवेशय कुंडले । ३ ।
भ्रमर चयं रचयंत्र मुपरि रुचिरं रुचिरं ममसंमु

गी
गो

कोची मंचसजा कवरीभरं कलय वलय श्रेणी
पाणौपदे ऊरु नृपुरा विनिनि गदिनः प्रीतःपी
तो वरोपि तथा करोत्। ८४ प्रातर्नील निचोल
मच्युतमुरा सेवीत पीनांशुके राधायाश्चकिते
विलोक्यहसिति हैरं सखी मंडले ग्रीवा चेचल मंच
ले नयनयो राधाय राधानने हैरं स्मेरमुखोवुजोस्त

।६। मरमघने मम शेवर दारण वारण के
दरे। मणि रशना वसना भरणानि शुभाशय
वासय हेदरे।७। श्री जय देव वचसि जयदे।
सदये हृदये कुरुमेऽनेहरि चरण स्मरण मर
न हेन कलि कलष जरावेऽनेः।८। रचय कुच
योः पत्रे चित्रे कुरुष कपोलयो र्घटय जघने।

गो नेसस वंशोद्भव कीर्तिस्थान कृता वधान लल
गो नालदेश केदलिताः समग्र मधुरे राधा मुखे
दौ स्वयामारेको मधुसूदनस दहनदेमं कटादो
मयः।८७। ८८। रागिनी मधुमाधवीताल ॥
मेचर स्थर स्वपा मधुरध्वनि मुखरित मोहनवंशे
चलित दृगंचल मौलि कपोल विलोल वतंसे।।

जगदा नेदाय नेदात्मजः ।८५। पर्यंकी कृतमा
गनाय कफणग श्रेणी मणीनो गणे मेगोत्र प्र
तिबिंब मेवलनया विश्रहिभ प्रक्रियाम् । पा
दांभोरुह यानि वारिधि सुता मद्वाणे दिहक्षः प्र
तैः कायव्यूह मिवाचर न्नुपचिनी भूतोहरिः पा
तवः ।८६। तिर्यक् कंठ विलोल मौलि तरलो

गो॰ विपुल पुलक भुजपल्लव वलयित वल्लव युवतिस
गो॰ हस्ते। करचरणे रसि मणिगण भूषण किरण
विमिश्रित मिश्रे।४। जलद पटल चलदिंदुवि
निन्दक चंदन विडललाटे। पीन पयोधर परिस
र मर्दन निर्दय हृदय कपाटे।५। मणिमय मकर
मनोहर कुंडल मंडित गंड मुदारे। पीत वसन

गासे हरि मिह विहित विलासे। स्मरति मनो
मम कृत परिहासे। ध्रु०। चेटक चारु मयूरशि
खिटक मेउल वलयितकेशे। प्रचर पुरंदर धनु
रनु रंजित मेदुर मुदिर सुवेशे।२। गोप कदंब
नितंबवती सुरवृंबन लंबित लोभे। बंधुजीव
मधुराधर पल्लव मुल्लसित स्मित शोभम्।३।

गो॰ विलास वेशमनज्ञ भ्रूवलिमदलवी हेदोन्ना
गो॰ ति हगेतवीक्षित मति स्वेदाङ्गंडस्थले । मामु
द्दीक्ष विलजितस्मित मुखा मुग्धाननेकानने
गोविंदं व्रज सुंदरी गण हृतं पश्यामि हृष्या
मिच ८८ ग्रेनमोहन मौलिचूर्ण ननलन मंदारवि
स्वेमनः स्तवाकर्षण दृष्टि हर्षण मह्या मे ।

मनु मनि मनुज सुरा सुरवर परिवारे। विशाद
कदेव नले मिलिते कलि कलष भयेशमयेते
मामपि किंमपि तरंग दनंग हशा मनसा र
मयेते ।७। श्री जय देव भणित मति सुंदरमो
हन मधुरिपु रूपं हरि चरण स्मरणं प्रति सं प्र
ति पुण्यवता रूपम् ॥ ८ ॥ २४ ॥ हरि सुरु

गी
गो

दाः पति शोय येन स्मपियः श्रीगीत गोविंदतः
९०। साधी माधीक चिंतान भवतिभवतः शर्क
रे कर्कश सि द्राक्षे इदांतिकेत्ता ममत मतम।
सि क्षीर नीरं रसस्ते। माकंदे क्रंद कोत्ता यर
सितले गन्ध यच्छेति यावद्भावम् शृंगार सार
स्वत मय जय देवस्य विष्वगवचोसि ॥ ९१॥

३ ऊरंगीहशो हृष्यद्वानव हृयमान दिविष ड्रको
रङ्गः कोपहो धेसः केस रिपो अपो हृयन्नवो श्रे
योसि वेशीरवः ।८५। यद्गोयर्व कला स कौश
ल मनु ध्यानेच यद्वैस्लवं यत् शृंगार विवेक न
त्व मपियत् काव्येषु लीला यिते । तत्सर्वं ज
यदेव पंडित कवेः कृष्णैक ता नात्मनः साने

वि॰ रा
गी॰

भावनी चरण चारण चक्रवर्ती श्रीवासुदेव रति
केलि कथा समेत मेतं करोति जयदेव कवि॰ प्रबंधं
२। यदि हरि स्मरणे सरसं मनो यदि विलास कला
सु कुतूहले। मधुर कोमल कांत पदावली शृणु
तदा जयदेव सरस्वती २ वाच॰ पल्लव यत्समा प
तिधर॰ संदर्भ शुद्धि गिरो जानीते जयदेव एव।

अथ गीत गोविंद माह विभास रागस्य ताल गीत ॥

२प २म २ग २रे २ग २म २प २नि २प २म २ग २रे २सा

औमेवैमें डरमे बरम्बन भवः प्रणामास्त माल ड

२म २प २नि २सा २रे २ग २रे २सा २नि २प २म २ग २रे

मै नैकम्भीक रयै त्वमेव तदिमे गाये गरहै प्राप

२सा २प २म २ग २रे २ग २म २प २नि २प २म २ग २रे २ग

य। इस्य नेदनि देशात्स्थलितयोः प्रत्यध कुंज

२रे २सा २म २प २नि २सा २रे २ग २रे २सा २नि २प २म २ग

डुमे राधा माधवयो जैयेनि यमुना कूलेरहः के

२रे २सा

लयः रवाम्देवना चरित चिंतित चित सम्या प

वि-रा
गी

रणि धरणि किरण चक्र गरिष्ठे केशव धृत कच्छ
प रूप जय जगदेश हरे २ वसति दशन शिखरे
धरणी नवलग्ना शशिनि कलंक कलेवति म
ग्ना केशव धृत सूकर रूप जय जग देश हरे ३ न
व कर कमलम वरे नाख मडन शृंगे दलित हिर
ण्य कशिपु तनु भृंगे केशव धृत नर हरि रूप जय

शरणः श्लाघो उरुरु कुतः शृंगारोत्तरसम्भेय
रचनै गाचार्य गोवर्द्धन एकोऽपि विक्रमः
क्रमति यशो योषीक विक्रमपतिः ४ प्रलय प
योधि जले एत वानसिवेदं विहित वहित्र चरि
त्र मखेदं केशव एत मीन शरीर जय जगदेश
हरे २ क्षिति रति विपुल तरे तव तिष्ठति पृष्ठे य

वि॰ रा॰
गी॰

मावे मौलि वलि रमणी ये केशव धृत रघुपति
रूप जय जग दीश हरे ॥ वहसि वपुषि विशदे व
सने जलदाभे हल हति भीति मिलित यमुनाभे
केशव धृत हलधर रूप जय जगदीश हरे ८ नि
दसि यज्ञ विधेरहह श्रुतिजाते सदय हृदय द
र्शित पशुघाते केशव धृत बुद्ध शरीर जय जग

3

जगदीशहरे ४ छलयसि विक्रमणे बलिमद्भु
तवामन पदनखनीरजनिजजनपावन केशव
धृत वामन रूप जय जगदीशहरे ५ क्षत्रियरुधि
रमये जगदपगतपापे स्नपयसि शमितभव
तापे केशव धृतभृगुपति रूप जय जगदीश
हरे ६ वितरसि दिक्षु रणे दिक्पतिकमनीयदश

विश्वा
गी

मंदार यते वलि छलयते क्षत्रक्षये कुर्वते पौलस्त्य
जयते हले कलयते कारुण्य मातन्वते म्लेच्छान्क
क्ष यते दशा कृतिकृते कृष्णाय तस्मै नमः ॥ ५ ॥

विभास रागास्य ताल। । श्रित कमला कुच मंड
ल धृत कुंडल कलित ललित वनमाल जय जय देव
हरे ॥१॥ ध्रु० । दिन मणि मंडल मंडन भव खंड ।

दीशहरे ९ म्लेच्छ निवह निधने कलयसि करवा
ल। धूमकेतु मिव किमपि करालं केशव धृतक
ल्कि शरीर जय जय दीशहरे १० श्रीजय देव कवे
रिदमुदितमुदारं। शृणु सुखदं शुभदं भवसा
रं केशव धृत दश विधरूप जय जगदीशहरे ११
वेदानुद्धरते जगन्निवहते भूगोलमुद्बिभ्रते दै

वि॰रा॰
गी॰

जनकसुता कृत भूषण जिन दूषण सुखर शमित
दशकंठ जय जय देव हरे ६ अभिनव जलधर सुंद
र धृत मंदिर श्रीसुखचंद्र चकोर जय जय देव हरे
७ श्रीजयदेव कवेरिदं कुरुते मुदं मंगल मुज्ज्वल
गीते जय जय देव हरे दशसोलासभरेण विभ्रम
भृतां साभीरवाम भुजामभ्यर्थ्य परिरभ्य निर्भर

5

न मुनि जन मानस हंस जय जय देव हरे २ कालि
य विष धर गंजन जन रंजन यदु कुल कमल दि
नेश जय जय देव हरे ।३। मधु मुर नरक विना
शन गरुड़ा सन सुर कुल केलि निदान जय जय
देव हरे ।४। अमल कमल दल लोचन भव मोच
न त्रिभुवन भवन निधान जय जय देव हरे ।५।

वि॰रा॰
गी॰

णीश्यामल कोमलै रुपन यन्त्रैः रनंगोत्सवं स्व
छंदं व्रज सुंदरी भिरभितः प्रेम्णा मालिंगितः क्रीडा
रः सखि मूर्ति मानिव मयो मग्नो हरिः क्रीडति ॥१

निर्मोत्संग वसद्भुजंग कवल क्लेशादिवेशाचले
प्राले यस्त्रवने क्षयान्व सरति श्रीखंडशैलानिलः
किंचस्त्रिग्ध रसाल मौलि मुकुला मालीका हृषीद

6

सुरः प्रेमोपयो रायया साधुत्वहृदने सुधामय मि
ति वाहन्य गीतस्तुति वाजा डम्बट ध्वनितस्मित
मनो हारी हरिः पाण्डवः ९ अनेक नारी परिरंभसे
भ्रमत्कुरन्मनो हारि विलास लालसे मुरारि मारा
डुप दर्शा यन्यसौ साक्षी समक्षे पुनराह राधिका १०
विशेषा मनरंजनेन जनयन् ना नेद मिंदीवर श्री

वि॰रा॰
गी॰

गोप वधू रत्न गायति काचिदुदे चित पेचम रागम् २
कपि विलास विलोल विलोचन खेलन जनितम
नोजे ध्यायति मग्य वधू रपिके मधुसूदन वदनम
रोजम् ३ कापि कपोल तले मिलिताल पिनेकि
मपि श्रुति मूले चारु चकेवति नेव वती दयिते
पुलकै रनुकूले ४ केलि कला कुतके नव का॥

या उक्तोलेति ऊहू रिति कलो नाना-पिकानांगि

१ः १२ विभास रागस्य ताल। । चंदन चर्चित नी

ल कलेवर पीत वसन वनमाली। केलि चलन्म

णि कुंडल मंडित गंड युगस्मित शाली ९ हरि हि

मयवधू निकरे विलासिनि विलसति केलिपरे

१०।फ।पीन पयोधरभार भरेण हरिं परि रभ्य सरागं

वि॰ रा
गी॰

भणितं मिदमद्भुतं केशव केलिरहस्यं। हृदाव
न विपिने चरितं वितनोतु शुभानि यशस्यम् ८
विहरति वनेराधा सा धारणा प्रणाये हृदौ विगलि
त निजोत्कर्षा दीर्घा वशेन गतागतः। क्वचिदपि
लता कुंजे गुंजन्मधुव्रत मंडली मवर शिखरे ली
ना दीना शवाच रहः सांकी १॰ कुमारि रपि संसार

चिदम्बे यमुना जल कूले मंजुल वंजुल कुंजग
ते विच कर्षि करोणाड कूले ५ करतल ताल तरल
वलया वलि कलित कल स्वन वंशे। रास रसे स
हनृत्य परा हरिणा युवती प्रशशंसे ६ श्लिष्य
तिका मपि रमयति कामपि रामो पश्यति सस्मि
त वारु परा मपरा मनु गच्छति वामो ७ श्रीजय देव

वि-रा-
गी

नातिभयेन २ हरि हरि हता दरतया गतासा कपिने
वाक्ष्य। किंकरिष्यति किंवदिष्यति साचिरे विरहे
ण किंधनेन जनेन किंमम किंसखेन गृहेण २
चिंतयामि तदाननं कुटिल भ्रूकोप भरेण शोसाप
भ्रमिवो परिभ्रमता कुले भ्रमणेन २ नामहे हृदि मे
गता मनिशं भृशं रमयामि किंवनेन सखा मि

वासना वेष स्वेवलो राधामा धाय हृदये तन्पाज ब्र
ज सुंदरी: ९ इतस्ततस्ता मन स्तन्य राधिका मानं
ग वाणा ब्रज खिन्न मानस: कृतान्त नापः सकलि
द नंदनी तटान्त कुंजे निष साद माधव: १२ वि
भास रागास ताल। । मामिघे चलिता विलो
क्य हृतं वधू निवयेन सापराध तया मयान निवारि

वि॰ग॰
गी

जय देव केन हरेरिदं प्रवणेन किंतु विल्व समद्र
संभव रोहिणी रमणेन ।८। पाणौ मा कुरु चूतमा
यक मम्ब माचाप मारो पय क्रीडा निर्जित विश्व
मूर्छित जना चातेन किं पौरुषे तस्याप्य स्टगी
दृशो मनसिज प्रेखेक्टाक्ष मृग प्रेणी जर्जरि
ते मना गपि मनो नायापि संधत्ते ९ हृदि वि

10

ना मिह किं हृष्या विल यामि ४ तन्विविवन्नमस्त्र
यथा हृदयेतव कलयामि तत्रवेधि कृतो गतासि
नते नते नव यामि ५ हृष्णसे ६ रतो गता गतमे
व किं विदयासि किंपुरे वशसंभ्रमे परिरंभणेन
दृदासि क्षमता मपरं कदा पितवे दृशं नकरोमि
देहि सुंदरि दर्शने मम मन्मथेन दुनोमि वर्णिने

वि॰रा॰
गी॰

सीदति तव विरहे वनमाली॥ध्रु॰॥ दहति शिशि
र मयूखेवर मपि प्रत्न करोति पतति मदन विशि
खे विलपति विकल तरोति॥२॥ ध्वनति मधुपस
मूहे श्रवण मपि दधाति मनसि वलित विरहेति
शिरुज मुपयाति ३ वसति विपिन विताने न
जति वलित धाम खेदति धरणी शयने वहु वि

ला शाना झारो नायं भजेगा मनायक: कवलय द
ल श्रेणी कंठेन सागरल फतिः मलजय रजोने
दं भस्म प्रिया रहिते मयि प्रहरन हर भोम्या नेया
क्रथा किमथावसि १४ विभास रागस्य नाल
वहति मलय समीरे मदन मय निधाय स्फुटति
कुसम निकरे विरहि हृदय दल नाय १ सखि

वि॰ रा॰
गी॰

भरपरी रंभा स्तने वोक्कति ।९५। विकिरति मङ्गः
श्वासा नाशाः प्रो मङ्गरी स्तने प्रविशति मङ्गः
ऊंजे गुंजे गुंजन्मङ्गर्वङ्कनाम्पति । रचयति म
ङ्गः शय्या मर्यी ऊले मङ्गरी स्तने मदन कद
न ह्लानः कान्ते प्रियस्तव वर्तते ९५॥ ता
निमर्शी स्वानि नेव नरला स्त्रिमया हशो ।

लपति नवनाम ४ भणतिक विजय देवे विरहि
विलसितेन मनसि रभस विभवे हरि हृदयन
सहकतेन ५ हृदेयत्र समन्त्रया रतिपते यामा दि
नाः सिद्धये तस्मिन्नेव निकुंज मन्मथ महा ती
र्थे प्रनर्मायवः ध्यायेत्ता मनिशं जपन्नपि
नवै वालाप मेत्र बली भूयस्त्वलाभ क्रमभि

वि॰रा॰
गी॰

स्य गमिता कोतस्थिरे चित्तयत्नन्तमगयः मनो हृ
गो हरतवः केशत्रवः केशवः २ यमुना तीरवा
नीर निकुंजे मन्दमास्थितम् । प्राह प्रेम भरोद्
भ्रान्तमाधवं राधिका सखी २५ वसन्तो वास
न्ती कुसुम सुकुमारै रवयवै र्भ्रमन्ती कोनारे
वङ्ग विहित कृशानु शरणो ग्रमेदे कंदर्पज्व

विभ्रमा स्तद्भ्रोवृज सौरभे सच स्रथा संदी गिरो
वक्रिमा सार्विकाधर माधुरीनि विषया संगे पिचे
मानसे नस्यो लय समाधिहेन विरह आधिः क
थं वर्तते २ साहृत स्मितमा ऊला ऊल गलद
स्मिलमलासिते भ्रूवली कमलीक दर्शित भ
जा मूलार्द्ध दृष्टलनम गोपीनान्त्रि मनन्त्रिरी

वि॰रा॰
गी

नोरथ पथिक वधूजन जनित विलापे। अलि
कुल संकुल कुसुम समूह निराकुल वकुल क
लापे।२। मृग मद सौरभ रभस वशंवद नव द
ल माल तमाले युवजन हृदय विदारण मनसिज
नख रुचि किंशुक जाले। मदन महीपति कनक
दंड रुचि केसर कुसुम विकासे। मिलत शिली

र जनित चिंता जल नयां वलद्वाणं राधा स्वरस
मिद सूचे सहचरी । ललित लवंगलता परि शी
लनकोमल मलय समीरे । मधुकर निकर क
रम्बित कोकिल कूजित कुंज कुटीरे २ विहरति
हरि रिह सरस वसन्ते नृत्यति युवति जनेन समं
सखि विरहि जनस्य दुरंते ।ध्रु० । उन्मद मदन म

वि॰रा॰
गी॰

मुकुलना परिरंभण मुकुलित पुलकित चूते हे
दावन विपिने परि सर परिगत यमुना जल पू
ते श्रीजय देव भणिते मिदमुदयति हरि चरण
मदनि सारे। सरस वसंत समय वर्णन मन गान
मदन विकारे।८। दर विदलित मल्ली वलि चे
चल राग प्रकटित पटवासै वीस यन्का नना।

मव पाटल पटल कृतस्मरतूण विलासे ।४।
विगलित लज्जित जगदवलोकन तरुण करु
ण कृत हासे विरहिनि कृतनन कृत मखोकृति
केत किंदे तरिनाशे ५ माधव का परिमलललि
ते नव मालति यात सुगंधौ । मुनि मनसा मपि
मोहन कारणि तरुण कारण वेधौ ६ स्फुरदति

वि॰या॰
गी॰

डुरा लोकस्तोकस्तवकतवकाशोकलतिका
विकाशः कासारो पवन पवनोधेयथयति ग्रीष
भ्राङ्गी रणितरमणीयानमुकुल प्रसूति स्फूता
नो सरित शिखरिणीये स्रवयति ।२३। निदनि चे
दन मिंड करण मन विदनि खेद मयीरे ग्रालनि
लय मिलनेन गरल मिव कलयति मलय समीरे ।

16

नि। इह हि दहति चेतः केतकी गंधबंधः प्रसरद
समबाणः प्राणवह्नेयवाहः २१ उन्मीलन्मधुगं
धलब्धमधुपव्याधूतचूतांकुरं। क्रीडत्कोकि
लकाकलीकलकलैरुद्दीपिकर्णज्वरः नीयं
ते पथिकैः कथंकथमपि ध्यानावधानक्षण
प्राप्तप्राणसमासमागमरसोल्लासैरमी वासराः २२

विरा
गी

करोति कुसुम शयनीये ३ वहति च गलित वि
लोचन जलधर माननं कमल मदारे विधुमिव
विकट विधु तुद दंत दलन गलिता मृतधारे ४
विलिखित रदसि कुरंगम देन भवंतम मम शा
र भूतं प्रणमति मकर मधो विनिधायकरेच
शरे नवचूतं ५ प्रतिपद मिदमपि निगदति माध

माधव सा विरहे तवदीना मनसिज विशिखभ
या दिव भावनया त्वयि लीना ।ध्रु० । अविरतनिप
तित मदन शरादिव भवदव नाय विशाले । स्वह
दय मर्मणि वर्म करोति सजल नलिनी दलजा
ले २ कुसुम विशिखे शरतल्प मनल्प विलास
कला कमनीये । व्रत मिव तव परिरंभ सुखाय

वि॰रा॰
गी॰

।८। आवासो विपिनायते प्रिय सखी माला पि
जालायते । तापोपि श्वसितेन दावदहनज्वाला
कलापायते । सापि त्वद्विरहेण हन्त हरिणी रू
पायते हा कष्टं केदृशीपि यमायते विरचयन्
शार्दूल विक्रीडितो ।२४। स्तन विनि हित मपि
हार मुदारमा मनुते कृशतनु रिव भारं राधिका

18

व नव चरणो पनिताहे । नयि विमरवे मयि स पदि
स्वया तिथि रपि कुरुते नवदाहे ६ ध्यान लयेनव
रं परि कल्प भवंत मतीव उपांत विलपति रुसति
विषीदति चेवति मेवति नापे ।२। श्रीजयदेव भ
णित मिद मयिकं यदि मनसा नटनीयस । हरि
विरहा कुल वलभ युवति सखी वचने पटनीये

विरा-
गी

कलयति विहित हुताशनकल्पे ।५। मज्जति तिन
पाणि नलिन कपोले । बाल शिशान मिव मायम
लोले ६ हरि रिति हरि रिति जपति सकामे । विर
हे विहित मरणो वनिकामे ७ श्रीजयदेव भणित
मिति गीतम् । सुख यतु केशव पद मुपनीत
म् ८ । सुखा नवा दैवत वैद्य हृद्य त्वदेग सेगास्ट

विरहे तव केशव ।१५।। शरसमसरणमपि मलय
जपंकं पश्यति विषमिव वपुषि सशंकं २ श्वसित
पवन मनुपम परिणाहं । मदन दहन मिव दह
ति सदाहम् ३ दिशि दिशि किरति सजल कणजा
लम् । नयन नलिन मिव विगलित नालम् ।
॥४॥ नयन विषय मपि किशलय तल्पम् ॥

वि॰रा॰
गी॰

रसेज्वरा नरतनो राश्रय मस्पाश्चिरं चेत श्चेदन
चेद्दमः कमलिनी चिंता स्य सेनाम्पतिं किंन
ज्योतिरसेन शीतलतरे त्वामेक मेवश्रिये ध्याये
यहसिस्थिता कथमपि क्षीणाक्षणे प्राणिनि ११
२२॥ क्षणमपि विरहः प्रयान मेहे नयन निमी
लिन विचयानयाने यसिनि कथमसौरसा

२०

न मात्र साध्यो। विमल वार्यो ऊरुषेन राधा मर्पेद्

वज्रा दपि दारुणोसि। ५।२५। सारोमो चनि सो

न करोति विलप सन्कम्पते नामनि ध्यायन्मुहुम

प्रमीलति पतन्मयाति मूर्छमपि पनावन्य ननज्व

रे वरतन जीवेन्न किंतेरमान स्वैव प्रतिम प्रसी

दसि ननस्मको मया श्लोकः।१२।१२६। कंदर्पज्व

वि-रा-
गी-

न रक्तो लता वटहे दृष्टा तद्विरते गोविंदे मन सिज
मेदेसाखी प्राह । १४।१५-॥ त्रैगोषा भरणो कयेति व
ज्ञशः पत्रेपि मेवारिणि प्रामेनाम्परि शेकते वि
नवते शय्यो विरे ध्यायति । इत्या कल्प विक
ल्प तल्प रचना संकल्प लीला शत व्या शक्ता
पि विना त्वया वर तनु नैषा निशो नेष्य ।

ल शाखोचिर विरहेण विलोकय घषिता मो ९२।
२८। गथा मग्य मखोर विंद मथ्य हैलोक मौल
स्थली। नेपन्थो चिनती रत्न मवनी भारा वता
गीतकः। स्वछंद व्रज सुंदरी जन मनस्तोक प्रदो
घस्थिरं केस ध्वंसन थ्रम केन रवन त्वोदेवकी
नंदनः।१३।२९॥ ग्रथनो गीत म शाकी चिर म

विरा
गी

अ-। त्वदभि शरण रभसेन वलेनी पतति प
दानि कियेति चलेती।२। विहित विशद विष
किश लय वलया। जीवति पर मिह तव रति
कलया।३। मङ्गल लोकित मेडल लीला मधु
रिपु रह मिति भन्वन शीला।४। त्वरित मुपै
ति नकथ मभि सारे। हरि रिति वदति सखी

नि।१५।३१। विपुल पुल कपालि स्फीत सीत का
र मेनर्जनित जिडिमका ऊर्मीजले व्याहरेनी तव
कि नव विधाया मेद कंदर्प चिंता रस जलनिधि
मग्ना ध्यान लग्ना मृगाक्षी।१६।३२॥ पशुपति
दिशि दिशि रहसि भवंतम लदधर मधुर मधू
नि पिबंतम।१७। नाथहरे सीदति राधा वासगृहे

वि स
गी

न दृष्टि गोचर मितः सानन्द नन्दास्पदम् राधा
या वचनन्नाद धग मखाच्चेदोतिके गोपनो गो
विंदस्य जयेति सायम तिथिः प्राशस्त्य गर्भाः
शिरः ३ अशोकेच कलटा कल वर्ती पात सेजा
न पातक इव स्फुटलो कनश्रीः । हृदा वनो न
२ मदीपयदे मुजाले दिक सुंदरी वदन चंदन

मनवारे ५ श्लिष्यति ङ्गेवति जलधरकल्पे । हरि
रुपगत इति तिमिर मनल्पे । ६ । भवति विले
विनि विगलित लज्जा । विलपति रोदति वास
कसज्जा । ७ । श्रीजयदेवकवेरिद मुदितं । रसिक
जनैनच नामपि मुदितं । ८ । किं विश्राम्यसि हृ
ल्लभोगि भवने भोडीरभूमीरुहे । भ्रातर्यासि

वि॰ रा॰
गी॰

ण मेव वामनाम्। क्षणं जगत् प्राण विधाय माय
वं पुरो मम प्राण हरो भविष्यसि ३० वाणो विषेहि
मलया निल पेव वाण प्राणान् गृहाण नाटहे
पुनरास्त्र पिष्ये। किंते कृतांत भगिनि क्षमया
तवैवो रगानि सिंच मम शाम्यत देह दाहः।
॥ ३८ ॥ कथित समये पिहरि रहहन यथो व

विंदु विंदुः ३४ प्रसरति शशधर बिंबे विहित विले
बेव माधवे विधुरा विरचित विविध विलापे सा
परिताप्यम् चकारोच्चैः ३५ विरह पीड़ मुरारि म
खांबुज फलि रयंति रयंनपि वेदनो । विधुर नीव
न नोति मनो भवः स्वहृदये हृदये मदन व्यथाम्
॥३६॥ मनोभवा नेदन वेदनानि प्रसीदरे दत्ति

वि॰रा॰
गी॰

हरिमव भवति कृत सुकृत कामिनी । ४ । अहं
हं कलयामि वलयादि मणि भूषणं । हरिविर
हं दहन वहनेन वहं हृषणं ५ कुसुम सुकुमार
तनु मनु शर लीलया । समपि हृदि हंतिमा म
नि विषम शीलया ६ अहं मिहं निव सामिन रा
णित वन वेनसा । स्मरति मधुसूदनो मामपिन

नेमम विफल मिद ममल रूप मपि यौवनं २ या

मिहैक मिह शरणं सखी जन वचन वंचिना ।

१८॥ यदन गमनाय निशि गमन मपि शीलि

तम् २ मम मरणा मेव वरमति वितथ केतना

किं मिह विसहामि विरहानल मचेतना ।१३।

मामहह विधुरयति मधुर मधुया मिनी कापि

विरा
गी

हरिः पानवः ३५ नलिकामपि कामिनी मभिस्ट
नः किंवा कला केलिभिर्वेद्दो वेधुभि रंथकारिणि
वनाभ्यर्थी किमुद्रामयति। कोनः क्रोन मनामना
गपि पथि प्रस्थानमेवारमः संकेतो कृतमेज वे
जललना कैजेपि यत्रागतः ४ प्रथा गतो माय
व मंतरेण सखी मिये वीक्ष्य विषाद मुकाम

चेतसा ।२। हरिचरण शरण जयदेव कविभार
ती । वसतु हृदि भवति रिव कोमल कलावती
८। त्वामसाध मयि सुयेवर परोक्षीरो दक्षीरो
दरे शंके सुंदरि कालकूट मपिवन्मूढो म
डानी पतिः इत्थं सर्वं कथा भिरम मनसो विक्षि
प वक्षो वलेराधा यास्तन कोरको परिमिलन्नेत्रो

वि॰ गी॰

विचल दलक ललिता नयनवेशा । नटवर पानर
भस कृत नेशा २ चंचल कुंडल ललित कपोला॰
मरवरित रशन जघन गति लोला ४ । दयति वि
लोकित लज्जित हसिता । बहु विध कूजित
रति रस रसिता ।५। विपुल पुलक पृथुवे
पथुभंगा । स्वसित निमीलित विकसद नै

विशेक माना रमिते कयायि जनाईने दृष्टवदे नहा

ह्र।४२। विभासरागस्य नाल। । स्मर सम रो

चित विरचित वेषा गलित कुसुम दर विल लित

केशा।१।। कापि मधुरिपुणा विलसति युवति

रयिकगणा।१क्र०।। हरिपरिरंभण वलित वि

काश। कुच कलशो परि नव लित हारा ॥२॥

विरा
गी

रमने यमुना गलिनवने विजय मुरारि रथ
ना ।१६। जनवय रुचिरे रचयति चिकुरे नर
लिन नरुणानने ऊरुवक ऊरुमे चपला स
खिमं रति पति मृग कानने २ घटयति सुचने
ऊच मृग गगने मृगमद रुचि रूषिते । मणि
मर ममलम् नारक पटलम् नाव पद शिशा

गो।६। श्रमजलकणभरसुभगशरीरा। परि
पतिनोरसिरतिरणधीरा।७। श्री जयदेव
भणितं हरिरमितम्॥ कलिकलुषं जनयन
परिशमितम्॥८॥ सुभ दिन मदने रमणी
वदने ङ्गवन चलिता थरे मृग मद तिलके
लिखतिस पुलके मृग मिव रजनी करे।९।

वि॰ या॰
गी॰

णि गाण एजिते । वहिरप वरणे यावक भरणे ज
नयति हृदियोजिते ।६। रमयति सुभ्रुशं काम
पि सुहृशं खल इलयर सोदरे । किमफलमवसे
चिर मिह विरसे वदसखि विटपो दरे ।७। इह
रस भणाने कृतहरि गणाने मधुरिपु पदसेवके
कलि युग चरितम् नवसुत इरितम् क ॥

भूषिते ।३। जिन विम्ब शकले मृडभुज युगले
करतल नलिनी दले । मरकत वलये मधुकर
निचये विनरति हिम शीतले ।४। रति मृदु
जघने विपुला पघने मनसिज कनकासने म
णिमय रशने नोरण हसने विकरति कृत वास
ने ।५। चरण विमलपे कमला निलये नखम

विरा
गी

पवनेन ।३। स्थल जल रुह रुचि कर चरणेन ।
लुठति नमा हिमकर किरणेन ।४। सजल
जलद समदय रुचिरेण । दहति नमा हृदि
विरह भरेण ।५। कनकनि कष रुचि शुचि
वसनेन । श्वसिति नमा परि जन हसितेन
॥६॥ सकल भुवन जन वर तरुणेन वह

विन्दप जय देवके ।८। विभास रागस्य ता-
श्रनिल तरल कुवलय नयनेन तपजिनसा कि
मलय शयनेन ।१। सखिया रमिनावन मालि
ना ।ध्रु। विकसित सरसि जल लिन मुखेन ।
स्फुट तिन सा मनसिज विशिखेन ।२। श्रमरन
मधुर तर स्वर वचनेन ज्वलित नसा मलयज

विरा
गी

स्फुट दिदेवेन स्वयं यास्यति ॥ ४२ ॥ विभासरा
गास्य नाल। । निभृत निकेज गृहे गतया
निशि गृहसि निलीय वसंते चकित विलोकि
त सकल दिशा रति रभस वशेन हसतम् ॥
॥२॥ सखि हे केशि मदन मदारम् ॥ रमय
मया सह मदन मनोरथ भावितया सविका

तिन सारुज मति करुणेन।७। श्रीजयदेव भ
णित वचनेन। प्रविशतु हरि रपि हृदय मनेन
८।१३। नायातः सखि निर्दयो यदि शठस्तेह
नि किं हूयसे। स्वच्छेदम्बुद वल्लभः सरमते
किं नर्तने हूषणं। पश्यायं प्रिय सेगमाय दयि
त स्याकृष्य माणं गुणै रुत्कंठार्ति भरा दिव

विरा
गी

ललित कपोले । श्रमजल शकल कलेवर याव
र मदन मदादिति लोले । कोकिल कलरव कू
जित याजित मनसिज नेत्र विचारे स्मय कुसुमा
कुल कुंतलया नरव लिखित कुचस्तनभारे । ५
चरन रणित मणिनूपुरया परि हरित विना
नम ॥ मावरवि मंडल मेखलया सक

रोधि । प्रथम समागम लज्जितया पटु चाटु शा
तै रनुकूले । मृदु मधुरस्मित भाषितया शिथि
ली कृतजघन दुकूले ।२। किस लय शयन
निवेशितया चिर मुरसि ममै वशयाने । कृत
परिरंभण जृंभनया परिरभ्य कृता धरपाने ।
॥३॥ अलस निमीलित लोचनया पुलकावलि

39
1941

वि॰रा॰
गी॰

ने विभ्रद्दलव सेदरीभि रपिका नेदाच्छिरेङ्गेवितः
दर्पेणैव नदर्पिता यरनदी सिंदूर मुद्रो किनो वा
ङ्गो पत नो स्तनो न भवतः श्रेयो सिके सहिषः ४३
अथ कथ मपि यामिनी विनीय स्मर शरजर्ज
रितापि सा प्रभाते । अत नय वचनम् वदे
न मद्ये प्रणान मपि प्रिय माह साध्य सू ।

च गृह्ण ङ्गेवन दाने। ६। रति सुख समय रसाल सया
दर मञ्जुलित वदन सरोजे निस्सह निपतित नवल
तया मधुसूदन मुदित मनोजे ॥ श्री जय देव भणि
त मिदमति शय मधु रिपु त्रिभुवन शीले सावस
नंदित राधिकया कथित विहरो रसलीले।
८। दृष्टि व्याकुल गोकुला वनवशा उद्धृत गोवर्द्ध

विरा
गी

उदयन विरचित नीलिम रूपे । दशन वसन म
रुणो नव कुल नवोति नवो रत्न रूपम् ॥२॥
वपु रत्न हरति नवसुर सेगर खेवन खेरत्नन
रेखम् । मरकत शकल कलित कलधौत
लि पेरिव रति जय लेखे ॥३॥ चरण कमल
गल दलकक सिक्त मिदे नव हृदय सदा

यम्।४४। विभास रागस्य ताल। । रजनि ज
नित गुरु जागर रागा कषा यित मलसनि मेषं। व
हति नयन मन रागा मिवस्फुट मदिन रसाभिनि
वेशं।१२। याहि माधव याहि केशव मावदकै न
व वादेना मन सर सरसीरुह लोचन यातव हर
ति विषादम्।१५-॥ कजल मलिन विलोचन

वि॰ गी॰

हूने ।६। भ्रमति भवा नवला कवलाय वनेषु कि
मत्र विचित्रे । प्रथ घनि पूनतिकै ववपू वय नि
देय वाल चरित्रे ।७। श्री जय देव भणित रतिवे
चित खेडित प्रवति विलापे । स्मरा सदा मधुरे
विद्या विद्यालय नोपि इरापम् ।८।१५॥
नवेद पश्यन्त्याः प्रसरदनुरागमन्वहि विव शिया

वे। दर्शयती ववहि मेरन डुम नव किसलय प
रिवारे।४। दशन पदेभ दयरगत मम जनय
ति चेतसि खेदे। कथयति कथ मधु नापि मया
सह नव वपुरेत दभेदे।५। वहि रिव मलिनन
ने नव कृस मनोपि भविष्यति नूनम् ॥ कथ
मथ वेचयसे जन मन गतम मम शारज चर

वि॰रा॰
गी॰

ष वशामसी मनि॰श्वास निस्सह सावी सुभावी
सुपेम सबीड मीलिन सावी वदने दिनोते सानेद
गद्गद पदे हरि रिस वाव ४० परि हर कृता ते
के शेकान्वया सतते उनस्तन जघनया क्रान्ते
स्वान्ते पराव कासिनि विशति विनतो रा।
न्यो यमो नकोपि मनोनरे प्रणयिनि परी

पादालक्त कुरित मरुणा योनि हृदयं ममाय प्रत्या
न प्रणाय भर भंगेन किलव त्वदा लोकः शोका दपि
किमपि लज्जो जनयति ।४५। पद्मा पयो धर त
टी परिरंभलग्न काश्मीर मुद्रित मुद्रित मरो म
ध्यमूरस्य अज्ञान राग मिव खेल दनंगाविद खेदो
द्भूर मन्द भूरयन्त प्रियेवः ४६ अन्तोनरे मरुणरो

वि॰ रा॰
गी॰

हिमेचन मेवमो खय मतिशय स्त्रिय मपेषि
योय मपस्थित॰ ।५॰॥ विभासरागस्य ताल ।
वदसि यदि किंचिदपि दन्त रुचि कौमदी हरति
हरति मिर मति घोरं । स्फुरदधर सीधवे नव वद
न चंद्रमा रोचयति लोचन चकोरं । प्रिये चारु
शीले मंचमपि मानमनिदाने । सपदि मद नाद

रेभा रेभे वियेहि वियेयन्तो ४८ मुग्धे वियेहि म
यि निर्दय दन्त देश दोर्वलि वेय निविडस्तनपीड
नानि चेरिनमेव मदमेवय पेव वाण चेडाल कोड
दलना दसवः प्रयोत ४९ अथ यति हृया मौने
नत्विप पंचय पंचमे नरुणि मधु लापै स्नापम्
विनोदय दृष्टिभिः समधि विमुखी भावेनाव

विरा
गी

मम हृदय मति यत्ने २ नील नलिनाभ मपि नवि
नव लोचने धारयति कोक नदरूपं । कुसुम शर
बाण भावेन यदि रंजयसि कृष्ण मिद मेनदवद्
पे ४ स्मरत कुच कुंभयोरु परि मर्दिनी मंजरी रंज
यत्न नव हृदय देशे । रसन रसनापि नवघन ज
घन मंडले घोषयत्न मन्मथ निदेशे ५ स्थलक

३८

लोदहति ममम्मान मेदेहि मरव कमल मधुपाने
।झ॰। सत्यमेवासि यदि सुदति मयि कोपिनी द
हि खर नयन शरघाते । घटय भुज बंधने जनय
रद खंडने येनवा भवति सुखजाते २ त्वमसि मम
भूषणं त्वमसि मम जीवने त्वमसि मम भव जलधि
रत्ने भवतु भवतीह मपि सतत मनु रोधिनी तत्र

वि॰रा॰
गी॰

राधिका मधि वचन जाते । जयति पद्मावती रमण
जयदेव कवि भारती भणित मतिशाते । ८ । २६ ॥
वेधूक द्युति वोधवोध मधुर स्निग्धा मधूक छवि॰
गौडे चेडिच कांति नील नलिनश्री मोचने लोच
ने नासान्वेति तिलप्रसून पदवी क्रेदाभ देति
प्रिये प्रायस्त्वन्मुख सेवया विजयते विश्वेस्य

३५

मलगंजनेभम हृदयरंजने जजिनरति रंगपरभा
गो । भणमस्टणा वाणि कर वाणि चरणा हये मर
मल मद लक्कक रागो ६ स्मर यरल खिडने ममणि
रसि मंडने देहि पद पल्लव मदारं । ज्वलि मयि
दारुणो मदन कदना नलो हरत तडणा हित
विकारं ७ इति चडल चाट पटुवारु मर वैरिनो

कि-रा
गी

नि निजित जगति किमपि नाति ५३ भ्रूचापे निहि
तः कटाक्ष विशिखो निर्मीत मर्म व्यथो श्यामाना
कुटिलः करोत कवरी भारोपि मारोयमे । मोहे
नावदयेत नन्वि तनुता स्त्रिवायरो रागवान सह
तः स्तन मंडल लवकंठ प्रणौमिम क्रीडति ५४ मा
निनीमान विधेम दत्तो जयति सोप्रते । स्त्रडवेण स

40

घ्यायुयः ५१ हशौनव मदाल सेवरन मिंड सेदीप
ने गनिर्जन मनो रमा विजिन रंभ मूरु हुये रति
रूव कलावती रुचिर चित्रलेखे भ्रुवावहो विभु
य यौवने वहसि नलि स्त्रीगना ५२ भूपल्लवे
यन्नर पोगन रेगिनानि वाणगुणः श्रवणपालि
रिति स्मरेण नस्मा मनेग जय जंगम देवनाया मस्त्रा

वि॰रा॰
गी॰

श्री खेड चर्चा विषे शीतो मुक्तपनो हिमेंद्रत वहः
क्रीडा मुदो यातनः ।५२। विभास रागस्य ताल
हरि रमि मरनि वहनि मड पवने किम पर
मधिक सुखं मखि भवने ॥१॥ माधवी माज
रु मानिनि मानमये ॥ध्रु॰॥ ताल फला
दपि गुरु मनि मयमम ॥ किम विफली

मुद्रतः श्रीमद्गोपालकवितः ५५ नामथ मन्मथ
खिन्नो रतिरस भिन्नो विषाद सम्पन्नो । अनवचिंति
तहरि चरितो कलहान्तरिता भवाव रहः सांवी
५६ स्निग्धे यत्प्रकुपासि यत्प्रणमति स्तब्धासि य
द्भाषिणि द्वेषस्यासि यदुन्मुखे विमुखतां याता
सि तस्मिन्प्रिये । तद्युक्तं विपरीत कारिणि तव

वि रा
गी

किमिति करोषि हृदय मति विधुरम् ॥ ६ ॥ स
जल नलिन दल शीतल शयने हरि मव लो
कय सफलय नयने ॥ ७ ॥ श्री जय देव भणि
त मति ललितम् ॥ सुख यत्र रसिक जने हरि
चिरितम् ॥ ८ । १७ ॥ श्री राधिका जीके वच
न विष्णु शिव साखी सखा सोये साखी वहिमा

कुरुषे कच कलशे २ कनिन कथि मिद मन पद
मविरे। मापरि हर हरि मनिशय रुविरे किमि
नि मिषीदसि रोदिषि विकला। विहसनि प्रव
नि सभा नव विकला ४ जनयसि मनसि कि
मिति गुरुखेदम्। शृणु मम वचन मनी हिन
भेदम्॥ ५॥ हरि रुप यान वदन वद मधुरे

विरा
गी

वङ्क मधुरे। किमिति करोषि हृदय मति विधुरे
॥६॥ सजल नलिन दल शीतल शयने हरिम
वलोकय सफलय नयने ॥ श्री जय देव भणित
मति ललितम्। सुखयतु रसिक जने हरि चि
रितम् ॥८॥१२॥ श्री राधिका जीके वचन
रिपु रिव सखी सखा सोये सखी वहिमा

४३

43

निलो विष मिव सुधा रशिम यस्मिन् उनोति म
नोगते । हृदय भदये नस्मिन् नेव पुनर्वलते व
लात् कवलय दशाम्वाम:कामो निकाम निरे
कशः ।५८। गणायति गुणाग्रामे ग्रामे भ्रमाद
पिने हृते वहतिव परि नोषे दोषे विमेचति हूर
तः पुवतिष नलन्दसो हृस्तो विहारिणि मोन

किरा
गी

नयेन पीणयित्वा मृगाक्षी गतवति कृतवेषे के
शवे क्रेजशय्यां रचित रुचिर भूषां दृष्टिमोषे प्रदो
षे स्फुरति तिरवसादो कापि रागो जगाम ६१

सामो दृश्यति वदति प्रिय कथां पर्यंगामालि
गनैः प्रीतिं यास्यति रंस्यते सखि सखा गान्ये
ति विना कलाः ॥ सनाम् पश्यति वेपते

४४

49

विना पुनरपि मनोवामे कामे करोति करोमि किं
५९ प्रीतिं वस्तुन्न नो हरिः कवलया पीडेन सार्द्ध
रणे । राधा पीन पयोधरस्मरण कृत क्रेभेन मे
भेदवान् । यत्र स्विद्यति मीलति क्षण मथ सि
मे हिये नन्दाणनन् । केसस्या लम भूजिते जित
मिति या मोह कोलाहलाः ॥ ६ ॥ सुरुचि मन

बि॰ रा॰
गी॰

६३ ॥ आस्तेषाः दव देवना दवनखो होखा दव
स्वान्तज शोद्दोथा दवसंभ्रमा दवरता रंभा दव
प्रीतयोः ॥ अत्यार्त्य गतयोर्भ्रमान मिलितयोः
मेभाषणौ जीवतो देपत्यो विह कोन कोन न
मसि क्रीडा विमिश्रोरसः ६४ अत्यो तिंदिप
दे जने अवणायो स्तापिक्कशक्कावली मूहिशा

45 ९५

पुलकयन्ना नेदति स्विद्यति घर्मज्ञ्छति मूर्छति
स्थिरतमः पुंजे निकुंजे प्रियः ।६२। त्वद्वामेन स
मे समग्र मधुना निर्गमोत्सवस्ते मनो" गोविंदस्य म
नोरथे नवसमं प्राप्ते तमःसो रतो । कोकानो
करुणा स्वनेन सदृशी दीर्घा मदभार्य्यता । तन
मुग्धे विफले विलंबन मसौ रम्योभि सारद्वणः

विरा-
गी

पलतो तनोति ॥६६॥ विभासरागस्य ताल। १

विर चित चाटु वचन रचने चरणो रचित प्रणिपाते

मेघति मंजुलसी मति केलि शयन मनुयाते २

मुग्धे मधु मथन मनुगत मन मुर रायिके। ध्रु-

व्रत जघन स्तन भार भरे दर मन्थर चरणा विहा

रम ॥ मुखरित मणि मंजीर मुपैहि विधेहि

म सरोज दाम ऊचयो: कस्तूरिकापत्रके । धूलीना
मभि सार सवर हदो विषइ निजेजे मीव । धो
तचील निवोल वारु खटशो प्रभेग मा लिंग
ते ।६५। काश्मीर गौर वपुषा मभि सारिकाणां
मावद्रेख मभिनो रुचि मेजरीभि । एतत्तमा
ल दल नीलन मेन मिश्र नत्रेम हेम निकषो

विरा
गी

रि रंभे । एक्क मनो हर हार विमल जल धारमझे
क्रच क्रंभे ५ अधिगान मणिवल मणी भिरिदेन
व वप्प रणिरनि रणा मज्जे । चेडि रणिन रशानारव
डिंडिम मभि मर मरस मलज्जे ६ स्मर शार स्वभ म
खेन सखी मवलेअकरेण मलीले । चल वल
य क्कणिनै रव बोयय हरि मणि निज गतिशो

मराल विकारं ।२। स्फुरद रमणीय नरं नरुणीज
न मोहन मधरिपु रावं । क्रमम शागमन शास
न वंदिनि पिक निकरे भज भावं ।३। अनिल
तरल किसलय निकरेण करेण लतानि करेबे-
प्रेरण मिव कर भोरु करोति गति प्रति मुंव विले
वे ।४। स्फुरित मनंग वशा दिव सुविन हरि प

वि॰ गी॰

कृति मङ्कृति स्थिरतमः पुंजे निकुंजे प्रियः ।१५।
६६॥ विभास रागास ताल। । रति सुख सारे
गत मभि सारे मदन मनोहर वेष। नवकुरु निते वि
नि गमन विलंबन मनु सरते हृदयेशं ।२। धीर
समीरे यमुना तीरे वसति वने वन माली गोपी
पीन पयोधर मर्दन चंचल कर युग शाली ॥

ले।७। श्रीजयदेव भणित मधुरी कृत हारमुदा
सितवामे। हरि विनि हित मनसा मयि निहित
केट नटी मविरामे।८।९। कामो हृदयति वदन
नि प्रियकथो प्रत्येग मालिंगनैः प्रीतिंयाप्यतिरे
स्पेन सखि समा गत्येति चिंता कुलः। सन्वाम्य
पति वेपते प्रलकयमा नेदति स्विपति प्रत्यक्ष

विरा-
गी

शीलय नील निचोलम् ४ उरसि मयारे रुपहित
हारे घन इव तरल बलाके। नटि दिव पीते रति
विपरीते राजसि सुकृत विपाके ५ विग लित
वसने परिहृत रशने घटय जघन मपिधानम्।
किसलय शयने पंकज नयने निधि मिव हर्ष
निधानम् ६ ॥ हरि रभि मानी रजनि रिदानी

ध्रु-। नाम समेते हरन संकेते वादयते स्टडवेणे।। व
ङ्ग मन्वते नन्वते नव संगत पवन चलित मपिरेणे
२। पतति पतत्रे विचलेत पत्रे शंकित भवदुपया
ने। रचयति शयनं सचकित नयनं पश्यति तव
पन्थानं ३ सुचिर मधीरे त्यज मंजरी रिपु किव
केलि सलोकं। चलसखि कुंजं सति मिर पुंजं

वि॰रा॰
गी॰

कथ मपि रहः प्राप्ता मेनौ नरेंग नरेंगिभिः स्व
मपि सुभगः सत्वाम्यश्पन्न पैत्र कृतार्थ्य तो ।
६ हारावली तरल कांचन कांचिदाम मंजीर
केकण मणि फणि दीपितस्य हारे निकेज
निलयस्य हरेः निरीक्ष्य क्रीडा वनीम् मथ
सखी निजगाद राधाम् ॥६८॥ विभास रागस्य

मिय मपि याति विरामे । कुरु मम वचने सत्वर
चने सुरय मधुरिकामे ॥७॥ श्रीजय देव कृत ह
रि सेवे भणति परम रमणीये । प्रमुदित हृदये
हरि मपि सदये नमत सुकृत कमनीये ॥८॥
समय चकिते विमसोनी दृशौ निमिर पथि
प्रति रुत मुद्रः स्थित्वामंद पदानि वितन्वतीम्

विरा-
गी

रभि गीते । विलस रति वलित ललित गीते ।
४। विनत वङ्ग वलितव पल्लव चने विलस वि
२ मलस पीन जघने । ५। मधु मदिन मधुप
कुल कलित रावे विलस मदन रस सरस भावे
॥६॥ मधुर नवपिक निकरनि नदमखरे । वि
लस दशन रुचि रुचिर शिखरे । विहित पद्मा

नाल। । मंजतर कुंजतलकलि सदने विलस
रति रभ सह सित वदने। २। प्रविशराधे माधव
समीप मिह ।फ्र-। नव भवद शोकदल शय
न सारे । विलस कुच कलश तरलहारे। २। कु
सुम चय रचित शुचि वासगेहे । विलस कुसुम
सुकुमार देहे ॥ ३ ॥ चलमलय बन पवन सु

वि॰रा॰
गी॰

याहि राधा मनुनय महवने वानयेयाः । इति म
धुरिपुणा सखीनियुक्ता स्वय मिद मेत्य पुनर्जगा
दराधाम् ७॰ त्वोचितेन विरं वहन्नय मति श्रो
तो मदशं ता पितः कंदर्पणाव पान मिव्छति स्वया
संवाध विंवाधरं ७। अस्यो कन्त दलम् ऊरु
क्षण मिह भ्रू क्षेप लक्ष्मी लव क्षीने

52

वनी साव समाजे । भणिति जयदेव कवि राज रा
जे ।८। सांद्रा नंद चन्दन दिदि विषट् छन्दे रमे
दा दरा । दानवै मुकुटेंद्र नील मणिभिः मेद
शिनेन्दीवरम् । स्वच्छन्दम् मकरन्द सुन्दर गलन
भन्दा किनीमेडरे । श्री गोविंद पदारविंद मम्ब
भ स्कंदाय वन्दामहे ।६९। ग्रह मिह निवसा मि

विरा
गी

प्रसर यिव हर्षा श्रुतिकर।१३। भजनत्याक्त।
ल्यान्तम् कृत कपट केडूति विहिन स्मितेया
ने गेहा दहिरव हिमाली परिजने ॥ प्रिया
स्य पश्यंत्याः स्मर शर समा कृत सुभगम् स
लज्जाया लज्जा व्यगम दिवहरम् स्मगदृशः।
विभास रागस्य नाल। ॥ गथा वदन वि

53

दास इवोप सेवित पदां भोजे क्रन्दः संभ्रमः ७१
सास साधस सा नेद गोविंदे लोल लचना सिं
जान मंज मंजीरे प्रविवेश निवेशने ७२ अति क्र
म्यापोगे श्रवण पथ पर्यन्त गमन प्रवाहे नैवा
न्तो स्तरल नरनारम्यनि नयोः । तदानीराधा
याः प्रिय नम समालोक समये पपात खेदोद्र

विरा
गी

मिव यमुना जल पूरम। २। श्यामल मृदुल
कलेवर मंडल मधिगत गौर दुकूले। नील
नलिन मिवपीत परागा पटल भर वलयि
तमूले। ३। तरल दृगंचल चलन मनोहर वदन
जनित रतिरागे। स्फुट कमलोदर खेलित खे
जन युगा मिव शरदि तडागम्। ४। वदनक

लोकन विकसित विविध विकार विभंगे। ज
लनिधि मिव विधु मंडल दर्शन तरलित तेगन
रंगे ।१२। हरिमे कर संचिर मभिलषित विलासे
साद दर्शी गुरु हर्ष वशम्वद वदन मनेग विकासे
१३। हार ममल तरतार मरसि दयते परिले
ग विहरम ॥ स्फुट तर फेन कदम्ब करंबित

वि॰रा॰
गी॰

कलाभिरधीरे। मणिगणकिरणसमूहसमज्वलभूषणसुभगशरीरे।२। श्रीजयदेवभणित विभवद्विगुणीकृतभूषणभारे। प्रणमत हृदि विनिधाय हरिं सुविरं सुकृतोदयसारे १८।२२॥ गतिवलितसखीवृंदे मेदुरयामुनिर्भरसुरपरवशकृतसंफो तस्मिन्नस्त्राणि

मल परि शीलन मिलित मिहिर सम कुंडलयो
ग। स्मित रुचि कुसुम समल सिता धर पल्लव
कृत रति लोभम् १५। शशि किरण कुरिनो
दर जलधर सुंदर स कुसुम केशो निमिरो दिन
विधु मंडल निर्मल मलयज तिलक निवेश
म् ।६। विपुल पुलक भर देह रिने रतिकेलि

वि॰रा॰
गी॰

न मनसर राधिके ।ध्रु॰। कर कमलेन करोमि
चरणा महमा गमिलासि विहडे क्षणमपि ज
रु शायनो परिमा मिव नूपुर मनु गति भूरम्
।२। वदन सुधा निधि गलित ममृत मिव र
चय वचन मनुकूलम् ॥ विरह मिवापन
यामि पयोधर रोधक मुरसि दुकूलम् ॥३॥

नाथराम । सर समलसे दृष्ट्वा दृष्ट्वा मङ्गत्रेव पल्लव
प्रसर शयने निद्रिमादी मवाव हरिः श्रियाम
७५॥ विभास रागस्य ताल। । किशलय श
य शयन तले कुरु कामिनि चरण कमल विनि
वेशं । तव पदपल्लव वैरि पराभव मिद मनुभ
वतु सुवेशं ।२। क्षण मधुना नारायण मनुगा

वि॰रा॰
गी॰

गुण मन्त्र गुण कंठ विनादे । अति प्रग लेपि
करुन मम शमय चिरादव सादे ।६। मामति
विफल रुषा विफली कृत मव लोकित मधुने
दम् । मीलति लज्जित मिव नयने नव विरम
विरज रति खेदम् ।७। श्री जयदेव कवेरिद
मनपद निग दिन मधु रिपु मोदम् ॥ जय

प्रिय परिरंभण रभस वलित मिव पुलकित म
तिशयवपुः । मधुरसि ऊरुकलशं विनि वेश
य शोषय मनसिजतापं ४ अधरसुधारस मु
पनय भामिनि जीवय मनमिवदासं । नयि वि
नि हित मनसं विरहानल दग्ध वपुष मविला
सम् । ५ । शशि मुखि मुखरय मणि रशना

वि॰रा॰
गी॰

पोल पुलके सीत्कार धारा वशा द्रवत्का ऊलके
लि काऊ विकसद्देना प्रथोनाधरे श्वासोत्क
म पयोधरे भ्रशपरि घेमान ऊरेगी हशो हर्षो
त्कर्ष विमक्त निस्सहननो र्धन्यो यथन्यान
नम॥ ७७ ॥ दोर्भ्यो संयमितः पयो धरभ
रे ण पीडितः पाणिजै राविद्धो दशनैः

नन्द रसिक जनेषु मनोरम रति रसभाव विनोदे
१८।२२॥ प्रत्यङ्गः पुलको जरेण निविडा श्लेषै
र्नि मेषेणाव कीडा कृत विलोकिते यरस पाने
कथा नर्मभिः। आनेदाभि गमेन मन्मथ क
ला मुद्देपि यस्मिन्नभू दुद्भूतः सतयोर्वभूव स
रतः रेभाः प्रियेभावकः ७ मीलद्दृष्टि मिलत्क

विरा
गी

केणिने वलोकीलिने मक्ति पौरुष रस स्त्रीणां
कुतः सिध्यति २९ तस्याः पटल पाणिजो किंतस
रो निद्रा कषाये दृशौ। निर्द्वेतो यशोगिमा वि
लसिता सत्त्वसजो मर्द्दजाः। कोचीरामदरस्य
यो चल मिति प्राप्तिवाँ तेहशो रोभः कामशरै
स्तदङ्गत मभूत्यस्य मनःकीलिते ६ आलोलाके

शनैः स्तनाधरपुटः श्रोणी तटे नाहतः हस्तेनात

मितः कचेषु मधु संदेन संमोहितः कान्तः का

मपि तस्मि मापन दहो कामस्य वामा गतिः ७८

वामोके रति केलि सेकुसरणा रंभनया साहस

प्रायं कोन जयाय किं विडपरि प्रारंभि यत्नेभ्रमा

न् निस्पंदा जघनस्थली शिथिलिता दोर्वल्लिरु

वि॰ रा॰
गी॰

स्वाधीनभर्त्तृका ८२ इति मनसा निगदेते सुखतो
ते सानितोन विवोगी राधा जगाद सादरमिद
मानंदेन गोविंदे ८३ विभास रागस्य ताल ।
कुरु यदुनंदन चंदन शिशिर तरेण करेण पयो
धरे । मृग मद पत्र कमत्र मनोभव मंगल कल
श सहोदरे २ निज गदसा यदुनंदने क्रीड

शपाशस्त्रवलित मलकैः खेदलोलौ कपोलौ
दृष्टा विवाधर श्रीः ऊच कलश रुचा हारिता हा
रयष्टिः कांची कांचिङ्कता शस्त्रन जघन पटेपा
णिना । छाय सयः पश्यती सत्रपे मोनटपि वि
स्त्रलित स्तयरेयन्यनोनि ८१ ग्रथ कोनेरनिश्चो
न मपि मेडन वोक्षया निजगाद निरावाधारथा

विरा-
गी

कमले विमले परि कल्पय नर्मजन कमल
के मधु ४ मृग मद रस ललिते ऊरु तिलक
मलिक रजनी करे। विहित कलेक कलेक
मला नन विभ्रमित भ्रमशी करे ५ समरुचि
रे चिकुरे कुरुमानद मानमज धजवामरे। रतिग
लिते ललिते कुसुमानि शिखेटि शिखेडकडामरे

61

डति हृदया नंदने । ॥१॥ दयर ग्रेवन लोचित क
ज्जल मज्जलय प्रियलोचने अलिकुल गंजन
मे जनके रति नायक मोचने ।२। नयन कुरंगवि
कासिनि वासकरे श्रुतिमंडले । मनसिज पाश
विलासकरे शुभवेष निवेशय कुंडले ३ भमरच
ये रवयंत मुपरि रुचिरं रुचिरं मम मन्मथवे जित

विरा
गी

चस्रजा कवरीभरे कलय वलय श्रेणी पाणौ
पेहकरुनपुरा विनिनि गदिनःशीनःपीनोवरो
पि नथा करोत् ८४ प्रानर्नील निचोलम छन
मरा सेवीन पीनोशुके राधापाश्च किने विलो
कयहसिनि हैवंसाकीमंडलेक्रीडा चेवल मेचले
नघनयो गथाय राधानने हैवंसेरमावाउजोस्त

६। मय मचने जचने मम शेवर दारुण वारुण के
दरे। मणि रशना वसना भरणानि प्रभाशय
वासय मंदरे।७। श्रीजय देव वचसि जयदे मद
ये हृदये कुरु मंडने हरि चरण स्मरण स्टत कैत
कलि कलष ज्वर खंडने।८। रचय कुचयोः प
त्रे चित्रं कुरुष कपोलयो र्वटय जघने कांची मे

वि॰रा॰
गी॰

मस्य वेशोद्धर जीतिस्थान कृता वयान ललना
लक्षेणा केदलिता॰ समुग्य मधुरे राया मवैदौ
मया मावेवो मधुसूदनस्य दद्वक्षेमे कटाक्षो
मय॰ ६७।८८। विभा मयागमस्य नाल ।सेवर
दयर मया मधुर ध्वनि मवरित मोहन वशेव
लित हगेवल मौलि कपोल विलोल वसेने ९।

जयादा नेदाय नेदान्मजग।८५ पर्यंकी हनना
गा नाय कफणा श्रेणी मणीनो गणो सेयोनप
नि विव सेवलनया विश्रहिभ प्रक्रियो। पादोभो
हह धारिवारिधि सुता मदणो दिहत्तःशनैःका
यवहह शिवाचरत्त पवित्री भूतो हरिः पावनः
।८६। तिर्यक कंद विलोल मौलि नरलो ने

विरा
गी

ल पुलक भुज पल्लव वलयित वलय उवलि स
हसे । कर चरणो रसि मणिगण भूषण किर
ण विभिन्नत मिसे ४ जलद पटल चलदिंदु वि
निंदक चंदन बिंदुललाटे । पीन पयोधर परिस
र मर्दन निर्दय हृदय कपाटे ५ मणिमय मकर
मनोहर कुंडल मंडित गंडमदारे । पीत वसन

रासे हरि मिह विहित विलासे । स्मरति मनो म
म हृत परिहासे ।१क-। चेद्र कचारु मयूर शिखि
डक मंडल वलयित केशे । प्रवर प्रवेदर यन्नर
न रंजित मेडुर मदित सुवेशे २ गोप कदंब नितं
ब वती सुख डंबन लंपिट लोभे । वेणु जीव मधु
राधर पल्लव मूल सितस्मित शोभे ॥३॥ विपु

वि॰रा॰
गी

वेशमल्लज भ्रूवलि मद्दलवी हेदोन्मारि दगेन
वीक्षित मति खेदाद्दगेडस्यते । मामद्दीक्ष वि
लज्जितस्मित सुधा सुग्यानने कानने गोविंदेव
ज सुंदरी गण वृते पश्यामि हृष्यामि च ।८८। प्रे
तमौहन मौलिचूणी नवलन मेदार विसे स
नः स्नग्धा कर्षण दृष्टि हर्षण महा मेत्रे करे

65 ६५

मन मनि मनज सुरा सुरवर परिवारे। विशाद
कदेब तले मिलिते कलि कलुष भये शमयेते।
मामपि किमपि तरंग दनंग दशा मनसा रमये
ते।१७। श्रीजयदेव भणित मति सुंदर मोहन म
धुरिपु रूपे हरिचरण स्मरणे प्रतिमे प्रति पुण्य
वता मनुरूपम।१८॥२४॥ हस्त सुस्त विलास

विरा
गी

परि शोधयंत्र सुधियः श्रीगीतगोविंदतः ५०
साधी साधीक चिंतानभवति भवतः शर्करे
कर्करा सिद्धाद्दे द्रदंपतिकेला मस्तन स्तनमसि
क्षीरनीरेरसके। माकंदे कंद कोला यरगीत
लेगाछे नियावद्भावे श्रृंगार सार खन म
य जय देवस्य विषयवचोसि ॥ ५१ ॥

गीहशो हृष्यद्दानव हृयमान दिविषद्वीर
दुःखापहो धेसः केसरिणो वपो हृयन्नवो श्रे
योसि वेशीरवः।८९। यद्गोयर्व कला सकौ
शल मन्य ध्यानेव यद्वैसवे यन्न शृंगार विवेक
तत्व मपियत् काव्येषु लीला यिते। तत्सर्वेज
यदेव पेडित कवेः कृत्स्नैकता नात्मनः सानेदाः

चि॰रा
गी

भज देवी मरजित॰ ॥ ९३ ॥ इतिश्री वि
भास रागस्य गीतगोविंदासमाप्तं ॥

श्री भोज देव प्रभवस्य गामा देवी सुत श्रीज
य देवकस्य। पाश शरादि शिवर्ग केटे श्री।
गीत गोविंद कवि नमस्त।१५२ जय श्री विम
लेर्महिन इव मंदार कुसुमैः स्वयं सिंहरेण
द्विपिरण मुदा मुद्रित इव। भुजा पीठ क्रीडा हू
न कुवलया पीठक रिणः प्रकीर्णा सुगिंड

गी जयति भुजदंडो मुरजितः । ९३ इतिश्री गीत ।
गो गोविंदे समाप्तम् ॥ शुभमस्तु ॥

68

मादेवीसुत श्रीजयदेवकस्य पराशरादिप्रियवर्गकंठे
श्रीगीतगोविंदकविनामस्तु ५ इति रागिनी खेभाव
नी गीतगोविंदपरिच्छेदः समाप्तः ॥ ॥ ॥ ॥

ग॰ वे॰
गी॰

६८
68

श्री भोज देव प्रभवस्य रामा देवी सुत श्री जयदे
वकस्य । पद्म शशादि प्रिय वर्ग केंद्रे श्री गीत
गोविंद कवि नमस्य ९२ जय श्री विमलैर्मिहि
र इव मेदार कस्य मैः स्वयं सिंहेण हिपिरण
मदा मुद्रित इव । भजा पीड क्रीडा हत कव।
लया पीडकरिणः प्रकीर्णा स्तग्विवेडर्जयति

रा॰ गी॰

पद्मावती चरण चारण चक्रवर्ती ॥ श्रीवासदे
व रति केलि कथा समेत ॥ मेतं करोति जय
देव कवि॰ प्रबंधम् ॥२॥ यदि हरि स्मरणे स
रसं मनो यदि विलास कलासु कुतूहलम्
मधुर कोमल कांत पदा वली शृणु तदा
जय देव सरस्वती ॥३॥ ॥ ॥ वाचः

अथ रागगंधार गीतगोविंद परिच्छेद ताल ॥४

मेघैर्मेदुरमंबरं वनभुवः श्यामास्तमालद्रुमैर्नक्तं

भीरुरयं त्वमेव तदिमं राधे गृहं प्रापय । इत्थं

नंदनिदेशतश्चलितयोः प्रत्यध्वकुंजद्रुमम्

राधामाधवयोर्जयंति यमुनाकूले रहःकेलयः ॥२॥ वाग्देवता चरित चित्रित चित्त सद्मा

रागे
गौ

हिन विहिन वरिन मखेदं केशव धृत मीन शा
रीर जय जग देश हरे ॥१॥ क्षिति रति विपुल
तरे तव तिष्ठति पृष्ठे धरणि धरण किण चक्र
गरिष्टे केशव धृत कच्छप रूप जय जग देश
हरे ॥२॥ वसति दशन शिखरे धरणी तव
लग्ना शशिनि कलंक वलेवनि मग्ना ✝

पल्लव यस्मा पति यस्य संदर्भ शुद्धि गिरो ॥
जानीते जयदेव एव शरणः श्लाघ्यो दुरूह
द्रुतेः । शृंगारोत्तर सत्सुमेय रचने रानार्य गोव
र्द्धन स्पर्द्धी कोपि न विश्रुतः श्रुतिधरो धोयी
क विश्वा पतिः ॥ ग्रहपदी ॥ राग धनाश्री ताल
॥४॥ प्रलय पयोधि जले धृत वानसि वेदे वि

रा॰ गं॰
गी॰

जय जय दीशङ्करे ॥५॥ क्षत्रिय रुधिर मये ज
गदप गत पापम् ॥ स्नापयसि पयसि शशि
न भव तापम् ॥ केशव धृत भस्म पति रू
प जय जय दीशङ्करे ॥६॥ विनयसि दिन
मणि दिगति कमनीयम् ॥ दश मुख मौ
लि बलिं रमणीयम् । केशव धृत रघु प

केशव धृत शूकररूप जय जगदीश हरे ॥३॥
नव कर कमल वरे नख अद्भुत शृंग दलित
हिरण्य कशिपु तनु भृंग केशव धृत नरहरि
रूप जय जगदीश हरे ॥४॥ छल यसि विक
मणे बलि मद्भुत वामन पद नख नीर जनि
त जन पावन केशव धृत वामन मन रूप

रागे
गी

म्लेछकृति दहनि धने कल यमि करवाले । एम
केशव मिव किमपि कराले ॥ केशव धृत क
ल्कि शरीर जय जगदीश हरे १० श्री जयदेव
कवे रिह मुदित मुदारं । शृणु सुखदं शुभदं भ
वसारं ॥ केशव धृत दश विध रूप जय जग
देश हरे ॥ ११ ॥ रागगंधार ताल । ४ ॥ श्लोक ।

ति रूपजय जगदीश हरे ॥ ७ ॥ वहसि वपुषि वि
शदे वसने जलदाभे ॥ हल हति भीति मिलि
त यमुनाभे ॥ केशव धृत हलधर रूप जय
जग दीश हरे ॥ ८ ॥ निंदसि यज्ञ विधे रह
श्रुति जाते ॥ सदय हृदय दर्शित पशु घाते
केशव धृत बुध शरीर जय जगदीश हरे ॥ ९

रा॰गो॰
गी॰

कुंडल। कलित ललित वनमाल जय जय दे
व हरे॥२॥ दिन मणि मंडल मंडन भव
खंडन मुनि जन मानस हंस॥ जय जय
देव हरे॥२॥ कालिय विषधर गंजन ज
न रंजन यदु कुल कमल दिनेश॥ जय ज
य देव हरे॥३॥ मधु मुर नरक विनाशन

5

वेदा वहरते जगत्रि वहते भूगोल मद्विभ्रते
दैत्यं दारयते वलिं छलयते क्षत्रक्षयं कुर्वते-
पौलस्त्यं जयते हलं कलयते कारुण्यमा
तन्वते ॥ म्लेच्छान्मूर्छयते दशाकृति कृते
कृष्णाय तस्मैनमः ॥ ५ राग मेघाराग ताल॥
अष्टपदी ॥ श्रित कमला कुच मंडल धृत

रागो
गी

दर श्रीमाखचेइचकोर ॥ जय जय देव हरे ॥ ७
श्रीजय देव कवेरिदं कुरुते मदं मंगल मुज्ज
लगीते ॥ जय जय देव हरे ॥ ८ ॥ राग गेधार
नाल ॥ ४ ॥ श्लोक ॥ रासो लास भरेण विभ्र
म भ्रमा मामीर वामभ्रुवा मध्यौ परि स्फुरनि
भीर मर प्रेमोदया राधया ॥ माधु न्वहदने

गरुडासन। सुरजल केलि निदान जय जय
देव हरे॥४॥ प्रमल कमल दल लोचन भवमो
चन। त्रिभुवन भवन निधान। जय जय देव
हरे॥५॥ जनक सुता कृत भूषण जित दू
षण समर शमित दशकंठ॥ जय जय दे
व हरे॥६॥ अभिनव जलधर सुंदर धृत मे

रा॰गो॰
गो॰

श्रीणी श्रपामलकोमलै रुपनयन्नेगो रनेगोन्न
वे ॥ स्वच्छंदं व्रज सुंदरी भिरभिनः श्रंगारमालि
गितः शृंगारः सखि मूर्तिमानि वमथौ म
थ्यो हरिः क्रीडति ।८। निर्योन्मेग वराङ्गजे
ग कवल क्लेशादि वेशाचले प्रालेय स्रव
ने छयान्न मदनि श्री खिंड शैलानिलः किंच

7

सुधामय मिति व्याहृत्य गीतस्तुति व्याजाज्ज
ज्ज्ट ज्ञेवित स्मित मनो हारी हरिः पातवः
प्रनेक नारी परिरंभ संभ्रम स्फुरन्मनो हारि
विलास लालसं मरादि रामा उपदर्शी यन्यसौ
सखी समसे घनगाह राधिका॥ ॥ विशे
षा मन रंजनेन जनयन्नानंद मिन्दीवर

रा॰गे
गी

मग्य वधू निकरे। विलासिनि विल सनि के
लि परे॥१॥ पीन पयो धर भार भरेण हरिं
परि रम्य सरागं॥ गोप वधू रत गायति
काचि दुदे चित पंचम रागम॥२॥ कपि वि
लास विलोल विलोचन खेलन जनित
मनोजम॥ ध्यायति मग्य वधू रयिके म।

स्त्रिग्धरसाल मौलि मञ्जरी मालोकय हर्षोद
या उन्मीलन्ति कदम्बः कदम्बिनि कलोत्तानाः
पिकानां गिरः ॥ २ ॥ ध्रुपदी । राग गंधार ॥
ताल ॥ ४ ॥ चंदन चर्चित नील कलेवर पीत
वसन वनमाली । केलि चलन्मणि कुंडल
मंडित गंड युगस्मित शाली ॥ २ ॥ हरि हि

रा॰गे॰
गी॰

करतल ताल तरल वलया वलिकलित क
ल स्वन वंशे ॥ रास रसे सह नृत्य परा हरि ।
एा युवती शत संसे ॥६॥ श्लिष्यति कामपि
चुंबति कामपि रमयति कामपि रामां पश्य
ति सस्मित चारु परा मपरा मनुयाति निवा
मम ॥७॥ श्री जयदेव भणित मिद म

भु सूदन वदन सरोजे ॥३॥ कपि कपोल न
ले मिलि तालपिते किमपि श्रुति मूले ॥
चारु चुंबति नेव वती दयिते पुलके रनकू
ले ॥४॥ केलि कला कुत केनव काचिद
मे यमुना जल कूले ॥ मंजुल वंजुल
कुंज गते विव कर्ष करेण दुकूले ॥५॥

रा॰ गे॰
गी॰

ना पुवाच रहः सखी ॥१०॥ केसारि रपि संसार
वासना बंध शृंखला राधा माधाय हृदये न
माज व्रज सुंदरी ॥११॥ इतस्ततस्ता मनु स्मर
राधिका मनेगवाणा व्रजाविन्न मानसः कृ
तान्त तापः सकलिंद नंदनी तटान्त कुंजेति
ष साद माधवः ॥१२॥ राग गंधार ताल ॥७॥

ज्ञत केशव केलि रहस्यम्॥ वृंदावन विपिने
चरिते वितनोत्र शुभानि यशस्यम्।८।अष्ट
दी राग गंधार ताल॥४॥ विहरति वनेराधा
साधारण प्रणये हरौ विगलित निजोत्कर्षा
दीर्घी वशेन गतागतः। कुचि दपि लता कुंजे
गुंजन्मधुव्रत मंडली मुखरशिखरे लीनादी

रागो
गी

नदाननम् कुटिलभ्रुकोप भरेण शोणपद्म
मिवो परि भ्रमता कुले भ्रमणेन लामहे ह
दि सेमता मनिशं भृशं रमयामि किंवने
न सरा मिना मिह किंवृथा विलयामि ॥
४॥ नलिविन्न मस्तूयया हृदयन् नवाक
लयामि नन्नवेमि कुतो गता सि नते

प्रष्ठपदी रागगेयारतालाभ्यां मामिये चलिता

विलोक्य हृते वपु निचयेन। सापराधतया मया

न निवारितातिभयेन।१॥ हरि हरि हृता दरन

यावाना सा कृपिनेव॥ किं करिष्यति किंव

दिष्यति सा चिरं विरहेण किंधनेन जनेन

किं मम किं सखेन गृहेण॥२॥ चिंतयामि

रा॰ गो॰
गी॰

एतो रसमोन ॥८॥ पाणौ मा कुरु चूत साय
क मसं मा चाप मारो पय कीडा निर्जित वि
ष मूर्छित जना चानेट किं पौरुषं ॥ नरणाए
व मटगी हशो मनसिज पैखल्कटाना मुगा
श्रेणी जर्जरिते मना गपि मनो नायापि सेष
ते ॥१२॥ हृदि विलाशना हारो नाये भजेग

नने त्रजयामि ॥ ५ ॥ हृदयमे प्रवनोगाना गान
मेव किं विदधामि ॥ किंप्रेरे वश मेभ्रमे परि
रंभणीन ददामि ॥ त्रमना मपरं कदापिनवे
हृशान करोमि ॥ देहि मेदरि दर्शने मम म
न्मथेन हनोमि ॥ वर्णीते जयदेव केन हरे
रिदं प्रवणीन किंहु विल्व ममद मंभव रोहि

मनायकः कवलय दल श्रीणी कंठेन सागा
रल युतिः मलयज रजो नेदं भस्म प्रिया रहि
ते मयि प्रहरन हरस्मोन्मा नेगा कथा किम
यावसि ॥१४॥ अष्टपदी ॥ राग गंधार ता
ल ॥४॥ वहति मलय समीरे मदन मप
निधाय स्फुटति कुसुम निकरे विरहि हृद

रा॰ मन्मथ महा तीर्थे पुनर्मीयवः। आयंस्ला मनि
गी॰ शे जपन्नपि तवैवा लाप मेशावली भूय स्त्वन्ज
च क्रेभ निर्भरपरी रेभा स्तने वोच्छति। १५। वि
किरति मुहुः श्वासा नाशाः परो मुहुरीक्षते
प्रविशति मुहुः कुंजे गुंजे गुंजन्मुहुर्वहुह
नाम्पति। रचयति मुहुः शय्या सर्या कले

जति ललित धाम ॥ लुठति धरणि शयने
बहु विपलति नव नाम ॥४॥ भणति कवि
जयदेवे विरहि विलसितेन । मनसिज भस
विभवे हरि हृदयक सकलेन ॥५॥ रागा गे
धाव नाल ॥४॥ श्लोक ॥ पूर्वं यत्र समन्नयार
निपते राधा दिनाः सिद्धय स्तस्मिन्नेव निकुंज

रा॰गे॰
गी॰

साहसमित मा कला कल गल हेमिल मला
सिने भुवली कमलीक दर्शित भजा मलाई
दृष्टमनम ॥ गोपी नाथि भ्रत त्रिरीदा गा।
सिना कोतस्थिरे चिन्तयन् नन्तर्मय म
नो हरो हरनवः क्लेशन्नवः केशवः।२।
यमुना तीर वा तीर निकुंजे मंदमास्थितम्

15

ऊरीकृते मदन कदन क्लान्त कान्ते प्रियस्त
व वर्तते ॥१९॥ तानिस्पर्शी स्तावानितेच तरला
स्त्रिग्धा दृशो विभ्रमा स्तद्भ्रूवज मौरभेसव
स्वया स्पंदी गिरो वक्रिमा ॥ सा विंवा धरमा
पुरीति विषया सेगेपिचेन्मानसं तस्योल
गत समाधि हेत विरह व्याधि कथं वर्तते ॥१

रा॰ गो॰
गी॰

लवंग लता परि शीलन कोमल मलय समीरे
मधुकर निकर करंबित कोकिल कूजित कुं
ज कुटीरे ॥२॥ विहरति हरि रिह सरस वसंते
नृत्यति युवति जनेन समं सखि विरहि जन
स्य दुरंते ॥ उन्मद मदन मनोरथ पथिक व
धूजन जनित विलापे। अलिकुल संकुल

प्राइ प्रेम भरो ज्ञान्तमाथवं राधिका सखी।
वसंते वासंती कुसुमस कुमारे रव यवे प्रेम
नी कान्तारे वइ विहिन कृसान्व शरणो प्र
मेदे केदर्पज्वर जनित चिंता कुल नया व
लहाथां राधो सरस मिद मूवे सह चरी ॥
राग गंधार ताल ॥४॥ अष्टपदी ॥ ललित

रा॰गौ॰
गी॰

रुण विलासे॥४॥ विगलित लेजित जगद व
लोकन नरुण करुण कृत हासे॥ विरहिनि
कुंजन कुंज गता कृति केतकि दंतरि नाशे
॥५॥ माधविया परिमल ललितेनव मा
लति यात सुगंधौ॥ मति मनसा मपि
मोहन कारिणि नरुण कारण बंध॥६॥

17

कुसुम समूह निरा कुल वकुल कलापे॥२
मृग मद सौरभ रभस वशंवद नव दल माल
तमाले॥ सुव जव हृदय विदारण मन सिज
नखरुचि किंशुक जाले। मदन महीपति
कनक दंड रुचि केसर कुसुम विकासि
लि न शिली मुख पाटल पटल कुंत सर

रागो-
गी-

दर विदलित मल्ली वल्लि वेल्लत्पराग प्रकटित प
टवासै वीसयन्कानतानि। इहहि दहति चेतः
केतकी गंधवेधः प्रसरद सम बाण प्राण व
न्धवाहः॥२॥उन्मीलन्मधुगंधलुब्ध मधुप
व्याधूत चूतांकुर क्रीडत्कोकिल काकलीक
लकलै रुद्गीर्ण कर्णज्वरः नीयंते पथिकैः

कुच दनि मुक्त लता परि रम्भा मुकुलित
फुल किन छूते ॥ वृंदावन विपिने परिसर
परिगत यमुना जल छूते ॥ श्री जयदेव भणि
ते मिदमुदयति हरि चरण स्मरणि सारं ॥ म
रस वसंत समय वन वर्णन मनमथ मद
न विकारं ॥ ८ ॥ राग गंधारमाल ॥ श्लोक

रा॰गे॰
गी॰

राग गेयारताल ॥ ४ ॥ अष्टपदी ॥ निंदति चंद
न मिंड करण मन विंदति खेद मधीरं आल
निलय मिलनेन गरल मिव कलयति मलय
समीरं १ माधव मा विरहे नव दीना ॥ मन
सिज विशिखे भया दिव भावनया त्वयि ली
ना ॥ अविरत निपतित मदन शरादिव भव

कथे कथ मपि ध्यानावधानदान प्राण प्राणाम
म मम ग्राम रसोल्लासै रमी वासराः ॥२२॥ इरा
लोक लोक लव कन वका शोक लतिका । वि
काशः काशानो पवन पवनोयं व्यथयति । अपि
ग्राम्यङ्गी रणिम रमणी यान मकल । प्रसू
नि स्तूलानो मपि शिखरिणीयं सुखयति २३

रा॰ गे॰
गी॰

व विकट विघ्नवद दन्त दलन गलिता स्तनथा
रम ॥४॥ विलोकनि रहसि कुरंगम देन भवे
नम मन शरभूते प्रणमनि मकरमथो वि
निधाय करेच शरे नवचूते ५ प्रति पद मिदम
पि निगदति माधव नव चरणो पनिता हे । न
पि विमुदि मयि मपदि सुथा निधि रपि कुरुते

20

दव नाय विशाले। स्वहृदय मर्म्मणि वर्म्म क
रोति सजल नलिनी दलजाले।२। कुसुम वि
शिख शरतल्प मनल्प विलास कला कमनी
ये। व्रज सिव नव परिरम्भ सुखाय करोति
कुसुम शयनीये।३। वहति च गलित विलो
चन जलधर मानन कमल समाम् विधुमि

रा॰ गौ॰ गी॰

आवासो विपिना यते प्रिय सखी मालापि जा
लायते। तापोपि शशिनेन दावदहन ज्वाला
कलापायते। सापि तद्विरहेण हन्त हरिणी
रूपायते हा कष्टं कंदर्पेणि यमायते विरच
यन् शार्दूल विक्रीडितं॥ राग गौरीरसाल
॥४॥ अष्टपदी॥ स्तन विनि हित मणि हारम्

नवदाहे ६ ध्यान लघेनपुरः परिकल्प्य भवेत
प्रजीव उपायं। विलपति हसति विषी दति रो
दति चेवति मेचति लापं।७। श्री जयदेव भणि
त मिद मधिके यदि मनसा नट नीयं। हरि
विरहा कुल वलव युवति सखी वचने पठ
नीयम॥८॥ राग गंधार ताल॥४॥ श्लोक।

रा-गे
गी

मिव विगलित नाले। ४। नयन विषय मिव
किशलय नले। कलयति विहित कलाश
नकले। ५। नवजलित पाणि तलेन कपोले
वाल शशिन मिव साय मलोले। ६। हरिति
नि हरि रिति जपति सकामं। विरह विहि
त मरणो वनि कामं ७ श्रीजय देव भणित

22 २२

दारे सा मनुते कृशा तनु रिवभारे राधिका चिर
हे नव केशव । शार सम स्फुरा मपि मलयज
पंकं वपुषि विषमिव वपुषि सशंकम ॥२
श्वसित पवन मनुपम परिणाहम् ॥ मदन
दहन मिव दहति सदाहम् ॥३॥ दिशि दि
शि किरति सजल कण जाले ॥ नयन नलिन

रा॰ गं॰ गी॰

प्रमीलति पतत्ययाति मरुद्धेपि पत्रावलन
न ज्वरे वर तत्र जीवेत्र किन्तेरसा त्वावैद्य प्रति
म प्रसीदसि नतस्मकृतो मथा श्लोकः २६॥
कंदर्प ज्वर संज्वरा नरतनो राश्चर्य मस्मा श्चिरं
चेत चंदन चंद्रमः कमलिनी चिंता स्व से
नाम्पति किंत्र शोनि रसेन शीतल नरं त्वा

मिति गीतं ॥ स्रावयन्त केशव पद सुप नीने
राग गंधार ताल ॥ ४ ॥ श्लोक ॥ स्मरन्तरं दै
वन वैष हृष त्वंगा संगा मदन माव साध्याम
विमक्त वाथां कुरुषेन राधा सर्पेद वज्रा दपि
दारुणोसि ॥ २५ ॥ सा रोमो चति मीलकरोति
विलपमुल्कमपने नामपति ध्यायमुद्रमति

रा गं-
गी

नेपम्यो चित नील रत्न मवनी भारावतारोन
न भारछंद वज हंदरी जन मन स्तोक प्रदोष
शिरं केश पंचन पूम केन रवन नांदेवकीनं
दनः ॥२५॥ ग्रथनो [illegible] शाको चिर मन
रकों लना गरहे दृष्टा ॥ नच्चिरिने गोविंदे मन
सिज मन्दे सवी ग्राह्य ॥३॥ ग्रगेषा भरणं क

मेकं मेव प्रिये ध्यायेन्नी रहस्यिना कथ मपि
तीर्णा तणे प्रकाशिनि ॥२७॥ तणा मपि विर
हे जातान मेहे नयन निमीलित विवृत्या न
यादि । वाणनि कथ मसौ रमाल शाखो चिर
दिरहेण दिलोक प्रकाशिनामो ।२८॥ यथा
मथ मलार विंद मधुप स्त्रैलोक्य मौलस्थली

रागं-
गी

कलेवा हरंती। तवकि तव विथाया मन्दकंद
पि चिंता रस जल निधि मग्ना ध्यान लग्ना म
गादी ॥३३॥ राग केदार ताल ॥४॥ ध्रुव
पदी ॥ पश्यति दिशि दिशि रहसि भवंते
त्वद पर मधुर मधूनि पिबंतम् ॥२॥
नाथ हरि सीदति राधा वासगृहे ॥ त्वद

25 २५

रोति वक्रशः पश्येपि संचारिणि शशेत्वामपि
शोकजे विलम्बते शय्योचिरं प्रायशः ॥ इत्या
कल्प विकल्प नल्प [illegible] संकल्प लीला श
त । व्याशाला पि विना त्वया वरतनु नैषा
निशेशेत्यति ।३२। विपुल पुलक पालिः
स्फीत स्फीत्कार मन्मर्जितनज डिमका ऊर्वी

रा॰गो॰
गो॰

सखी मनवारम्॥५॥ स्निग्धति ध्रुवति जल
धरकलयम्॥ हरिरुपगत इति तिमिर मन
लो ६ भवति किलेति विगलित लज्जा। वि
लपति रोदति वासक सज्जा॥७॥ श्रीजय दे
व कवेरिदमदितम्॥ रसिक जनस्तवना
मपि मदितं॥८॥ रागगौरीरागताल॥४॥ श्लोक

26 ३६

भि शाखण रभसेन वलेती पतति पदानि कि
येति वलेती ।२॥ विहित विशद विष किशल
य वलया । जीवति परमिह नव रति कलया
॥३॥ सम्मुख वलोकित मंडन लीला मधुरि
पु रह निति भावन शीला ॥४॥ त्वरित मपै
ति न कथ मभिसारम् ॥ हरि रिति वदति

रा॰ गो॰
गी॰

इव स्फुट लोचन श्रीः ॥ वृंदावनांतर मदीपय
देशु जालै दिक सुंदरी वदन चंदन बिंदु रिंदुः
॥३४॥ प्रसरति शशधर बिंबे विहित विले
बेव माधवे ॥ विधुरा विरचित विविधविला
पं मा परिता पंच कारोच्चैः ॥३५॥ विरह पा
रा॰ मरारि मरारि मरोरुज मुनिरयं नविवेद

27 २८

किं विश्राम्यसि कृष्ण भोगिभवने भांडीरभूमी
रुहे। भ्रातर्यासिन दृष्टि गोचर मितः सानंदनं
दासदम ॥ राधाया वचनं तदध्वग मुखान्नं
नेदोनि के गोपतो गोविंदस्य जयंति सायम
निधिः प्राशस्य गर्भा गिरः ॥३३॥ प्रशान्त
रेच कटला कल वर्मपाला संजात पातक

रा॰गो॰
गी॰

म्यतरा अयिषो। किंते कृतोन भगिनि तम
या नरंगौ रंगानि सिव मम शाम्यत देह दा
ह॰ ॥ राग गंधारताल ॥४॥ अष्टपदी ॥
कथित समये पि हरि यदि न यौवने मम
विफल मिद ममल रूप मपि यौवने ॥२॥
यामि इक मिह शरणं साखी जन वचन ।

नो विधुरनीव तनोति मनो भवः सहृदये हृद
ये मदन बाणाम्।३६। मनो भवा नेदन चंद
ना निल प्रसीदरे दक्षिणा मंच वामताम् ॥ त
णेजगत् प्राण विधाय मार्थवे प्रो मम प्राण
हरो भविष्यति ॥३७॥ बाणं विधेहि मल
या निल पंच बाण प्राणान् रक्षाण नगरह

रा॰ गं॰
गी॰

हत कामिनी ॥४॥ अहह कलयामि वलया
दि मणि भूषणं ॥ इति विरह दहन वह नेन
वह हूषणं ॥५॥ कुसुम सुकुमार तनुमतनु
शर लीलया ॥ स्वगपि हृदि हृतिमा मति
विघ्न शीलया ॥ ६ ॥ अह मिह निवसा
मिन गणित वनवेतसा ॥ स्मरति मधु

वेचिता । यदत्र गमनाय निशि गमन मपि
शीलिनि । तेन मम हृदय मिद मसम शरकी
लितम ॥२॥ मम मरण मेव वर मति वि
तथ केतना किमिह विम हामि विरहानल
मचेतना ॥३॥ मा मरह विधुर यति मधुरम
धुयामिनी । काषि हरि मन भवति कृत स

रा॰ गो॰ गी॰

इत्येवं कथा भिरत्य मनसो वित्तिष्य वत्तोवले
राधाया स्तन कोरकोपरि मिलन्नेत्रो हरिः पा
तवः तत्किंका मपि कामिनी मभिसृत ः
किंवा कला केलिभि र्वंदो वेधुभिरत्य का
रिणि वना भ्यर्थी किमङ्गाम्यति कोन ः
क्रोत मना मना गपि पथि प्रस्था

हृदनो मा मपि नवेनसा ।२। हरि चरण शर
ण जयदेव कवि भारती ॥ वसन्त हरि सुव
नि रिव कोमल कलावती ॥८। राग गेया
र नाल ॥४॥ श्लोक ॥ त्वाम प्राप्य मयि
स्वयंवर परां लीलोदे नीरो दरे । शंके सुंदरि
काल कूट मपिवन मुक्तो मृडानी पतिः

रागो
गी

चित वेषा गलित कुसुम दर विलसित केशा।२।
काचि मधुरि पुण विलसति युवति रधिक गु
ण ॥ हरि परिरंभण वलित विकारा। कुच
कलशो परि नरलित हारा।२। विचल दल
क ललिता नन चेष्टा। नदधर पानरभसकृ
त नेष्टा।३। चंचल कुण्डल ललित कपो

नमेवाहम: संकेती कृत मेज वेज ललना
ऊंजेपि यन्त्रागत: ॥४४॥ अथ रागो माथ
व मन्त्रेण सखी मिमे वीक्ष विषादमूको
विशेक माला रमिने कथापि जनाईने दृष्ट
व देनदाह ॥४५॥ राग गंधार गीत गोविंद
नाम ॥१४॥ अष्टपदी ॥ स्मर सम रोचन विर

रागे-
गी-

श्री जयदेव भणित हरि रमितम् ॥ कलि कल
षे जनयतु परि शमिते ॥ ८ ॥ राग गेयार ताल
॥ ३ ॥ अष्टपदी ॥ सोरठा ॥ सुमदिन मदने रम
णी वदने चुंबन चलिताधरे । मृग मद तिलके
लिखति सपुलके मृगमिव रजनीकरे । १ ॥
रमते यमुना पुलिन वने विजयमुरारि मधु

ला। स्रावरित रशन जघन गति लोला॥४॥
दयित विलोकित लजित हसिता॥ वङ्कवि
य कूजित रति रस रसिता॥५॥ विपुल पुल
क पृथुल वेपथु भंगा। अलिन निमीलित वि
क सद नेत्रा॥६॥ श्रमजल कण भर सुभग
शरीरा। परि पतिनोरसि रति रण धीरा।७।

रागं
गी

ले करतल नलिनी दले । सकित वलय माध
कर निचये विकरति हिम शीतले ॥४॥ रतिपर
इ जघने विपुल पघने मनसिज कनकासने
मणिमय रशने नोरण हसने विकरति
कृत वासने ॥५॥ चरण किसलये कम
ला निलयेनाव मणि गण पूजिते ॥

ना। घनचय रुचिरे रचयति विकरे नरलिल न
रुणा नने कुरुवक कुसुमे चपला सुखमे र
ति पति मृग कानने।१२। वहयति सुचने कु
च युग गगने मृग मद रुचि रूषिते। मणि
मय मेखले नारक पटले नखपद शशि भू
षिते।१३। जिन विस शकले सुड भुज युग

रा॰गे॰
गी॰

वके॥द॥ राग गंधार ताल॥१॥ अष्टपदी॥
अतिसय तरल कवलय नयनेन तपनिनसा
किसलय शयनेन॥१॥ सखिया रमिनाथ
न मालिना॥ विकसित सरसि जललिन
मुखेन॥ स्फुटतिन सामन सिज विशिखे
न॥२॥ अमृत मधुर तरमृदु वचनेन॥ ज्व

वह्निरिव वर्णे यावक भरणे जनयति हृदि
योजिते ॥६॥ रमयति सभ्रूशं कामपि सहृ
शे खलहलधर मोदरे ॥ किम फल भव मे
चिर मिह विरम सद मखिल विटपोदरे ॥७॥
इह रस भणने मधुरिपु पद सेवके ॥ कलि
युग चरिते नवसुन कवितेकविन्द्र जयदे

रा॰गो॰
गी॰

न जनवर नरुणोन वहुतिन साहज मनिकरु
णोन॥७॥ श्री जय देव भणित वचनेन प्रवि
शान हरि रपि हृदय मनेन॥८॥ राग गंधार
नाल॥३॥ श्लोक॥ नायानः सखि निर्दयो
यदि शठ स्त्वन्नूति किं हूयसे। स्वच्छंदस्वज
वल्लभः सर मते किन्नत्र नेहूषणं॥ पश्यपा

सति नमा मलयज पवनेन ॥३॥ स्थल जलरु
ह रुचि कर चरणेन ॥ लठति नमा हिमक
र किरणेन ॥४॥ सजल जलद समदय रुचि
रेण ॥ दहति नमा हृदि विरह भरेण ॥५॥ क
नक निकष रुचि शुचि वसनेन ॥ वसति नि
न सा परिजन हसितेन ॥६॥ सकल भव

रा गं-
गी-

हे केशि मदन मदारे ॥ रमय मया सह मदन म
नोरथ भावि नया स विकारे ॥ प्रथम समागम
लज्जि तया पट वाट शनै रन कूलं मृदु मधु र
स्मित भाषितया शिथिली कृत जघन दु
कूलम् ॥ २ ॥ किम लय शयन निवेशि
तया चिर मरसि ममै वशयाने कृत परि

यश्चिय सेगमाय दयि तस्या हृष्य माणो गौरु

कोढार्ति भरा दिव स्फुट दिदं चेन: स्वयं यास्य

ति ॥४२॥ रागगोंयार नाल ॥ अष्टपदी ॥

निभृत निकेत गृहे गतया निशि रहसि नि

लीय वसन्ते चकित विलोकित सकल दि

शा रति रभस वशेन हसन्तम ॥१॥ संवि

रा गं
गी

घन स्तन भारे ॥५॥ चरण रणित मणि नूपुरया
परि हरित सुरत विनानम् ॥ मखरवि श्रेख
ल मेखलया सकव यहू ब्रेबन दानम् ॥६॥
रति सुख समय रसाल सया दर मकुलि
त वदन सरोजम् ॥ निस्सह निपतित तनु
ल तया मधुसूदन मदिन मनोजो ॥७॥ श्री

रेभणा ब्रेवनया परिरभ्य कृता धरणानं ।१३। श्रल
म निमीलित लोचनया पुलकावले ललित
कपोलम ॥ श्रम जल शकल कले वरयावर
मदन मदादति लोले ॥ कोकिल कल रव
कूजितया जित मन सिज नेत्र विचारे ॥ स्म
य कुसुमा कुल केतलया नाव लिखित

रा॰गो॰
गी॰

पैं गौव नदर्षिता परनटी सिहर मद्रो किनो वाद
र्वी पतनो स्तनो नभतः श्रेयांसिकेसहिषः॥
॥४२॥ ग्रथ कथ मपि यामिनी दिनीय स्म
र् पार जर्जरिताषि सा प्रभाते॥ ग्रन्न नय व
चनम्बदन्ते मग्रे प्रणान मपि प्रिय माह
साम्य हृयम्॥४४॥ राग गेयारनाल॥

जय देव भणित मिद मति शय मधु रिपु निधु
वन शीलम ॥ सुख सङ्केतित राधिकया क
थित विन नोज सलीले ॥८ अष्टपदी ॥ राग
मंथार ताल ॥ ॥ श्लोक ॥ वृष्टि व्याकुल
गोकुल रक्षण कृष्ण गोवर्द्धने विभृत
लव सुन्दरीभिः राधिका नेत्र स्थिरे देवित ः ८

रागं
गी

न विलोचन ञ्जेवन विरचित नील मरुणं दृशा
न वसन मरुणं नव कुसुम मनोति नव रत्न
कुण्डम ॥१२॥ वपु रत्न हरति नव स्मर संगा र
खेन खेरक्षन रेखे ॥ मरकत शकल क
लित कल थौन लिपे रिव रवि जय लेख
म ॥३॥ चरण कमल गल दलक्तक सिक

नाम॥३॥ अष्टपदी॥ रजनि जनित गुरु जाग
रणा कषायित मलस निमेषं वहति नय
न नव राग सिवस्फुट मदिन रसा सिनिवे
शं॥२॥ याहि माधव याहि केशव मा वदकै
तव वदम॥ नामन मर मर सीरुह लो
चन यानव हरनि विषादम। कजल मलि

रा गं-
गी

कथ मथ वेचयसे जन मन गतम सम शारज्व
र हूनम ॥६॥ भ्रमति भवान वला कवला
य वनेषु किमत्र विचित्रं प्रथ यति पूतनि
कै वदयं वय निर्दय बाल चरित्रम ॥७॥
श्री जय देव भणित रति वेचित खंडि
त युवति विलापम ॥ शृणुत सदा

मिदं नव हृदय मदारं ॥ दृशी यतीव वह्नि मर्दन
द्रुम नव किसलय परिवारम् ॥४॥ दशान
पदं भव दयार गानमम जनयति चेतसि वे
दम् ॥ कथयति कथ मधु नापि मया सह
तव वपुरेन दमेदम् ॥५॥ वह्नि विष म
लिन तदेतव कृष्ण मनोपि भविष्यति नूनं

रागो
गी

पद्मा पयोधर तटी परि रम्भ लग्न काश्मीर
मुद्रित मुरो मधुसूदनस्य ॥ वक्षा नरा
य शिव खेलद नेग खेद खदाम्बु पूर मन
पूर यन्त्र शियम्क ॥४६॥ अथानन्तरे मस्त
ग योष वशा मसी मनिः स्वास निस्स
ह मंत्री समाखी मपेत्य सडीडमी ।

मधुरे विरुया विरयालय नोपि॥८॥ अष्टपदी
रागा गेयार नाल॥३॥ श्लोक॥ नवेदं एषेमाः
अमर दनुरागं स्वहि रिव प्रिया पादा लक्क कु
रिन मरुणा योनि हृदयमभाय प्रत्यान
प्रणय भर भंगेन किन वल्लदा लोकः
शोका दपि किमपि लज्जां जनयति॥४५

रा॰ गो॰
गी॰

येहि भयि निर्दय देत देश दोवीलि वेथनि
विड खल पीडनालि चेरि त्वमेव मद मेच
य पेचवाण चोडास्त्र कोड दलना दसवः
प्रयोन ॥१९॥ शाशि मखि नव भानि भंग
रभर्भव जन मोह कराल कोल रूपी ॥
लज्ज दिनि भय भंजनाय एनो त्वद यरसी

त्रित सावी वदने दिनोते सानेद गाहद पदे
हरि विस्मवाच ॥७॥ परि हर हसा नेक श्री
को त्वया सनतं चन सन जचनया क्रोते प
रनव काशिनि विशनि विनतो रमो यमो
नकोपि ममांतरं प्रण यिनि पंगी रमा
रमे वियेहि वियेयनाम ॥८॥ मयेवि

रा॰गो॰

सि यदि किंचिदपि दन्त रुचि कौमुदी हरति
दरति मिव मति घोरम ॥ स्मर दरद लीयवे
नव वदन चंद्रमा रोचयति लोचन चकोरं
२॥ प्रिये चारु शीले मुंच मयि मानमनिदाने
सपदि मदनानलो दहति मम मानसं देहि
मुख कमल मधु पाने। सत्यमेवासि यदि

ध सर्वेव सिद्धि मेत्र: ५० अथ यति हथा मौने
नन्निश पंचय पंच मंतरुणि मधुरा लापै स्ना
पे विनोदय रहिभि: समाधि विसादी भा
वलाबहि मेवम मेवमो स्वय मति पाय स्ति
य मुगये प्रयोय स्वप स्थित: ॥ राग गंधा
र माल ॥१॥ गुरमुखि गोविंद ॥ अष्टपदी ॥ वद

रा॰ को॰
गी॰

नीलनलिनाभमपि नलिनवलोचनं धारयति
कोकनद रूपे ॥ कुसुम शर बाण भावेन
यदि रंजयसि कुल मिद मेन दन रूपम्।
४॥ स्मरन्न कुच कुंभयो रुपरि मणि मं
जरी रंजयन्न नव हृदय देशं ॥ रसन्न र
सनापि नव घन जघन मण्डले शोषय।

सदनि मयि कोपिनी देहि खर नाखर शरचा
नभ। चटय भज बेथने जनय दृढ खिरनेगे
नवा भवति [illegible] ॥२॥ त्वमसि मम भू
षणो त्वमसि मम जीवने त्वमसि मम जल
धिरत्नम॥ भवन भवतीह मयि मनन मन
रोपिने तत्र मम हृदय मति यतनम॥३॥

रा॰ गो॰ गी॰

कदना नलो हरत नइपाहिन विकारं॥८॥३

नि चटल चाट पट चारु सर वैरिणो राधिका

माधि वचन जाने॥ जयति पद्मावती रमण

जयदेव कवि भारती भणित मति प्रातम

राग गंधार गीत गोविंद नाल॥१॥ श्लोक।

वेणूज मुनि बोध बोधबोधमधुरा स्त्रियमस्

45 ४५

रा॰गो॰
गी॰

वनी रुचिर चित्र लेखे भ्रुवा वहो विवय यो
वने वरसिनन्ति एस्त्री गना ॥५२॥ भ्रूपल
वे यन्त्रयोगान रेगिनानि वाणगणाः प्र
वणा पालि रिति स्मरेण ॥ नस्या मनेग जस्य
जंगम देवतया मस्त्राणि निर्जित जगेति
किमपिनास्ति ॥५३॥ भ्रूचापे निहता : कटाक्ष

क ॐ वि॰ गेडे चेडिचकास्ति नील नलिन श्री
मोहने लोचने । नामान्वेति निल प्रसून पद
वी ऊंदाम देति प्रिये प्रायस्तन्नाव मे॰ या
दिनयते विशेष प्रभा प्रथः ॥५१॥ हशौ तन
मदाल से वदन मिंड मेदीपने गनिर्जन म
नो रमा विजित रेभ मूरुहये रतिक्लव कला

रागं-
गी-

नामथ मन्मथ विन्नो रति रति रस भिन्नो विषा
द समन्नाम॥ प्रनविंतिन हरि चरिनो कल
हानलिना मवाच रहः सांवी॥५६॥ स्त्रियये
यनरुषा सियनयणा मनि स्लधासि यद्यागिणि
देषस्यासि यद्नमादे विमखनो यानासि नस्मि
सिये। नयुक्ते विपरीनकारिणि नव श्री खे

विशिष्टो निर्मान मर्मवथो प्रणामाना कटिलः
कोन कदर्थी भावोपि मावोयमे । मोहे नावदये
च नलिनवने विंनाथरी रागवान् सहृनः स्त
न मेडल लव कर्ण प्राणो मिम क्रीडति ॥ भ।
मानिनी मान विधे मदस्तो जयति सोप्रने ॥
मदनेण समम्हृतःश्रीमद्गोपालकथनिः १५५

रा॰ गो॰ गी॰

फली ऊकषे ऊच कलेशं ॥२॥ कलि न कथि
न मिद भव पद मतिरं॥ मापति हरि हर मति
प्राय रुचिरं॥ किमिति विषीद सिरो दिषि
विकला॥ वहसि भवति सभा तव विकला
श॥ जनयसि मनसि किमिति गुरु खेदम॥
शृणु मम वचन मनीहित भेदं॥५॥ हरि

उ वर्षी विषे शीतोष्ण लयनो हिमेऊन वहः
क्रीडा खदो यालनाः ॥५७॥ राग गंधार श्र
ष्टपदी ताल ॥३॥ हरि रमि सरनि वहनि
सुह पवने किम पर मयिक सखि सखि भ
हने ॥१॥ माधवे माकुरु मानिनि मान मये ॥
ताल फला दपि गुरु मनि मदसे ॥ किम वि

रा॰गे॰
गी॰

वचन रिष रिव सखी सेवा सोयं सखी वहिमा
निलों विष मिव सया रशिम यंस्मिन् उलोति
मनो गाने ॥ हृदय मदये नस्मिन्नेव प्रसर्ब
लने दलान कवलय दशा स्वामः कामो
निकाम तिरंकशः ॥५८॥ गाण यनि गुणा
ग्रामे भामे भ्रमा दपि नेहने वहति चप ।

न मन्मथ निदेशो ॥५॥ स्थल कमल गंजनं
मम हृदय रंजनं जनि नयन रंग परभागम
भण मसृण वाणि करवाणि चरणं हयं
मयस लदृद लक्तक मयम ॥६॥ स्मर गर
ल खंडनं मम शिरसि मंडनं देहि पद प
ल्लव मुदारं ॥ ज्वलति मयि दारुणो मदन

रा॰गे॰
गी॰

क्षिप्ते क्षिप्ते नलाणांके मसालस भूजित मि
ति व्या मोह कोलाहल॰ ॥६०॥ सकवि मवन
येन प्रीणयिता मृगाक्षी गत वति कृत वेषे
कशावे कंज शय्या रचित रुचिर भूषो हृष्टि
मोषे प्रदोषे स्फुरति निरव मादो कापिरा
यो जगाद ॥६१॥ ॥ सामो इत्यति वस

विनोदे दोषं विमंचति हूरतः ॥ पुवतिषु वलत
लो हुलो विहारिणि मांविना पुनरपि मनो
वामे कामे करोति कथोमिकिं ॥५९॥ प्रीति
मस्मनतो हरि-कवलया गीडेन मांडे रणो
रथ पीन पयोधर मरण हुंकु मोन मेभे
हवान ॥ यत्रस्त्रियति मीलति नगामथ

रा॰ गं॰
गी॰

मनो रथेनच समं भ्रमंतमः॰ सोइनो कोकानो
करुणा खनेन सदृशी दीर्घी मद भ्यर्त्यना न
जनयो विफले विले विले नमसौ रमोभि
मावनाः ॥६३॥ आक्षेपा दन्न वेबना दन
नरको लोको दन स्वान्तज शोहोथा दन्न मं
भ्रमा दन्नरना रंभादन शीतयोः प्रमार्त्यं

5/ ५९

ति प्रिय कथो प्रत्यंग मालिंगने प्रीति यास्य
ति रेस्यते सविसमा गन्येति चिंताकुलः ॥
सत्वो पश्यति वेपते पुलकय त्यानंदति स्वि
द्यति प्रत्यङ्गकुलि मूर्छति स्थिर तमः पुंजे
निकुंजे प्रियः ॥६२॥ त्वद्वाम्येन समं सम
ग्र मधुना निरमोस्त्र रत्नेगतो गोविंदस्य

रा गे-
गी

श्रीनन्नील निचोल चारु सहशंपे प्रत्यंग मालि
ने ॥६५॥ काश्मीर गौर वपुषा मसि साटिका
ण्ण मावद्ध रोख मसिनो रुचि मंजरीभिः ॥
एतत् तमाल दलनील तमेन मिश्रे तत्रेम
हिम निकषो पलतानतोनि ॥६६॥ राग
गंधार माल ॥३॥ अष्टपदी ॥ विर चित चा

52

५२

अनयो र्मैत्रीविलिनयो: संभाषणौ जीवनो
दयनो विह कोन कोन नमसि वीजाविमि
ओदम: ॥८४॥ प्रतणो र्मिलिए देजने प्रवेशा
यो स्तापिक्ष शकावली मूर्द्धिपाम सरोजदा
स्त्रुवयो: कस्तूरिका पत्रकम। एतो नाम
मि सार सत्वर हदो विषड्मि जेजे सखि

रा॰गो॰
गी॰

सुरुए रमणीय नरे नरुणी जन मोहन मधुरि
पु रावे ॥ कुसुम शरा सन शासन वेदिनिपि
क निकरे भजभावे ॥३॥ अनिल नरल कि
सलय निकरेण करेण लता निकुरंबे ॥ प्रेर
ण दिव कर मोरु करोति गति प्रति मेचवि
लेचम ॥४॥ सुरभिन मदेण नरंग वशा दिव

ॐ वचन रचने चरणो रचित शशि पातम ॥ स्प
ति मंजल वेजलसी मति केलि शयन मन
यातम ॥२॥ मगये मध मथन मनगत मन
मर राधिके ॥ जन जघन स्तन भार भरे दर
मन्थर चरण विहारे ॥ सावरित मणि मंज
री मपैहि विधेहि मराल विकारम ॥२॥

रा॰गे॰
गी॰

लय कणिनैव रव बोधय हरि मपि निज गति
शीलम्॥७॥ श्री जयदेव भणित मधुरी कृ
त हार मुदासित वामम्॥ हरि विनि हित म
नसा मयि निष्ठुर केन नदी मविरामम्॥८।
राग गंधार ताल॥३॥ श्लोक॥ सामान्यदय
ति वदति प्रियकथां प्रणयेन मा लिंगनै श्री

सूत्रित हरि परिरंभे ॥ एह मनो हर हार विम
ल जल धार मंमे ऊच क्रमम ॥५॥ अपि गानम
खिल सखी भिरि देनव वस रपिरनि रगा स
जम ॥ चेडि रणीन रशना रव डिंडिम मभि
सर सम लजम ॥६॥ स्मर शर सभग सखेन
सखी मवलेक्य कवेगा सलीलम ॥ चल व

रा॰ गो॰ गी॰

मामन विलंबन मन मरते हृदयेशे ॥१॥ श्रीरस
मीरे यमुना तीरे वसति वने वन माली ॥ गोपी
पीन पयोधर मर्दन चंचल कर युग शाली ॥
नाम समेते कृत संकेते वादयते मृदुवेणुं ।
बहु मनुते ननुते तन संगत पवन चलि
त मपिरेणुम् ।२। पतति पतत्रे विचलित पत्रे

ति यासयति वेपति सीव समायान्येति चिंताक
ल॰ ॥ मत्वा स्पृशति वेपते पुलकय त्यानन्द
ति स्विद्यति प्रमुह्यति मूर्छति स्थिरतमः
पुंजो निकेजे प्रियः ॥६६॥ राग गोंधार ताल
॥२॥ अष्टपदी ॥ रति सुख सारे गत मभि सा
रे मदन मनो हर वेषम् ॥ नकुरु नितंबिनि

गा॰गो
गी

परीते राजसि सुकृत विपाके ॥५॥ विगलित
वसनं परिहृत रशनं घटय जघनं मपिधानं
किसलय शयने पंकज नयने निधि मिव हर्ष
निधानं ।६। हरि रभि मानी रजनि रिदानी मि
य मपियाति विरामम ॥ कुरु मम वचनं स
त्वर रचनं पूरय मधु रिपु कामं ।७॥ श्री जयदे

शंकित भवदुपयानम् ॥ रचयति शयनं सच
कितनयनं पश्यति तव पन्थानम् ॥३॥ मु
खरमधीरं त्यज मंजीरं रिपुमिव केलिसुलोलं
चल सखि कुंजं सतिमिरपुंजं शीलय नील
निचोलम् ॥४॥ उरसि मुरारेरुपहितहारे घ
न इव तरलबलाके ॥ तडिदिव पीते रतिवि

वि

रागं
गी

समाधि समगः सन्नामपश्चन्द्रोपेत कृतार्थीना
म॥७॥ हारा वली तरल कांचन कांचिदाम
मंजीर कंकण मणि द्युति दीपितस्य॥ हारे
निकुंजनिलयस्य हरिं निरीक्ष्य क्रीडा वतीस्म
स्य सादी निजगाद राधाम्॥६८॥ रागगे
याद ताल॥३॥ अष्टपदी॥ ॥ मंजुतर

57 ५७

व हृत हरि सेवे भणनि परमाणीयम॥ ५७
दिन हृदये हरि मपि मदयं नमन सहकन क
मनीयम॥ ८॥ राग गंधार ताल॥ ३॥ श्लोक
सभय चकिते विमसंती हृशैव तिमिर पथि
प्रति रुत मुहुः स्थित्वा मन्द पदानि विनन्वे।
नी कथमपि रहः प्राप्ता मंगे रनंगै नरंगिभिः

रा॰ गं॰
गी॰

लस रति वलिनलिन गीते। ४। विलत वङ्क व
लि नव पल्लव चये। विलस चिर मल मणीन
जञ्जने। ५। मधु मदिन मधुप कल कलिन रा
वे। विलस मदन रस सरस भावे॥ ६॥ मधुर
नर पिक निकरनि नद मावे। विलस दश
न रुचि रुचिर शिखिवे॥ ७॥ विहिन पद्मा।

अंजनल केलि सदने विलस रति रभ सहसिन
वदने ॥१॥ अविश राधे माधव समीप सिह न
व भवद शोक दल मायन मारे । विलस कच
कलप नवल हारे ॥२॥ कुसुम चय रचित शु
चि वास मोहे ॥ विलस कुसुम सुकुमार देहे
॥३॥ चल मलय वन पवन सुरभि शीतेवि

गगं
गी

य वेदा मद्दे।६४॥ अहं मिह निवसामियाहि
राधा अनुनय मद्दज्जे चानयेषाः॥ इति म
युविषणा सादीनिषक्तास्वय मिद मेत्ता ए
नर्जगाद माध्यम॥७०॥ लोचितेन चिरं बहुन
य मनि श्रांतो भ्रशेनाधिनः केदर्पणाचपा
न मिच्छति स्वया सम्बाध विका यरम॥ ग्र

बनी सब समाजे ॥ भणति जयदेव कविराज

राजे ॥८॥ अष्टपदी ॥ राग गंधार ताल ॥ ६ ॥

श्लोक ॥ मान्द्रा नंद पुरंदरा दिदि विषहृदै रमेदा

दरा दानमै मजुर्टेद्र नील मणिभिः मेदाशीतैंदी

वरम् ॥ स्वछंदम्भकरंद मेदर गलन्मान्दा कि

जी मेडरं श्री गोविंद पदार विंद मशुभ स्कंदा

रा गे
गी

नव नारमपि नयोः ॥ नदानी राधायाः प्रिय
नम समालोक समये पपात खेदाम्बु प्रस
र शिव हर्षाश्रु निकरः ॥२२॥ भजेमा स्तल्पं
ते कुन कपट कराडूनि विहितः मिने यानि
गेहाद्दहिरव हिनाली परिजने ॥ प्रियाणे
पश्चेनपाः स्मर फार समा कृत सभगम्

गो कंत दलं ऊरु तणा मिह भूतेष लक्ष्मीलव
कीने दास इवोष सेवित पदां भोजे ऊनः सेभ
मः ॥७२॥ साम साधसमा नंद गोविंदे लो
ल लोचना सिंजान मंज मंज मंजीरं प्रविवे
श निवेशनम् ॥७२॥ अति क्रम्या पांगे प्रव
ण पथ पर्यंत गमन प्रवासे नैवादणो स्तरल

राग
गी

हर्ष वशे वद वदन मनेग विकासं ॥ हार ममल
तर तार सुरसि दयनं परिलंब्य विहरम् ॥
स्फुट तर फेन कदम्ब करंबित मिव यमुना
जल पूरम् ॥ २ ॥ श्यामल मृदुल कलेवर मं
डल मधि गत गौर दुकूलम् ॥ नीलनलि
न मिव पीत परागा पटल भरवल यिन मू

मलजाया लजा यगम दिव हरं सदाहशः ॥१४

यामा मेथार नाल ॥३॥ ग्रहपदी ॥ यथावद

न विलोकन विकसित विविध विकार वि

भंगम् । जल निधि मिव विधु मंडल दर्शन

तरलित तंग तरंगम् ॥२॥ हरि मेकर सं

चिर मपि लक्षित विलासम् ॥ सादर्शी गरु

रा॰गो॰
गी॰

किरणा कुरिनो दरजल धर सुंदर स कस्तूरिके
शे निमिरो दिन विधु मंडल निर्मल मलयज
तिलक निवेशे।६। विपुल पुलक भरदेनरि
ने रति केलि कला भिरयीरे। मणि गणकिर
ण समूह समुज्वल भूषण सुभग शरीरम्
७॥ श्रीजयदेव भणित विभव हि गुणी कृ

ले॥३॥ नवल दृगंचल चलन मनोहर वदनज
नित रति रागम। स्फुट कमलोदर खेलित
खंजन युग मिव शरदि जागम॥४॥ वदन
कमल परि शीलन मिलित मिहिर सम कुंड
ल शोभम॥ स्मित रुचि रुचिरम समलसि
नाधर पल्लव कृत रति लोभम॥५॥ शशि।

रा॰गो॰
गी॰

सवाच हरिः शिवाम् ॥ राग गंधार ताल ॥ ३ ॥ अष्ट
पदी ॥ किशलय शयने तले कुरु कामिनि च
रण कमल विनिवेशं ॥ नव पद पल्लव वैरण
यामव मिव मन मथन हर वेशम् ॥ १ ॥ ध्यायमयु
ना नारायण मनुगत मनु मर राधिके ॥ अव
कर कमलेन करोति चरण मस्या मागा मिना ।

न भूषण भारं ॥ प्रणमत हृदि विनिधाय हरिं
सविरं सकलो दयसारं ॥ ८ ॥ अष्टपदी ॥ राग
गंधार ताल ॥ ३ ॥ श्लोक ॥ गतवति सखी वृं
दे मंदतया भर निर्भर स्मर परवशाकृतस्फी
तस्मित स्वाधिना थराम । सरस मलसं दृष्टा
दृष्टा समदनैव पल्लव प्रसर शयने निशिमाली

रा॰गो॰
गी॰

शो विनिवेशय शोषय मनसिज नाथम् ॥४॥
प्रथर स्तथा दम मपनय भामिनि जीवय म
न मिव दासम् ॥ त्वयि विनि हित मनसे विर
हानल दग्ध वपुष मविलासम् ॥५॥ शशिम
खि मावेदय मणि रशना गुण मव गुण कंठ
निनादम् ॥ श्रुति युगले पिक रुत मम पा

सि विहरे ॥ क्षणा मुप कुरु शयनो परि मामिव
नूपुर मनुगति शूरे ॥२॥ वदन सुधानिधि गा
लित मम्दत मिव रचय वचन मनु कूले ॥ वि
रह मिवापन मसि पयोधर रोधक मुरसि दु
कूले ।३। शिथिल परि रंभण रभस वलित मिव ड
लकित मति दुस्तापम ॥ मधुरसि कुचकल

रा॰ गो॰

नाल ॥ ४ ॥ श्लोक ॥ यस्य हृदः पलको करेणा दिवि
ग्रस्तैर्वैर्नि मेषेण चकीड़ा कृत विलो किते यद
सथा पाने कथा नर्मभिः आनेदाभि गमने म
नथ कला सुद्देपि यस्मिन्नभ्र इद्भूतः सतयो
दभूव सरला रेभः प्रियं भावकः ॥ १६ ॥ सीलहृ
ष्टि मिलकपोल पलकं सीत्कार धारा वशा द

मय विगदव सादम्।६। मामनि विफल कृषावि
फली कृत मव लोकित मधुनेदम्। मीलनि
लजित मिवन यने नव विरम विरहजरनि खे
दम्।७। श्रीजयदेव कवेरिद मनुपद निगदि
त मधुरिपु मोदम्। जनयतु रसिक जनेषु म
नोरम रति रस भाव विनोदं॥ राग गंधार

रा॰ मन्मितः कचेश्वर मधस्यन्देन संमोहितः कांतः॥
कामपि त्वमि सापत दहो कामस्य वामागतिः
७८॥ वामोके रतिकेलि संकुसरणारंभोनया। सा
हस्य गायं कांत जयाय किंचिदपरि प्रारंभियन्नंश्र
मांतिस्पंदा जघनस्थली शिथिलिता दोर्वल्लि
रुत्कम्पिते वक्षोन्मीलितं मत्ति पौरुष

वक्ता ऊल केलि काऊ विक सदेना क्रयो नाथ
रं श्वासोत्कास्य वयोयरं भ्रशापरि ध्वंगान ऊरंगी
दशो हर्षोत्कर्ष विभक्त निः सहजनो यंत्यो
यय नानतम ॥ ७७ ॥ दोर्भ्यां मे यमिनः प
योधर भरेण पीडितः पाणि जैस द्विजोदश
नैः सनाथरुदः श्रोणी तटे नाहतः हसेता

रा॰गे॰
गी॰

श्रीज मपि मेउन बोत्तयानिज गाद निरावाथारा
या स्वाधीन भर्त्तिका। ८२। इति मनसा निरा दे
ने सुरतांते सानिनोन विरोगी राथा जगाद
सादर मिद मानंदेन गोविंदम्॥८३॥ राग गे
धार नालनीन॥३॥ अष्टपदी॥ कुरु यदुन
न्दन चन्दन शिशिर नरेण करेण पयोध

६७

रसः स्त्रीणां कुतः सिध्यति ॥ ७९ ॥ तस्याः पाटल
दाणि जोकित मरो निश्चा कषाये दृशौ मनिर्हू
तो धरशोणिमा विलसिता स्वस्तस्त्रजो मूर्ध
जाः कीचीदा मदरस्त्रथो चल मिति प्रोत न्नि
वोते दृशोरेभिः कामशरैस्त्रदङ्ग तमभ्रूत्प
मर्मनः कीलितम् ॥ ८० ॥ अथ कोते रति

रागे
गौ

मनसिज पाश विलास करे शुभवेष निवेशाय
कुंडले ॥ ३ ॥ भ्रमर चयं रचयंत मपरि रुचि
रं सचिरं मम सन्मुखे जिन कमले विमले
परिकल्पय नमि जन कमल कंमखे ॥ ४ ॥
श्यामदरम ललितं ललितं कुरु तिलकमलि
क रजनी करे ॥ विहित कलंक कलंक ।

२। मृगमद पङ्कमय मनोभव मंगल कलश
सहोदरे ॥१॥ निजगाद माधव नंदने क्रीडति
हृदया नंदने ॥ दयर चंचन लेबित कज्जल म
लय प्रिय लोचने प्रति काल मंजन मंजन
कं रति नायक मोचने ॥२॥ नयन कुरंग
नंदग विकासिनि वास करे अति मंडले ॥

रा॰गे॰
गी॰

यदेव वचसि जयदे सदयं हृदयं कुरु मंडने हरि
चरण स्मरण मत्र हृत कलि कलुष ज्वर खं
डने ॥ ८ ॥ अष्टपदी ॥ राग गंधार ताल ॥ ३ ॥
श्लोक ॥ वचय कुचयो: पत्रं चित्रं कुरुष्व कपोल
यो र्घटय जघने कांची मंच सृजा कवरी भ
रम ॥ कलय वलय श्रेणी पाणौ पदे ।

मलानन विभ्रमिन भ्रम भीकरे ॥ ५ ॥ मम क
चिरे चिकुरे कुरु मानद मानस जधज चाम
रे रति गलिते ललिते कुसुमा निशिखंडि
शिखंड कडामरे ॥ ६ ॥ सरसघने जघने मम
शेखर दारुण केसरे ॥ मणि रशना वसना
मदनावलि सुभाजय वासय हृदये ॥ ७ ॥ श्रीज

रा॰गे॰
गी॰

जः ॥ दथ॥ पर्यंकी कृत नाग नायक फणाः
श्रेणी मणीनां गणो संक्रांत प्रति बिंब संव
लनया विभ्रद्विभ्र प्रक्रियाम् ॥ पादो भोरु
ह आदि वादिथि हना मदगो दिष्टत्वः पातैः
कांय यद्ह मिवाचरं नव चिनी म्हूनोहरिः
पातवः ॥ ८६ ॥ त्रियकंठ विलोल मौलि

ज्ञुरु नूपुरा विनि निवादिनः श्रीनः पीतांबरो
पि तथा कपोन ॥ ८४ ॥ प्रातर्गीत निशोलम
ज्ञुतमुरः संवीत पीतांशुके राधायाश्च किते
त्रिलोका रसिनि खैरं सारी मंडले ॥ क्रीडाचे
चल मेवले नयनयो राधाय राधानने खैरं
मेर सालो उजोस्त जगदा नन्दाय नेदात्म

रागी
गी

न वेशे ॥ चलित दृगंचल चंचल मौलि कपोल
विलोल वसंतम ॥२॥ रासे हरि मिह विहित
विलासं । स्मरति मनो मम कृत परिहासं ॥
चंद्रकचारु मयूर शिखंडक मंडल वलयित
केशम् ॥ प्रचुर पुरंदर धनु रनुरंजित मेदुर
मुदिर सुवेशं ॥३॥ गोपकदंब नितंब वती

नरलोकं सम्य वेशोद्धरजीतिस्थान हृता वधान
ललना लक्षेण मेलहिताः प्रेमणा कदलि
नाः सामन्य मयो रूप लावेन्दौ सथा मारे
को मधुसूदनस्य ददम् तेमं कटाक्षोमयः॥
८॥ मता गंधार नाल॥ ३॥ ग्रहणदी ॥
मेवर दथर सथा मधुर ध्वनि मखरित मोह

रा॰गं॰

दे ॥ पीन पयोधर परि मर मर्दन निर्दय हृदय
कपाटम् ॥ ५ ॥ मणिमय मकर मनोहर कुंड
ल मंडित गंड सुदारं ॥ पीत वसन मनुगत
मुनि मनुज सुरा सुर वर परिवारम् ॥ ६ ॥
विशद कदंब तले मिलितं कलि कलुष भयं
शमयंतम् ॥ मामपि किमपि तरंगा दृगं

मावि ब्रेवन लेविन लोभे ॥ वेधु जीव मधुरा
धर पल्लव मल सिन सिन शोभम ॥ ३ ॥ वि
पुल पुलक भुज पल्लव वलयित वल्लव मव
ति मरहम ॥ कर चरणे वसि मणि गाणाभू
षण किरण विभिन्नन मिरम ॥ ४ ॥ जलद
पटल चलदिंदु विनिन्दक चन्दन विंदुलला

रागे-
गी

ईगोडसाले ॥ मामहीत्य विलजित स्मितमुखा
मुखया नने कानने गोविंदे व्रज सुंदरी गणा ह
ने पश्यामि हृष्यामि च ॥ ८८ ॥ अंतर्मोहन मौ
लि भूषित चलन्मंदार विस्रंसनः स्वाकर्ष
णा दृष्टि हर्षण मद्भा मेरे अंगीहशो हृष्यद्वान
न हृय मान दिविष्ठ वीरजः स्वापदो ॥ धेसः

७३

७२

गहशा मनसा रमयंते ॥७॥ श्रीजयदेव भ
णित मति हृदय मोहन मधुरिपु रूपं । हरि
चरणा स्मरणं प्रति मेप्रति पदमिदं वदा मनवू
पम ॥ दशाराग गेयाराग ताल ॥३॥ श्लोक ॥
हसा खस्त विलास वेशम नटन भ्रूवल्लि म
दलवी हृदोन्मादि दृगंतवी क्षिप मति हेदा

रा॰गे॰
गी॰

माधीक चिन्नान भवति भवतः शर्करे कर्करा
सिद्धाने इहांति केवा नमरते स्तन सासि क्षीर
नीरं रसस्ते ॥ माकंदे क्रंद कांता यर पर।
गीतले गन्ध यच्छंति यावज्जावं शृंगार सा
रस्वत मय जय देवस्य विष्णवस्ति ॥ २२॥
श्री भोजदेव प्रभवस्य रामादेवी सुत श्रीज

केसरिणो ब्रुवो हृयतवी श्रेयांसि वेशोरक्ताद्य॥
यक्षांपर्व कला स कौशल मन्य ध्यानंच यद्वैलवे
यत शृंगार विवेक मन्य मपि यत्काव्येष ली
लागिनेन नस्सर्वे जयदेव पंडित कवेः क्ष
लैक मनोमनः सानंदाः परिशोध येन
रचितः श्रीगीत गोविंदतः॥ ९॥ साधी

रा॰गो॰
गो॰

इति गीतगोविंद परिच्छेदः समाप्तः ॥ ॥

य देवस्य ॥ पराशरादि प्रियवर्ग कंठे श्रीगो
न गोविंद कविवल्लभस्य ॥ जगत्श्रीविमलैर्मि
हि इव मंदार कुसुमैः स्वयं सिंहरणः शिशिर
पा मदा मदिन इव ॥ भुजा पीड क्रीडा हत
कवलया पीडकरिणः प्रकीर्णा स्तनिवेर्ज
यति भुजदंडो मदजिनः ॥ ९३ ॥ इति राजगो

रा॰हो॰ हृत सहृत कामिनी ४ प्रहृह कलयामिवलया
गी॰ दिमणि भूषणं । हरि विरह दहन वहनेन वहह
षणं ५ कुसुम सुकुमार तनु मनु पारलीलया स
गपि हृदि हंतिमामति विषम शीलया ६ प्रहृमिह
निवसामिन गणित वन वेतसा । स्मरति मधु सूद
नो मामपि नवेतसा ७ हरि चरण शरणं ।

रूप मपि यौवनं १ यामिहैक मिह शरणं सखीजन
वचन वंचिता। यदनुगमनाय निशिगमन मपि शी
लितं। तेन मम हृदय मिदमसम शरकीलितं २
मम मरण मेव वरमति वितथ केतना ॥ किमिह
विसहामि विरहा नलमचेतना ३ मामहह विधु
रयति मधुर मधुयामिनी। कापि हरमनुभवति

रा॰रा॰ रागिनी राम कली ताल चर्चरी विलपद ॥
२६
मेरी मति राधिका चरण रजमें रहो ॥ इतिश्रुत्या
२६
ई इहे निहचे करयो अपने मनमें धरयो भूलिकें को
उ कछू औरहु फल कहो ॥ इतिनरा । अथ आभो
गः करम कोऊ करो ज्ञानहु अभ्यासो मुकतिकेज
तन करि दया देहो दही ॥ रसिक वलभ चरण

न क्षत कीने ॥ रागिनी राम कली ताल ८ ॥
विस्मपद माई गिरि धरनके गुण गाउं ॥ इतिश्र
स्याई मेरेनो व्रत पहै निस दिन औरन रुचि उपजा
उं ॥ इमेनरा । अथ आभोगः । खेलन औगन आ
उ लाडिलेनै कहे दरसन पाउं ॥ केभ निरा सहि
लगके कारण लाल चला गिर हाउं ॥

रा॰रा॰
२७
27

उदि वेरि मिलि मीत सौं मेरो हित वचन जिनि भूलि
फेरे ॥ रसिक प्रीतम संग विहरि रस रंग सौं कौन
डरव अनंग को सवनि वेरे ॥ रागिनी राम कली
ताल ३ विलपद ॥ वेलाल तेरी पैजनीया झन
कैंदी ॥ इतिप्रस्थाई माथेवे तेरे मुकट विराजेरी
झ खवाल लटकैंदी ॥ इतेतरा । प्रथमाभोगः भईरी

कमल जवा शरण परि यह महा प्रष्टि पथ फल
लहो ॥ रागिनी रामकली ताल ' चचेरी वि
स्वपद मानिनी मानि जिनि मोन पतो करे आप
पाइन परैं नाथ तेरे ॥ इतिप्रस्थाई दरस जाको क
रन जगतन रसे सदा सो नोर कटक तेरो वदन है
रे ॥ इत्यंतरा । अथआभोगः हौ कहति समति

रा॰रा॰
२८

वडे गोपकी वेटी ॥ क्रेभन दास गिरि धरन लाल
सौं भज श्रीफ नील पेटी ॥ रागिनी राम कली
ताल २ विस्रुषद । हो मोहन हौं हारी तुम जीते
इतिअस्थाई । नागर नट पट देऊ हमारे कांपन
हेतन सीते ॥ इंगेतरा । अथ आभोगः रसिक गो
पाल लाल अवलनि पर पनी कहा अनीते ॥ पर

चकोर चेहावलि गति मति रति अट कैंदी ॥ आसक
रन प्रभु मोहन नागर चरण कमल चित दैंदी ॥
रागिनी रामकली ताल ३ विस्नपद । हमारे
दान देरी गुजरेटी ॥ इतिप्रस्थाई नित उठि आजा
न चोरि दधि बेचन आज अचानक भेटी ॥ इतेन
रा । अथ आभोगः अति सत रातकेसे छुटोगी

रा॰रा॰
२५
29

वरस कुमारे ॥ रागिनी राम कली ताल ३ विस्त
पद। वनत नही जमुना जूकोनहैवो ॥ इतिश्र
स्थाई। चोली चीर छूसले भाजे कठिन भयो चर
जैवो ॥ इंतरा। अथ आभोगः। जोहरि हमसों
ऐसी करिहोतो इह घाटन ऐवो ॥ श्रीविठल गि
रि धरन लालसों वीनती करि चर जैवो ॥ रागिनी

मानेद प्रभु हम सब जानत तुम गालब जावत रीझे-
रागिनी रामकली ताल ३ विलपद मोहन देहो
वसन हमारे ॥ इतिअस्थाई । कहैगी जाय ब्रजपति
जूके आगे करत अनीतल लारे ॥ इंपतरा । अथआ
भोगा । तुम ब्रज राज किसोर नंद सुत सब हिनके
प्राण प्यारे ॥ गोविंद प्रभु पीयदासी निहारी सुंदर

रा॰रा॰
३॰

30

ली ॐ विष्णुपद। मनोवल्लभा धीश पद कमल प्र
गते सदा वस नमस त्रिविध रस भाव वलिते ॥
इतिश्रुत्याई। श्रम महिमा भास वासना वासिते मा
भवन्त जात निज भाव वलिते ॥ इमेनरा। श्रुतश्रा
भोगः। भजन्त भजनीय मति शयनि रुचिरे चिरे
चरण प्रगते सकल गण स्व ललिते ॥ वदन्त हरि रा

राम कली नाल ॥ विस्रपद । ग्वालिन मोराति
वसन अपाने ॥ इतिअस्थाई । सीत काल जल
भीतर दाफी आवत नाही दयाने ॥ इसंतरा ॥
अथआभोगः । तुम ब्रज राज कुमार अबल अति
कौन परी यह बानै ॥ हम सब दासी तिहारी ब
जपति तुम बड़ निपट सयानै ॥ रागिनी राम क

रा॰रा॰
३१

आवे खरि रही राम रसाभ अमेरो ॥ रागिनी राम
कली ताल २ विस्तपद। हेलीन वनि कुंजली
लारस हरित श्रीवल्लभ वनमोरे ॥ श्रेग श्रेग विप
न छिपन वन दामिनि इति फल फल प्रति दोरे॰
इत्यंतरा। प्रथमाभोगः। करत आवेस विरह
विरहनी क्रति भूतल वरुन कठोर ॥ पद्म नाभ

इतिग्रस्थाई

स इति मा भवन्त मक्त रणि भवन्त मम देव स्तन जन्म

फलिते ॥ रागिनी राम कली ३ विस्तपद ॥

श्रीमद्वल्लभ रूप सरेंगे ॥ इति अस्थाई । नव सिव

प्रति भावनके भूषण वृंदावन सेपति अंगअंगे ॥ इमे

नरा । अथ आभोगः । अरस परस गिरि धर जूकी

नाई पेन मैन ब्रज राज उछंगे ॥ पद्मनाभ देवे वनि

रा॰रा॰
३२
32

पद्मनाभ सुत हितकीयो मारग नेह मरलिका वे
ह ॥ रागिनी राम कली ताल २ द्विस्रपद ।
रुक मिनि चलन सिखावति पाइन ॥ इतिप्रस्था
१। सुतकी गाहै अंगुरिया डोलति सोभा कोटिक
भाइन ॥ इसेनरा। अथआभोगः। हुमकि हुम
कि पग धरन धरनि पर लेउ छेग उर लाइन ॥

मधुरेस विचारत श्री लछमन भट सुत ओर ॥
रागिनी रामकली ताल ॥ विस्नपद। सखि
री सोभा रस मय भाव प्रकट करि श्रीवल्लभ वर
देह ॥ इतिप्रस्थाई। अंग अंग ब्रज वधू विरहनी
व्यापी जगल सनेह ॥ इतिअंतरा। अथ आभोगः
श्रीहेदारणप देइ प्रकटित हृदे निरुद्ध कंदरा देह॥

रा॰रा॰
३३

हरय हर सूते ॥ हरगोचरः कुल विहार एव
स्थितिस्तदीये नट एव भूयात् ॥ रागिनी राम
कली नाल ॥ विस्तपद । नैन भरि देखि अब
भोन तनया ॥ इतिअस्थाई । केलि पियसौं करै
भव रत वही परे अम जलनि भरत आनेद मनया
इंगनया । अथ आभोगः । वलनि टेढी होइलेनि

हृदा वनकौ चंद श्रीवल्लभ लवे लाइ ऊल गाइन ॥

रागिनी राम कली ताल ३ विलपद । व्रजपति

वृष वल्लभे कदा नवचरण सरोरुह मीलणाय देमे

श्रीनिवस्थाई । तव नटगान वालका कदाहे सक

ल निजो गगाना सदा करिष्ये ॥ इमेनरा । अथ

आभोगः । हृदावने चारु हृद हने मन्मनो रथे

रा॰रा॰
३४

34

कहत बारंबार सबन के अधार धन निर्धनके ॥ इमो
नरा ॥ अथआभोगः ॥ लेत जसना नामदेतश्रभै
पदथोम रसिक प्रीतम प्रिया वस जो जिनके ॥

पिय कौ मोहि इन बिना रहति नहि एक छिनया ॥
रसिक प्रीतम रास करतजमुना पास मानो निहैन
न कीहौ जथनया ॥ रागिनी राम कली ताल
विसपद । श्याम सुख दास जहो नाम इनके ॥
इतिश्रस्थाई । निस दिना प्राण पति आय हियमैं व
से जोई गावे सुजस भाग तिनके एहि जगमै सार

रा॰रा॰
३५

कृष्ण दास प्रभु गिरिधर न पर वारि डारौं तन मन ॥

रागिनी राम कली ताल ३ षट्पदी कृष्णजीके ॥

निपट छोटे कान्ह सुनि जननी कहै बात ॥ इनिश्र

स्याई होत जब समुदाइव करत तब सिस भाइ एको

तपाइकै नैन भरि मसि कात ॥ इंपनरा प्रथा प्राभो

गः देखि रस रीतिकी प्रीति विपरीति गति मति मान

रागिनी राम कली ताल ३ षट्पदी ॥ बोलत कोक

कला निधान ॥ इतिश्रुस्थाई मम वचन सुनि उठि च

लहि सखि छाडि सुंदरि मोन ॥ इत्यंतरा॰ अथ आभोगः

नव नाम सहित निकुंज महं पीय करत मुरली गान ॥

केलि कौतुक रसिकनी प्रियसु निहिदे किति कोन ॥

सेस रजनी विसत उडु पति जनु कि भयो विहोन ॥

रा॰रा॰
३६

स्याम सुंदर रैनि कहो जागे ॥ इतिश्रस्यारि देखि वि
न गुण माल अधर अंजन भाल जावक लगो
गाल पीक पागे ॥ इतेनरा ॥ अथआभोग बाल
उगा मगी अति सिथिल अंग सबतो नरे बोल
उर नख नि दागे ॥ गड्यो केकन पीठ निपट विहू
वल दीठ सबैरी लालनही पलक लागे ॥ कहिये

छाडि संग लगी रहौ निसि प्रात ॥ जातनही विसरि
देखि बहुत जतन धरि समझि कहै चंद देखैं कमलहू
विगसात ॥ डरत चूंघ रजवै लाल जस मति हूंदे उझकि
धसि धरनि पांउ धरि सब किलकात ॥ मनहुं आषाढ
घन बादरी सुरत जि होत आनंद सब फूल अति जल
जात ॥ रागिनी राम कली ताल ४ ॥ षट्षटी

रा॰रा॰
३७

पटी पलटि परे पट अट पटे आभरन ॥ सिथिल अंग
अंग सबहिं देखियत निसाके जागरन ॥ नवसिया
संग प्रहर आरो पलन पाए परन ॥ बनभंज प्र
भुजी तिर तिरन कियो रति पति शरन ॥ ॥

रागिनी राम कली ताल ३ षट्पदी ॥ मोहन ब
सन हमारे दीजे ॥ इतिअस्थाई वारनै जाउ सुनो नंद

सोचि बात काहे जीय सकुचात कौन त्रिय जाके अंग

रागा रागो ॥ दास कुंभनलाल गिरि धरन पते पर क

रन कूंढी सोह मेरे आगो ॥ रागिनी राम कली

ताल ३ षट्पदी ॥ भले आए भोर गिरिवर धरन ॥

इति अस्थाई अरुण नैन जंभात आलस धरन उग

मगो चरन ॥ इत्यंतरा अथ आभोगः पाग लट

रा॰ रा॰
३८

38

रागिनी राम कली ताल ३ सूलफाखता षट्पदी

लालन जागत रैन बिहानी ॥ इतिप्रस्थाई ॥

देखत पथ अविश्रो अति झारी कहो लाल रति

मानी ॥ इत्यंतरा ॥ अथ आभोगः कटो का

लकेहि लाल सखिन संग एरब विविध कहानी

रंग अनंग सुरत चित आवत छतियो अधिक पिरा

नेदन सीतल गत तन भीजे ॥ अथ आभोगः कौ
न स्वभाव हृथा अन औसर इनवानन कैसैं जीजे ॥
स्वनि डरवपावे व्रज महर जसो मति जाइ कहै अब
हीजे ॥ एसब अवला जल मोज उचारी दारुण डरव
कैस सहीजे ॥ प्रभु बल राम हमदासी निहारी जो
भावे सो कीजे ॥ इति आभोगः ॥ ॥

रा॰रा॰
३९

39

होरें आवज सभा जुरि रही निकसि बैनहि पाउ ॥ वि
न गपे पति वनै छुटे हसे गोकुलगाउ ॥ श्यामगा
न सरोज आनन ललित लेले नाउ ॥ सुरहि ल
गन कठिन मनकी कहो काहि सुनाउ ॥

रागि रामकली ताल ३ ॥ षट्पदी । लाल रस
मसे नैन आज निसि जागे ॥ इतिअस्थाई अति वि

नी ॥ भोरभये आप मोरे गृह देखन सखी हिरानी

रसिक प्रीतम दोऊ अविवेकी अरुण भए कहो क

हाँ निसि रानी ॥ रागिनी रामकली तालझप ३

षट्पदी ॥ किहि मिस जसुमती के जाउ ॥ इति

अस्थाई ॥ सकल सुख निधि सुख निरखि के नै

न तृषा बुझाउ ॥ इति तरा अथ आभोगः ॥

२ प २ प २ म २ ग २ रे २ सा

ग॰ग॰ वि कर आवो ॥

४॰

40

साल अर साल अरुण भए रति रनके रंग पागे ॥

इतोतरा । अथ आभोगः सुंदर श्याम सुभगता

अटपटी अंग अंग नख सत दागे ॥ मानहुं कोप

नि दरि सन्मुख मरमाथ भए अरिभागे ॥ वनहुं

भुज प्रभ गिरि धरन अधिक छवि वदन भ्रकुटी

टीलागे ॥ मानहुं मन्मथ चाप भेट धरि रह्यो जो

रा॰रा॰
४१

सबके प्रभु दरस दीजे अरुन कीरन छई ॥ ॥
रागिनी राम कली ताल ४ षट्पदी मैया तेरे
लालको माख देखनहो आई ॥ इतिप्रस्थाई का
ल्हि माख देखि गई दधि बेचन जातहि गयोहे वि।
काई ॥ इंपतरा प्रथमाभोगः दिनतें हूनौ दोम
लाभ भयो गाइनि वछिया जाई ॥ आईसबे छोभा

रागिनी राम कली ताल ३ षट्पदी कृष्णजीके

मोहन जागिहौं वलि गई ॥ इतिश्रस्थाई ग्वाल

वाल सब हार काफे वेर वनकी भई ॥ इंगेतरा ॥

अथ आभोगा पीत पट करि हरखवतै छाडि दे अर

सई ॥ अति अनेदिन होत जसुमति देखि इतिनित

नई ॥ जागो जेगम जीव पशु खग और व्रज सबई ॥

रा॰रा॰
४२

42

आभोगः गलीजसोकरी एकजनीकी भेट भयो भ
ट भेरो ॥ अंकदे चली सयानी ग्वालिन हरिकौ वद
न फिरि हेरो ॥ आनही मेगल भयो सखीरी कैहै स
ब काज भलेरो ॥ परमानंदप्रभु सरव निरखन मि
टो भव सागर फेरो ॥ रागिनी राम काली ॥
ताल २ षट्पदी ॥ हौं वलि वलि जोउ कलेउ

य माथ की गिरि धर देऊ जगाई ॥ सुनि त्रिय
वचन विहसि उठि बैठे नागरि निकट बुलाई ॥
परमानंद सयानी ग्वालिन चली संकेत बनाई ॥
रागिनी रामकली ताल ३ षट्पदी ॥ लाल
को दरसन भये सवेरो ॥ इतिप्रस्थाई वडनला
भ पाउंगी माई दह्यो विकेहै मेरो ॥ इत्यंतरा ग्रथ

रा॰रा॰
४३

43

जे ॥ रागिनी राम कली ताल ३ षट्पदी ॥

जयति आभीर नागरी आन नाथे । जयतिव्रज राज भू
षण जसो मति ललित देतन विनीत मिश्री सुहाथे॰
इतिश्रस्याई जयति पात परभात दधि श्रीदामा
संग अविल गोधन हेद चरै साथे ॥ इत्येतरा ॥
अथआभोगः ठोर रमणीक हेदा विपिन सुभस्थल

कीजे ॥ इतिश्रस्याई खीर खांड चून अति मीठो
है अबको कोरवछ लीजे ॥ रंगनरा ॥ अथआभो
गः वेनी वढे सुनो मन मोहन मेरो कह्यो जो पनी
जे ॥ ओहो हूथ सय थोरी को मान चूंट जो पीजे ॥
हौ वारीया वदन कमल पर प्रेचरा प्रेम जल भीजे ॥
वहुरौं जाय खेलो जमुना तट गोविंद संग करि ली

रा॰रा॰
४४

वि मुदित भई मनहि मन कहति आये वचन भयो
प्राना ॥ इत्यंतरा । अथ आभोगा । नैन अरु मान
अति वार वार जेभात कंठ सो लगि जात हरष गा
ना ॥ वदन पौंछियो जमुन जल निसों धोइके क
हो मुख काइ कछु खाइ ताना ॥ दूध औटौ औनि
अधिक मिश्री सानि लेइ मोरवन पानि प्राण दाना॰

सुंदरी केलि गुण गूढ गाथे ॥ जयति नवनि जा न
ट निकट रास मंडल रच्यो नन्नता थेई थेई नन्नता
थे ॥ चतुर्भुज दास प्रभु गिरिधरन बहुरि प्रवश्री
विट्ठल प्रकट ब्रज कियो सनाथे ॥ रागिनी राम
कली ताल ॐ षट्पदी ॥ लालहि जगाइ ब
लिगई माता ॥ इतिप्रस्थाई निरखि मुख चंद छ

रा॰रा॰
४५

तनी अंगकीगति देखि जीयत जानी ॥ उपटि
केकन पीठ वक्र विह्र वल दीठ ईठ लालची लुभानी॰
पाणि पल्लव अधर दसन सो गहि रही अरथ बेन
बोलि वचन हार मोनी ॥ सूरप्रभु अंक भरी प्रीता
पति नागरीन बल नागर उरझालि मोनी ॥
रागिनी राम कली ताल २ षटपदी ॥ जैये न

सूर प्रभु कियो भोजन विविध भांति सौं पियो पय

मोद करि चूट खाता ॥ रागिनी राम कली ताल

ऊ षट्पदी ॥ राधिका श्याम जन देखि मुसकानी ॥ इतिअस्थाई । हार बिन्दु गुण लेख अधर

अंजन रेख नैन नेमोर बन गात बानी ॥ इतिअंतरा

अथआभोगः ॥ पाग लट पटी बनी उरह छूटी

रा॰रा॰
४६
46

ब्रज बिथनमें कौनसी नारि वह जाके तुम लाल
अब रागा रागे ॥ वनभंजन दास प्रभु गिरि धरण
काहे कौ करत जूठी मोह मेरे आगे ॥ रागिनी
राम कली नाल ३ षट्पदी ॥ नैन उनीदे
भए रंग राते ॥ इतिअस्थाई मनहु गुलाल
कुसुम पर सजनी फिरत भ्रंग मद माते ॥ इसे

हो जहो रेनि जागो ॥ इतिश्रुस्याई । बनी बिन
गुणमाल श्रीद अंजन भालसें उर लगणो गेड पी
कपागो ॥ इमेनरा । अथश्राभोगः । आरक्तनै
न अति सिथिल सब अंग गति उग मग नग बिन
हो पलक लागो ॥ चपल बानर फीट उपटि केक
न पीट देखियत उर मोजन खन दागो ॥ सकल

रा॰रा॰
४७

मन मृग वेधौं मोहन नैन बानसौं ॥ इति अस्थाई ॥
गूढभावकी सैन अचानिकन किनारौं भ्रकुटीक
मानसौं ॥ इंतरा । अथ आभोगः ॥ प्रथम नाद
वल वेरि निकटले मुरली समक सर वेधानसौं ॥ पाछे
वे कविनै मधुरे हंसि चात करी उलटी सतानसौं ॥ च
तुर्भुज दास पीर पातन को मिटतन औषध आनसौं ॥

नरा। अथ आभोगः प्रेम पराग पोखरी पल दल
प्रफुलित मदनल नाने ॥ सदा सुवास विलास वि
लोकनि प्रकट प्रेमके माने ॥ नैसिये मारुत मंद
जन्हा वरि मिलत सुदिन छवि नाने ॥ सोचे सूर
श्याम मानिनि निज हित करिकेलि कलाने ॥
रागिनी राम कली ताल ४ षट्पदी कृष्णजीकी

रा-गा
४८

ते चिते सि खन नरा खति कंठ लगाइ सुंदर श्याम सु
भग मंडुवा नीलत पान मोगिन वनीत खोत भ
जन भाव जैसे जनावत वाल खग ॥ चतुर्भुज प
भ गिरि धरके वाल विनोद नेद मात देखि ढाफे
दगदग ॥ रागिनी राम कली ताल ३ षट्ट
दी उपमा धीरज तज्यो निरखि छवि ॥ इतिप्रस्था

कैकै सखे नवहो उर अंतर आलिंगन गिरिधरसु जो

नसौं ॥ रागिनी रामकली ताल ८ षट्पदी ॥

अंगुरिया छाडिरे गति अरगा थरगा ॥ इतिअस्थाई

नूपुर बाजत त्यौंत्यौं धरणी धरत पगा ॥ इत्यंतरा ॥

अथ आभोगः कबहूं कजसौंदा माहिं भुज पसारि

हंसि उगा मगाइकै उलटिदगा॥ जननी मुदित मन वि

रागिनी राम कली ताल ८ षट्पदी । ढांढोरीव

रिक माई कौन को किसोर ॥ इनिभ्रस्याई सांवरे ब

रन मन हरन वेसी धरन काम करण केसी गति जोर

इसेनरा । अथ आभोगः पवन परसि जान चपल हो

न देखि पियरे पटको चटकीलो छोर ॥ सुभग सो

वरी छोटी उटाते निकसि आई वेकुवीलो छटा कौ जै

ई कोटि मदन अपनौ बल हारयो केउल तेज छपो
रवि ॥ इत्येतत्। अथ आभोगः खंजन मीन मृग
जहँ जेते दीनरहे कौ हूँ दवि ॥ गिरिधर पटन रहे
महिल जावन सकुच तनहीं खोटे कवि ॥ ईषद हा
स दसन इति निरषत वज्र सिखिरस कजानें सुरपा
मलीला वपुका छियो पट नर मेटि विरानें ॥

रा॰रा॰
५०
50

इत्येतत्। अथ आभोगः। सब बतराई विसरि जातहै
खान पानकी तात ॥ बिन देखे छिन कलप परतहै प
ल भरि कलप विहात ॥ इति भामिनिके वचन सुनो
हर सखि मन अति सकुचात ॥ बनभंजन प्रभु गिरि
धरन लाल सेवा सदा बसो दिन रात ॥ रागिनीरा
मकली लाल ५ षट्पदी । बनवर चारु बेड़ा वली

सो छबीलो ओर ॥ सुछुति पाछनी स्वारि हाहा होमे
री आली कहा नाउ कोहै चित चित को चोर ॥ नेददा
सि जाहि वाहि चकचौंधी आइ जाइ भूल्योरी भवन
गवन भूल्यो रजनी भोर ॥ रागिनी राम कली ताल
षट्पदी । करत हो सबे सयानी बात ॥ इतिश्र
स्याई जोलौं देखे नाहिन सुंदरि कमल नैन मसिकात

रा॰रा॰
५१

ल मुरलि का ढाढ मोरे ॥ सुनि कुल दास सुभ लग्न वह
धन बरी लाल गिरिधरन सौं हाथ जोरे ॥ रागिनी
राम कली नाल २ षट्पदी । देखो मेरे भागाकौं सु
भ बरी ॥ इतिश्रस्याई । नवल रूप किसोर मूरति के
ढ लेभुजधरी ॥ इमेनरा । अथश्राभोगा जाके चरण
सरोज गंगा शेभले सिर धरी ॥ जाके चरण सरोज प

मुख चकोरे ॥ इति प्रस्थाई अन्तरे चरण रति अज
जवति भूषणो कमल लोचन नंद नृपकि सोरे ॥ इते
नरा । अथ आभोगः । मोनि मेरो कह्यो अति साल र
सरीति कौं करावति सखी वहनि होरे ॥ मिले किनि
धाइ अब कुंवर चूडारत्न रसिक वर भूपाल चित्त तो
रे ॥ नव रंग कुंज महेन वनो महित नाथ कृपानत क

रा॰रा॰
५२
52

रहनी करि कानि ॥ अब हम पैकौ सहीपरनि है
मणि मानिक की हानि ॥ उह विवेक वचन चा
तरी सर्वस लियो छुराय ॥ सूरदास प्रभुके गुण
औगुण कासौं कहिये जाय ॥ रागिनी राम क
ली नाल गीत षट्पदी । धन यह राधिका के
चरन ॥ इतिअस्थाई । सुभग सीतल अतिस

र सत सिलास नियेन नरी ॥ जाके वदन सरोज निर
खत आस सगायी मरी ॥ सूर प्रभुके सेग विल सत स
कल कारज सरी ॥ रागिनी राम कली ताल ३ षट्
पदी । गोपाले माई वारे हीनैं टेव ॥ इतिप्रस्थाई ॥
जानौं नही कौन पैसीखे चोरीके छल छेव ॥ इतेन
रा । अथ आभोगः कवहूंक डरते माखन खाते सुनि

रा॰रा॰
५३

ल गीत षट्पदी । धन यह राधिकाके चरन ॥ इति
अस्थाई । सुभग सीतल अति सकोमल कमलके
से वरन ॥ इमेनरा । अथआभोगः । नख बेइ चा
रु अनूप राजत विविध सोभा धरन ॥ झांझन नू
पुर कंज विहरत परम कौतुक करन ॥ रसिक ला
ल मनमोद कारी विहर सागर तरन ॥ विवस

कोमल कमल केसे वरन ॥ इतिश्रेनरा । अथा
आभोगः । नखचंद्र चारु अनूप राजत विविध
सोभा धरन ॥ झणित नूपुर कंज विहरत परम
कौतुक करन ॥ रसिक लाल मन मोदकारी वि
हर सागर तरन ॥ विवस परमानंद छिन छि
न श्यामजीके शरन ॥ रागिनी राम कली ता

रा॰रा॰
५४
54

ग्राम जीतो बांधि अपनी पवन ॥ सूरके प्रभु नयन
नारन राखि अपनी शरन ॥ रागिनी रामकली ता
ल ३ षट्पदी ॥ वहू जोत वहि मान यरि आवे ॥
इतिअस्थाई। सुंदर श्याम बहुरि मनभावे कै अंबुज
वदन दिखावे ॥ इसेनरा। अथअंतरा। तब
लग मान करहु कोऊ कैसें जब लग वह दरसन न

परमानंद छिन छिन श्याम जीके शरन ॥ ॥
रागिनी राम कली ताल गीत षट्पदी । बढि बढि
बान लागो करन ॥ इतिश्रस्थाई । श्याम सुंदर मद
न मोहन आए तेरे चरन ॥ इत्यंतरा । अथआभोगः
उदिम उपर विकर छूटे विकर उपर छूरन ॥ काम
को दल साजि आई आउ देदे लरन ॥ विहर को से

रा॰रा॰
५५

55

किनि रुन झुन बानी ॥ इमंतरा । अथ आभोगः
सुतके कर्म गावति आनंद भरि बाल चरित्र जानि
जानी ॥ श्रम जल बूंद राजे वदन कमल परमन
हंस सरद बर खानी ॥ प्रेम सनेह बुचात पयो धर
प्रमुदित अति हरषानी ॥ गोविंद प्रभु छुट रुन
चलि आए पकरि रई मथानी ॥ रागिनी राम

हि पावे ॥ दृष्टि परमेन मधु कर तिहिं छिन सहज
सरोज हि पावे ॥ त्रिभुवन मोज होउ वदै जवति
आरज पथहिं दृढावे ॥ क्रेभन दास प्रभु गोवर्द्धन
धर कल मरजादा छावे ॥ रागिनी राम कली ता
ल ॥ षट्पदी । अहो दधि मथति घोषकी रानी ॥
इति अस्थाई । दिव्य चीर पहरे दक्षिन को कटि किं

रा॰रा॰
५६
56

प्यारी तनतैं ॥ रसि कट रोजिनि दमा श्याम की कव
ङ्के मेरे मनतैं ॥ रागिनी राम कली ताल षट्
पदी । चरण कमल की चेरी तेरी छाउङ्ग लालनंद
के ॥ केसोहे दोन कहा किवि लीयो दीयोन कवङ्के
वचन वदन अर विंदके ॥ देखन सखा सखी जन
सगरी चरित चपल अज चंदके ॥ लाल नस कवन

कली नाल ॐ षट्पदी । लटकत श्रावन कंज भव
नैं ॥ इति श्रस्थाई । फरि फरि परत राधिका ऊ
पर जागर सिथिल गवनैं ॥ इत्येतरा । श्रथ श्रा
भोगः । चौकि पवन कवङ्के मारग विच चले सुगो
ध पवनैं ॥ भएउ सास भरम राधाके सङ्कच न
सो सरवननैं ॥ श्रालस मिस मारे नहो नहेने ऊन

रा॰रा॰
५७

57

रागतरा । अथआभोगः ॥ सुंदर श्याम कमल
दल लोचन हमहूं दासी तिहारी ॥ जो कछु कहो
सोई हम करिहैं चरण कमल परवारी ॥ प्रेम प्रेम
केपत मन मोहन विनती सुनहु हमारी ॥ सूर
दास प्रभु रसिक सिरो मनि तुम जीते हम हारी ॥
रागिनी राम कली ताल षट्पदी ॥ चर्चरी ।

अंचरापै चन पारन पावन विविध अट पटे फेटकी।
मटकी खसत हसत सब ग्वालिनि निरखति हारे
छेटके ॥ रसिक सदा मन बसो विविध गुण रस नि
धि आनंद केटके ॥ रागिनी राम कली ताल २ षट्
पदी ॥ हमारो अंचर देहो मुरारी ॥ इति अस्थाई
लेकर चीर कदम पर बैठे हम जल मोज उघारी ॥

रा॰रा॰
५८
58

दि वज्रनक्र प्रत वासना भेरा भव जलधि तरणे ॥ वद
न हरि राम इति निज वरण माव कृत गोकुला धीश
पद कमल वरणे ॥ रागिनी राम कली ताल
षट्पदी । वर्वरी । जयति राधिका रमण वरचरण
परिचरण रति वल्लभा धीश सन विट लेशे ॥ इतिश्र
स्याई ॥ दास जन लौकिका लौकिके सर्वथा कैवचि

रुचिर नरु वल्लभा दीश चरणो ॥ श्रनिश्रस्थाई । श्रस्तमे
सर्वदा सुंदरा कृति जगन्मोहने हृदि हृता विहित कर
णो ॥ श्रंतरा । श्रथश्राभोगः विहित माया वादवा
दि देव जादि जन संगज निनाम जनकु मति हरणो·
श्रविल साधन रहित दोष शत कलष मति विमति
भर भरित निज दास शरणो ॥ श्रंजसा कामको पा

रा॰रा॰
५९
59

रि हास गति निज बलेशे ॥ रागिनी रामकली ता
ल ॐ षट्पदी ॥ श्रीगोकुल नाथ निज वपुथ
सो ॥ इतिश्रस्याई। भक्त हेत प्रकटे श्रीवल्लभ ज
गतै तिमिरज हरयो ॥ इत्यंतरा। अथ आभोगः ॥
नंद नंदन भए नव निधि गोप ब्रज उदयो ॥ नाथ
विट्ठल सवनकै के परम हित अन्न हरयो ॥ अति अ

नो दयति हृदय देशे ॥ इत्येतत् । अथ प्राभोगः ॥ स्था
पयत मानसे सतत कृत लाल सेसहज सुष मारु चिर
रूप वेशे ॥ भाल गत तिलक सदा दिशो भास हित
मस्तका वह सित कुल केशे ॥ सहज हासादि युत
वदन पंकज सरस वचन रचना परा जित सुदेशे ॥
अखिल साधन रहित दोष गन सहित मति दास ह

ग॰ग॰
६॰
60

गाय अपार भव निधि नारि अपनौं करयो ॥ दास मा
धव राम देव चरण शरण परयो ॥ रागिनी राम
कली ताल षट्पदी ॥

रा॰रा॰
४३
43

ग्वाल बाल खेलन कौ गोरेभन हू होइ ॥ ब्रज ज
न सब ढाफो मुख देखन प्रति आरत सब कोइ ॥
उठि बैठे लए गोद जसोदा सुंदर सुत तिहू लोइ ॥
रसिक प्रीतम लगि गयें जननि के मोगान रोटी रो
३ ॥ रागिनी रामकली ताल ३ अष्टपदी ॥
डगमगा चलति अब रही भोति ॥ इति अस्थाई

रागिनी राम कली नाल ३ अष्टपदी ॥ भोर
भयो जागोहो ललना कहा नम अजहूं रहेहो सोइ
इतिअस्थाई पीओ धार अपनी थोरी की जैसें देह
बल होइ ॥ इसंतरा अथ आभोगः बैनी गुहे देउ
दृग अंजन मसि बिंदुका साव थोइ ॥ हसत वदन
स सदन निहारौं नान्हो नान्हो दतियो दोइ ॥ देखत

रा॰रा॰
६४
64

नेद कुमार सरन सेग लीनें सरद विमल की रानी॰
कुल दास गिरिधर पियके सेग अथर सुधारस
मानी ॥ रागिनी राम कली ताल ८ अष्टपदी॰
मवालिन पिछवा रेकै बोल सुनायो ॥ इतिप्रस्था
ई। कमल नैन हरि करन कलेउ कौरन मखवलौं
आयो ॥ इत्यंतरा। अथप्राभोगः। मैया एक गा

तवनि कुंजते राधा भामिनि प्रकुण उदैचर जाती

इमेनरा । प्रथप्राभोगा । रतिकी कलि सुमिरि

सुग नैनी बार बार सुस काती ॥ वदन जोतिने

सुनिरी भामिनि मेटत उड पति कांती ॥ निसके

चिन्ह प्रकट देखि यतहैं काम केलि कल काती ॥

प्रीतम प्राण रतन सेपट कुच भेटि जग ईकाती ॥

रा॰रा॰
६५
65

नीरवालिन उलटि श्रेक गिरि धर पिय पायो ॥
रागिनी राम कली ताल ३ अष्टपदी ॥ मोहन
ननिक देरी माय ॥ इतिश्रस्याई ननिक कर परन
निकरोटी मोगन चरण चलाय ॥ इत्यनया । अथश्रा
भोगः । कनक भमि परननि करेषा करन पकरौ
धाय ॥ कंपियो गिरि मेस मंकौ दधि हेन श्रकलाय॰

य वन आदि वस्त्रा काई वसायो ॥ वेनु नल ईल ऊ
ट नहि लीनो अरवराय कोउ सखान बुलायो ॥ च
कित नैन चहूं दिस चित वन सत्य ईहे किधौं सप
नो पायो ॥ फले अंगन मानर सिक वर त्रिभुवन एर
रस कुंजनि छायो ॥ मिलि बैठे संकेत सदनमै
विविध भांति कीनो मन भायो ॥ परमानंद सया

रा-रा
६६
66

बोरि मन मोरवन जो मेरे धन होरी ॥ इमेनरा। अथ
आभोगः। बोधो कंचन बिंब कलेवर उभय भुजा द
ग डोरी ॥ राखौं कठिन कठोर कुचन बिच सकेन
कोउ छोरी ॥ अधर दसन खेडौंरस मोरस कुवेन का
ऊ कोरी ॥ काम देउ देखो पर चर को नाउन लेइव
होरी ॥ नवकुल कोनि आनि निरछो भई तमा अ

मेरे मनके तनिक मोहन लागो मोहि बलाय ॥ तनि
क मुख परत तिक बतियो बोलतहैं नतराय ॥ जस
मतीके प्राण जीवन धन लीयो उरल पटाय ॥ नेद
ऊवर गिरि धरन ऊपर सूर बलि बलि जाय ॥
रागिनी राम कली ताल २ अष्टपदी ॥ आज ह
रि पकरण पाए चोरी ॥ इनिग्रस्थाई लेगयो चोर

रा॰रा॰
६७

कोरे लगि देखो मेरी बातन आयो ॥ वेनीकी कर
गही चामटी छुछट माज दर वायो ॥ मत रोको नम
सौ कौन कहतहै लेउ छंगा ऊल गायो ॥ श्रीमुखतै
उघरि गई ढेदतियो नवहेसि कंठ लगायो ॥ परमा
नंद प्रभु प्राण जीवन धन विसद विमल जस गायो ॥
रागिनी रामकली ताल गीत पृष्ठपदी । मोहि द

प राय किसोरी ॥ शिव पर हाथ धराइ सूर प्रभसो
च सौंच सिर फोरी ॥ रागिनी राम कली ताल २
अष्टपदी । माखन चोरीमैं पायो ॥ इतिअस्थाई
जैयत कहो जोन कैसे पैयत बहुत दिन नही खोयो
इत्यंतरा । अथआभोगः । हौंज कहतिही होत कहा
है नित उठि भाजन लगान कुलायो ॥ बहुत बार

। ताल ३

रा॰रा॰
६८
68

श्रीजमुनाजी तिहारो दरस मोहि भावै ॥ श्रीगोकु
लके निकट बसतहै लहरनकी छवि आवै ॥ सुख
करनी दुख हरनी श्रीजमुना जोजन प्रात उठिन्हावै॰
मदन मोहन जूकी खरी पियारी पटरानी जूकहावै॰
वृंदा वनमै रास रच्योहै मोहन मुरली बजावै ॥ सूर
दास प्रभु तिहारे मिलन कुं वेद विमल जश गावै ॥

यि मयन देव लिगई ॥ जाउ बलि बलि वदन उप
र छाडि मया नीरई ॥ इतिश्रस्याई लालेदेइ नव
नीत लौंदा आरिकि नव मटई ॥ इत्येतरा। अथश्रा
भोगः सनेहेति विलोकी जसुमती प्रेम पुलकित
भई ॥ लेउ छेगलगाय उरसौं प्राण जीवन जई ॥
बालकेली गोपालकी ब्रज ग्राम करत नितनई ॥

रा॰रा॰
६९

रि मजनकीनो प्रथम हेमंतके मास ॥ पवरहोइ
नंद सुत मेरे व्रत दासौं इहिं आस ॥ नवही चीर ह
रे हरि नागर चढ़ि कदमकी डारि ॥ परमा नंद
प्रभु वर देवे कोउ यम कियो मुरारि ॥ रागिनी
राम कली ताल ३ अष्टपदी । ग्वालिनि अपनें
चीर लेइ ॥ इतिअस्थाई । जलतें निकारि निकट

रागिनी रामकली ताल ३ अष्टपदी । हरि जस गा
वति चली ब्रज सुंदरि श्रीजमुना के तीर ॥ इतिअस्था
ई । लोचन लौंने बाहु जोटि करि श्रवणनि जल कन
वीर ॥ इतिनरा । अथ आभोगः । वेनी सुथिर चारु
कोथेपरे कटि तट अंबर लाल ॥ हाथनि फूल लीयें
उलीया भरि अरु मुक्ता मणि माल ॥ जल प्रवेश क

रा॰रा॰
७॰

70

सहज स्वभाव हमारो कत डर पति हो काम भय ॥ के
सीये भांति भजे कोऊ मो जेते सबे संसार जय ॥
रागिनी राम कली ताल २ अष्टपदी ॥ स्वमि
रो श्रीविट्ठलेश कुमार ॥ इति अस्थाई । अति अ
गाध अपार भव निधि भयो चाहो पार ॥ इति अन
रा । अथ आभोगः । मैवलि रहत करुणा सिंधु

कै दोउ कर जोरिकै सीस देइ ॥ इतोनरा । अथ आ
भोगः । कतहो सीत सहत ब्रज सुंदरि होत अति
त कृस गात सबे ॥ मेरे कहे आनि पहिरो पट इन
नो अंग विथि हीन अबे ॥ होअंतर जामी जानत
सबनकीकत डरा वन लाजकै ॥ करिहो हरन
काम कृपा करि सरद समें ससि रानके ॥ संतन

ম-ম-
৩২
7/

कोमल सदाचित उदार ॥ गोकुलेश हृदे वसो म
म मल पाल निहाल ॥ माल तिलक नत जीनक
ई परी जदपि प्रकार ॥ प्रेत भकत दीयो धीरज भ
ए पद दातार ॥ चारजुगमे विसद कीरति भक्त
हित अवतार ॥ नव किसोर कल्यानके प्रभुगा
ई बारंबार ॥ रागिनी राम कली नाल ।अथ

रा॰रा॰
७२

72

गोप गोपीनवल प्रेम रति वेदिका तट मदित रहत
जैसैं चकोरी ॥ लहरि भावरि ललित वलका स
भग ब्रज बाल ब्रत हरना रास फलदा ॥ ललित
गिरि वर धरन श्रीयक लिंदनेदिनी निकट कूल दा
स विहरत प्रवलदा ॥ निरखि हरखि ब्रज जुवति
ओष मगारि ॥ थकित जिन तित प्रमर मुनि गन

रागिनी राम कली ताल ४ अष्टपदी ॥ नमोनमो नि
न नया परम पुनीत जग पावनी कुल मन भावनी
कविर नामा ॥ इति अस्थाई अखिल सुख दाइनी स
ब सिद्धि हेत श्रीराधिका रवन रति करन श्यामा ॥
इंतरा । अथ आभोगः । विमल जस वन नवका
नन्दो मोद पुत पुलिन अतिरम्य श्रीय ब्रज किशोरी ॥

रा॰रा॰
७३

73

नेज उतारि ॥ केढसी पजनील मणि मय माल रची
से वारि ॥ नील गिरि वर गरल मानों लाय लई म
दनारि ॥ वदन रजतन श्याम मंडित शोभ इहि भुज
हारि ॥ मनहु प्रेम विभूत राजत शंभु सोई मधुहा
रि ॥ विदम पति जस मनि के आगें प्रसन कौं करे
आरि ॥ सूर दास विरंचि जाको जपत जस सुख आरि॰

नेद लाल निहारि ॥ बिन बयन सिरके सलट बडे रि
सा छटकी जारि ॥ सीस पर जानो जटा धरि सिव
रूप कियो बिपरारि ॥ रुचिर रचित ललाटके सरि
बिंदु सोभा कारि ॥ रोस मनज्ञ त्रतीय लोचन रहे
रिपु जन जारि ॥ कुटिल हरित बेहिये हरिकें सुभ
ग इहि प्रन हारि ॥ ईसजन रजनी सराम्यो भाल

रा॰रा॰
७४
79

य ॥ उरत लालन झलत पलना खेरेदेत झलाय॰
जमला अंजन नोरि नारे हृदे प्रेम बढाय ॥ झटक
नात पलास पलव देझ देत दिखाय ॥ कीर पिंजरा
देत अंगुरी लेत श्याम भजाय ॥ बका सुरकी चोंच
फारी दृष्टि अब रज लाय ॥ विनाहीपक सदनमें
हरि नेक परतन पाय ॥ अचा सुर सब पेटि तिक

रागिनी रामकली ताल ३ अष्टपदी ॥ बलि ब
लि चरित्र गोकुल राय ॥ इतिअस्थाई । दावा नल
को पान कीनो पीवत हूथ सिराय ॥ इसेनरा । अ
थआभोगः । हनुनाके प्राण सोवे रहे उरल पटा
य ॥ कहति जननी हूथ डारत खोजि कछु वन
बोय ॥ त्रिणा वर्त अकासतैं गहि सिलाप टकरो आ

रा॰रा॰
७५
75

लागत पाय ॥ चोष नारिन सेग मोहन रह्यो रास व
नाय ॥ कहति जननी आइकी तव लजत वदन उ
राय ॥ वृषभ भंजन हतन कैसी हम्यों पुछ फिरा
य ॥ भजन सावन समेत मोहन देखि आई गाय॰
सेस महिमा कहिन आवे अनेक रसना पाय ॥ ए
क रसना सूर कहा कहे अंग अंग निन भाय ॥ ॥

मे बाल बछ जिवाय ॥ हरे बालक बछन बछन
हेत दोरी माय ॥ छूटि परा जब रहत बनमें डुम
नि फूंकत जाय ॥ लिन्यो हारे नाग कारो देखि
प्रणाम उपाय ॥ निर्ते काली फणनि ऊपर सप्त ता
ल बजाय ॥ थम्यो गिरि वर दोहनी करत बाहे
पिराय ॥ सकट भंजन प्रसन्न ऊव जग कहिन

रा-रा
७६

कौं उठिभ जोरो मानि मेरो निहोर ॥ लेहु ललन
बलाइ तेरी कोरि अंचल ओर ॥ वदन चंद विलो
कि सीतल होत हिरदो मोर ॥ वेगि जननी मोदजै
बगालारो गोविंद थोर ॥ रसिक बालक सहजलीं
ला करत मोहन चोर ॥ रागिनी रामकली ता
ल ३ अष्टपदी । मानहु बात लालन मेरी ॥

76

रागिनी राम कली ताल गीत अष्टपदी ॥ हाहाले
उ एको कोर ॥ इतिअस्थाई । बहुत वेर भई है भू
ले देखि मेरी ओर ॥ इतंतरा ॥ अथ आभोगः ॥
मेलि मिश्री दूध ओसोपी औटैहै जोर ॥ अबही
खेलन देरिहै तेरे ग्वाल भयो अति भोर ॥ जगो पे
छी इम इम निप्रति करन लागो मोर ॥ खेलिवे

रा॰रा॰
७७

मेघान उदयो सूरज कमल विकास ॥ माइके स
नि वचन हेसि उर आइलगो गुपाल ॥ कीयो भोज
न दीयो अति सुख रसिक नैन विसाल ॥ रागि
नी रामकली नाल गीत अष्टपदी । खेलत मद
न सुंदर अंग ॥ इतिअस्थाई । जुवति जन मन
निरखि उपजत विविध भाव अनंग ॥ इत्यंतरा ॥

इति अस्थाई। करो भोजन रोस मूलो हौं ज मैया तेरी
इत्यंतरा। अथ आभोगः। दूध दधि नवनीत घृत
पक पकु सिरावो थार ॥ कहा लोटत धरनि में मेरे
लाल होति अबार ॥ गोद बैठो हौं जि बाजे गाउं तेरे
गीत ॥ खेलिबेकों मोहि बोलत ग्वाल तेरे मीत-
कहौं जाकों ताहि देखौं बैठे तेरे पास ॥ करौं दधि

रा॰रा॰ अलौकिक बाल लीला कौऊ न जानी जाइ ॥ सुख
७८
नासौं महा सुख रसदेन रसिक मिलाइ ॥ रागि
78
नी राम कली ताल चर्चरीताले । ब्रजानंदके
दघोष पति भाग्य भवि जाने ॥ इति अस्थाई । रसि
क वर गोपिका पीनरस मानने तव जय नमम हृ
षि सुजाने ॥ अंतरे । इमेनरा॰ अथ आभोगः । रुचि

अथ आभोगः। पकरि बछरा ऐकपैंचन अपनी दि
स करजोर ॥ कबहूं बछले भजन हरिको जुवति
जनकी ओर ॥ देखि परवस भए प्रीतम भयो मन
आनंद ॥ मैंन आकुल भई आकुल गई लाज अमंद ॥
कोउ देखति गहनिको उहु मन छाडति गेह ॥ कर
ति भाया अपने मनको प्रकट करि निज नेह ॥ अति

रा॰रा॰
७५
29

निहिन निज बाहुरति मन्न राज राज इव रुचिरे ॥ वि
रह विरहानले चारु पुष्कर वलत शीकरे रूप शमय
रुचिरे ॥ अरुण नरला पांग शर निहन कल वधूष्ट
नि नव विलोचन सरोजे ॥ मम वदन सुष मासरसि
विल सन्न मतन मलस गति निर्जित मनोजे ॥ नेद
गे हाल वालो दिनस्वी राग मेक मेहद्द सुर हृत्त ॥

रदन हास गल दमल परि मल लव मधुप कल म
व कमल सदने ॥ अमल चय गर्व निर्वासना धर
सिंधु पायय मनो जाग्रि शमने ॥ स्मित प्रकटित
चारु दंत रुचि वदन विधु कौमदी हत निखिल
तापे ॥ विल सलिलता हय कनक कल सदयो
मारकत मणि रिव उरापे ॥ सुभग सुसखी कंठ

रा॰रा॰
८०

ह जयति हत भाव विजे ॥ जोवसी मंतिनी विश्वड
घहेरा केल निनद गर्जित स्व सिंह सनने ॥ वचन
करुणा कृत दृष्टि दृष्टी रंग नव जलद मपि कुरु स
हसिने ॥ रागिनी राम कली ताल चर्चरी
जयति श्री वल्लभ स्व वन उद्धरण त्रिभवन फेरि नेद
के भवन कीकेलि ठोनी ॥ इति अस्पाई ॥ इष्ट

व्रज वर कुमारिका वाह्र हाट कलना सतत मा श्रयन
कृत लक्ष ॥ व्रज स्नाव गुण रसिकता गुण गोपना
नि शय रुचिरा लाप लीले ॥ नाहगी क्षण जनित
कुसम शर भाव भर प्रवनिष प्रकट नर निरिक्षिले ॥
रुचिर कौमार चापल जय व्रीडया वल्लवी हृदय स्ट
हृगमे ॥ प्रकट यन्त्रिज नावेर शरवयै रसम शर मि

रा॰रा॰
८१
8/

नकसे भक्तकोंस नेदसे याहीतें वसकीयो ब्रह्म रा
सी ॥ मनङ्ग इंद्रवजीति कृष्ण सौंकरी प्रीति निरा
मकी चलिनीति अति विवेकी ॥ रहित अभि मा
नतें वडे सत मोनके शील अरु दोन गोविंद टेकी॰
महा निर्मल बुद्धि अष्ट सिधि नव निधि द्वार सेवत
जहो मुक्ति दासी ॥ राम राइ गिरिधरण जोनि आ

गिरि वर धरण सदा सेवत चरण हार आरो वरण

भरत पोनी ॥ इतेनरा। अथ आभोगः। वेदपथ आ

स सैं इन्द्रमोन दासमे ज्ञानकौ कपिलसे कर्म जोगी॰

साध लक्ष्मन निपुन मद्र ब्रज राज प्रकट सावरसि

मनो इंद्र भोगी ॥ सिंध सम गंभीर मिलन रंग

नीर प्रीतिको जल क्षीर ब्रज उपासी ॥ ध्यानकौ स

रा॰रा॰
८२
82

नउ जनापे ॥ इत्येतरा। अथ प्राभोयः ॥ पथित
माया वाद वर्त्ति वदन धंसि विहित निज दास जन प
द पाते ॥ प्रष्टि पथ कथन रचिता नेकस्य ग्रंथ म
थित भागवत पीयूष सारे ॥ रास प्रवती भावसत
न भाविन हृदय सदय मानस जनि नमो दभारे ॥
निज चरण कमल धरणी परि क्रमण कृति माव

पावित वितत तीर्थ जाले ॥ कृष्ण सेवन विहित श
रण गत शिक्षण कथित संदेह दासे कपाले ॥ निज
वचन पीयूष वर्षयो वित सतत साहित्य पुरुष जन
स्तन्य भक्ते ॥ विविध वाचो भुक्ति निगम वचनो दि
नैरपिव हरित दुष्ट जन दुरक्ते ॥ ईदृशो मति शि
रसि सर्वदा वल्लभे सकल कर्तरि दयालौ ॥ केवल

रा॰रा॰
८३

रि देवना भवनि हरि दासके सकल साधन रहित
जन कृपालो ॥

83

रागिनी रामकली ताल ३ जमुनाके पद ॥ जमु
नसी नाहिकोउ औरदाता ॥ इतिप्रस्थाई ॥ जेइन
की सरण जातेहैं दोरिकें नाहिकोतेहि छिन करि
स नाथा ॥ इतिंतरा । अथआभोगः ॥ पहिउगागो
नरसावो नरसना एक सहस्र रसना कोंन दई विथा
ता ॥ गोविंद वलि तन मन धन वारनें सबनकी जी

रा॰रा॰
८५

बन इनहीके हाथा ॥ रागिनी राम कली ताल
जमनाके पद ॥ श्याम संग श्याम ऐर हीरी जसने
इतिअस्थाई ॥ सुरत श्रम विंडतै सिंध सीवहि चली
मानो आतुर आली रहीन भवने ॥ इंपतरा। अथ
आभोगः ॥ कोटि कामहि वारौं रूपनैननि हारौं
लाल गिरिधरन संग करत रमने ॥ हरषि गोविंद

रागिनी रामकली ताल ३ जसुनाके पद ॥ जसु
नसी नाहिकोउ औरदाता ॥ इतिश्रस्याई ॥ जेइन
की सरण जातहैं दोरिकें नाहिकौतेहि छिन करि
स नाथा ॥ इतिनरा । अथआभोगः ॥ पहि उगासो
नरसावो नरसना एक सहस्र रसना कौन दई विथा
ता ॥ गोविंद वलि तन मन धन वारनें सबनकी जी

रा॰रा॰
८६

86

कहै गोविंद जमुनाकी जापर कृपा सोई वल्लभ कु
ल शरण आयो ॥ रागिनी राम कली ताल ३ ॥
जमुनाके पद ॥ चरण पंकज रेणु जमुना देनी
इति श्रस्थाई ॥ कलि जुग जीव उद्धारन कारण
काटन पाप श्रव धार पेनी ॥ इत्यंतरा । श्रथ श्राभो
गः ॥ श्राण पनि श्राण यह श्राय भक्तन नेह सकल

प्रभु देखि इनकी ओर मानो नव डुल हनी आई गा
वने ॥ रागिनी रामकली ताल ३ जसुताके पद
जसुत जस जगतमै जोई गायो ॥ इति प्रस्थाई ॥
ताकी आसक्त कै रहत है प्राण पति नैनमै बैनमे
रसजो छायो ॥ इत्यंतरा । अथ आभोगः ॥ वेद
पुराण की बात यह प्रगमहे प्रेमको ऊ न पायो०

रा॰रा॰
८७
87

मन मोहन प्रियके संग भक्तन कीकैज भीरे ॥ छो
त स्वामी गिरि धरन श्रीविठल ता विनानै कनहो
धरन धीरे ॥ रागिनी राम कली ताल ५ जम
नाकेपद ॥ जोई सुवे जमना यह नाम आवे ॥ इ
तिश्रस्थाई ॥ ताऊपर कृपा करत श्रीवल्लभ प्रभु
सोई जमना जीकौ भेद पावे ॥ इंयंतरा ॥ अथश्रा

यह सबकी होज सेनी ॥ गोविंद प्रभु बिना रहत न
हि एक छिना प्रतिहि आतुर चेचल जो नेनी ॥ रागि
नी राम कली नाल ॥ जमुनाके पद ॥ आइकें जा
इजे जमुना तीरे ॥ इतिअस्थाई ॥ तिनहीकी महि
मा कहांलौं वर नीये जाई परम प्रेम श्रेम तीरे ॥
इतेनरा । अथआभोगः ॥ निस दिना केलि करत